दिगम्बर जैन मन्दिर जयपुर

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ, जयपुर

स्मारिका
जयपुर दिगम्बर जैन मन्दिर परिचय

प्रधान सम्पादक

अनूपचन्द न्यायतीर्थ

सम्पादक मण्डल :
पं० भँवरलाल न्यायतीर्थ
डॉ० कस्तूरचन्द कासलीवाल
डॉ० कमलचन्द सौगाणी
श्री ज्ञानचन्द्र खिन्दूका

परामर्श मण्डल :
श्री ज्ञानचन्द बिल्टीवाला
श्री कुबेरचन्द काला
डॉ० शीतलचन्द जैन
श्री अनूपचन्द ठोलिया

प्रबन्ध मण्डल :
श्री रामचन्द्र कासलीवाल
श्री कपूरचन्द पाटनी
श्री बलभद्रकुमार जैन
श्री महेन्द्रकुमार पाटनी

प्रकाशक :
बाबूलाल सेठी
मानद मंत्री

श्री दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ, जयपुर

प्राप्ति स्थान :—

कार्यालय :

श्री दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ, जयपुर

महावीर भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003

□

दिगम्बर जैन मंदिर कालाडेरा (महावीर स्वामी)

गोपालजी का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302003

□

दिगम्बर जैन मंदिर सोनियान (पार्श्वनाथजी)

खवासजी का रास्ता, सिरहड्योढ़ी बाजार, जयपुर

1990

□

मूल्य : 20 रुपये

□

मुद्रक :

जयपुर प्रिन्टर्स

एम० आई० रोड, जयपुर

एवम्

कुशल प्रिन्टर्स

गोधों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर

शुभाशीर्वाद

एवं

शुभकामनाएँ
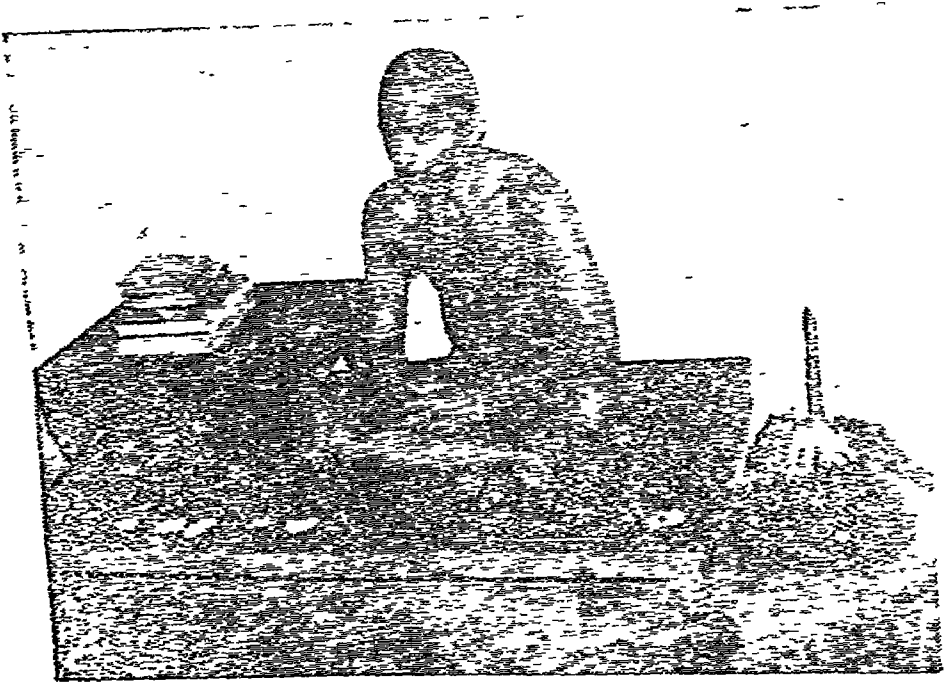
आचार्य विद्यासागरजी

धराधाम की धवल धरोहर,

सकल संस्कृति का संजीवन।

प्राणों का पराग त्याग वैभव का,

शाश्वत श्वासों का स्पन्दन।

आज स्वतः ही विद्या धारा,

बन गई आशीर्वाद हमारा
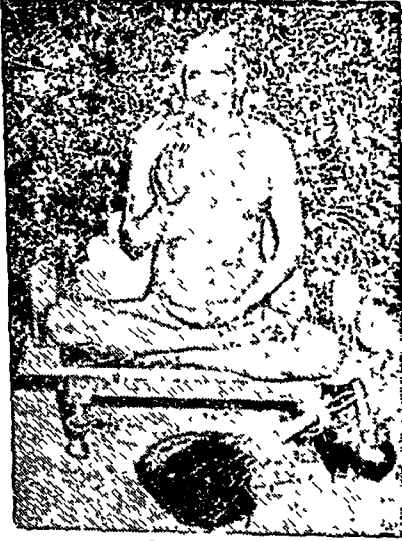
सोनागिर
12–4–90

आचार्य विमलसागरजी,

जयपुर समस्त भारत वर्ष मे जैन सस्कृति का प्रधान केन्द्र रहा है। आध्यात्मिक क्षेत्र मे जहा प० टोडरमलजी, जयचन्दजी, सदासुखजी ने अपनी लेखनी द्वारा जन साधारण को सरल भाषा मे आध्यात्मिकता का रसपान कराया है वहाँ कला के क्षेत्र मे अनुभवी शिल्पकारो द्वारा विशाल मन्दिरो का निर्माण हुआ है जो देश एवं समाज की अमूल्य धरोहर है।

महासघ द्वारा इस अमूल्य विरासत की सामग्री का समुच्चय सकलन कर, उसे लिपिबद्ध कर जन साधारण की जानकारी हेतु प्रकाशन कराने का कार्य सास्कृतिक जागरण की एक कडी के रूप मे सिद्ध होगा।

इस मगल कार्य के लिये हमारा शुभाशींवाद है।

—आचार्य विमलसागरजी
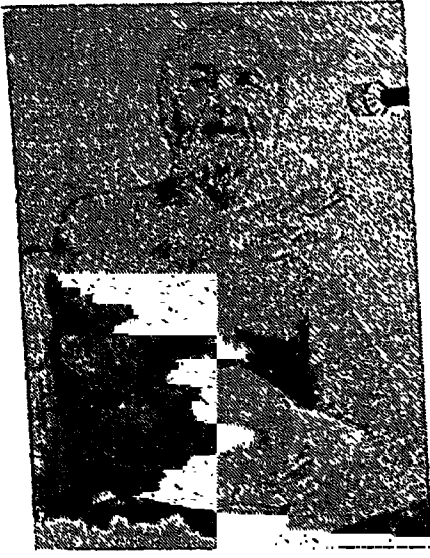
शान्ति गिरि क्षेत्र
कोथली कुप्पनवाड़ी
1.8.1989

आचार्य विद्यानन्द जी

जयपुर जैनो के एक केन्द्र के रूप में प्रख्यात रहा है। यहाँ प्रशासनिक क्षेत्र में अनेक जैन दीवान हुए, साहित्यिक क्षेत्र मे पडित टोडरमल जैसे प्रौढ़ सारस्वत पुत्र हुए, कला के क्षेत्र मे यहाँ और इस नगर के चारों ओर अनुपम शिल्प वैभव सुरक्षित है। यहाँ लगभग दो सौ जिनालय और उनमे हजारों हस्तलिखित और ताडपत्रीय कलापूर्ण ग्रन्थ विराजमान है। अनेक जिनालयों में दर्शनीय भित्तिचित्र हैं। कई मंदिरों में बहु संख्या ताम्र-यन्त्र सुरक्षित हैं। यहाँ कागजों पर प्रस्तारों और नक्शों की संख्या भी विपुल है। यह सब हमारी सांस्कृतिक सम्पदा है, जिसके कारण जैन. समाज विश्व समाज के समक्ष एक जागृत समाज होने का गौरव अनुभव कर सकती है। ऐसी सम्पदा के कारण ही विश्व में जैन समाज सम्पन्न समाज कही जाती है।

यह जानकार हमे धार्मिक प्रमोद हुआ कि जयपुर का श्री दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ इस सांस्कृतिक विरासत का समुच्चय संकलन, उसका प्रामाणिक इतिहास और कलात्मक निदर्शनो के चित्र सहित एक स्मारिका प्रकाशित कर रहा है। ऐसे धार्मिक और सांस्कृतिक जागरण के शुभ कार्य में हमारा सदा ही शुभाशीर्वाद है। इस स्मारिका के प्रकाशन के अनन्तर महासघ को कुछ ऐसे भी रचनात्मक उपाय करने चाहिये, जिनके द्वारा इस अमूल्य सास्कृतिक सम्पदा का उपयोग देश और विदेश के विद्वान् एवं सर्व साधारण कर सके।

शुभाशीर्वाद।

आचार्य विद्यानन्द मुनि
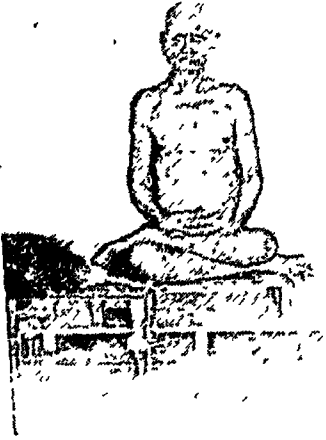
आचार्य अजित सागर जी

लोहारिया,
जिला बांसवाड़ा
19.8.89

दि० जैन समाज के बुद्धिजीवी वर्ग ने जैन धर्म, जैन साहित्य, ऋषि प्रणीत ग्रन्थ, पुरातनकला युक्त जिनधर्मायतन, जिन मन्दिरो मे स्थित मत्र समन्वित यन्त्र आदि जिनधर्म की महत्वपूर्ण सामग्री तथा जिनायतनो के सरक्षणार्थ "श्री दि० जैन मदिर महासघ जयपुर" नामक एक सस्था की स्थापना की है सो अत्युत्तम एव महत्वपूर्ण है। इस महासघ के सदस्यगण पुरातन आर्ष परम्परा के सरक्षण एव सवर्धन मे अपने मनोविचारो को रखते हुए सातिशय पुण्य के पात्र बनकर अपनी विद्वत्ता एव उतम वश का परिचय देकर अपने लक्ष्य की पूर्ति करते रहे, ऐसा मेरा आप सभी के लिए शुभाशीर्वाद है।

आचार्य अजित सागर

"निर्मल" तृतीय मंजिल
नरीमन पाइन्ट
बम्बई-400021
दिनाक 2 मई, 1989

श्रेयांस प्रसाद जैन

यह हर्ष का विषय है कि महासघ मदिर सर्वेक्षण योजना के अन्तर्गत एक संदर्भ ग्रन्थ का प्रकाशन कर रहा है। आपकी योजना प्रशसनीय है।

हमारी कला व सस्कृति को सुरक्षित रखने की नितान्त आवश्यकता है। जन साधारण को इसकी पूरी जानकारी उपलब्ध हो सके इस ओर आपके द्वारा किया गया कार्य सदैव इतिहास के पृष्ठो मे अकित रहेगा। ये पावन प्राचीन मदिर जैन धर्म की सस्कृति के प्रतीक एव आत्मोन्नति के केन्द्र है।

इस अवसर पर आप एक स्मारिका का भी प्रकाशन कर रहे है, उसके सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएँ भेजता हूँ।

श्रेयांस प्रसाद जैन

साहू जैन, 7 बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-110002
दिनांक 29.5.1989

अशोक कुमार जैन
अध्यक्ष
भारत-वर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, बम्बई

यह जानकर बहुत ही प्रसन्नता हुई कि श्री दिगम्बर जैन मंदिर महासघ, जयपुर द्वारा एक ऐसा सन्दर्भ ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है जिसमे जयपुर, आमेर एव सांगानेर के दिगम्बर जैन मदिरो के इतिहास के साथ साथ वहां उपलब्ध कलाकृतियो, ग्रन्थो, यन्त्रो भित्तिचित्रो एव पाषाण पर उकेरे भाव चित्रो के बारे में पूरी जानकारी होगी। निश्चय ही महासघ का यह प्रयास स्तुत्य है।

वास्तव मे जैन सस्कृति की परम्परा शिल्प और वाङ्मय इतना समृद्ध है कि भारतीय सस्कृति के समूचे इतिहास पर उसकी छाप है। हमे अपनी इस संस्कृति को सुरक्षित रखना ही है। आपका यह प्रयास अत्यन्त उपयोगी व सराहनीय है। मैं इसकी सफलता की कामना करता हूं और विश्वास करता हूं कि इसके महत्त्व को देखते हुए अन्य प्रान्तों में भी ऐसे प्रयत्न होगे।

शुभ कामनाओ सहित,

दरबारीलाल कोठिया
न्यायाचार्य
भू पू रीडर, शैन-बौद्ध दर्शन विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

वीना (सागर)
म० प्र०
दिनाक 3.9 1989

दिगम्बर जैन मदिर महासध जयपुर मदिर सर्वेक्षण योजना के अन्तर्गत सग्रीहत सामग्री को एक संदर्भ ग्रन्थ के रूप मे लिपिबद्ध कर उसकी जानकारी जन साधारण को सुलभ कराने के हेतु एक स्मारिका प्रकाशित करने का जो निर्णय लिया है स्तुत्य है। उसमे प्रत्राकित सामग्री का परिचय दिया जावेगा, यह बहुत उचित और सुन्दर कार्य होगा। हम आपके ऐसे बहुमूल्य प्रयास और उसकी सूझबूझ के लिये हार्दिक वधाई देते हुए उसका स्वागत करते है।

दरबारीलाल कोठिया

फूलचन्द सिद्धान्त शास्त्री

दिगम्बर जैन बडा मदिर
हस्तिनापुर
दिनाक 24 6 89

श्री दिगम्बर जैन मदिर महासघ जयपुर ने जो काम हृदय से लिया है उसकी सफलता की मैं कामना करता हूँ। इतिहास और विवरण सबधी काम की ओर दिगम्बर जैन समाज का ध्यान कम गया है। यह काम दिशा निर्देश करने वाला है। इससे सभव है कि अन्य भाइयो को भी प्रोत्साहन मिले इससे जगह जगह की दुर्लभ सामग्री प्रकाशन मे आवे। मैं इस काम के लिये आपका अभिनन्दन करता हूँ। इसमे जयपुर के अन्य जैन विद्वानो का तो सहयोग होगा ही।

शेष शुभम्।

फूलचन्द शास्त्री

हीरालाल जैन कौशल
मत्री, भा दि. जैन विद्वत् परिषद्

3749, गली जमादारान
पहाडी धीरज, दिल्ली
दि० 20.5 89

मदिर सर्वेक्षण योजना के अन्तर्गत आपके यहाँ से जो स्मारिका निकाली जा रही है वह कई दृष्टियो से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होगी। जयपुर जैन साहित्य, कला तथा सस्कृति की सुरक्षा में अग्रणी स्थान रखता है। वहाँ की सामग्री प्रकाशित होने पर अनेक नई बाते सामने आवेगी।

मैं विद्वत् परिषद् की ओर से इस कार्य के लिये हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इस योजना की सफलता की कामना करता हूँ।

हीरालाल जैन कौशल

बाबूलाल पाटोदी
महामंत्री, दिगम्बर जैन महा समिति

64/3, मल्हार गज,
इन्दौर
दिनाक 3.5.89

जयपुर तो जैन सस्कृति का खजाना है। वहाँ पर अद्‌भुत दिगम्बर मदिर हैं जिसमें भी आमेर, सांगानेर, खानियाँ आदि स्थानो के मदिर तो ऐतिहासिक हैं।

इन मदिरो का इतिहास, उनमे उपलब्ध कलाकृतियाँ एव भित्तिचित्रो को देखकर हृदय उल्लासित हो जाता है। आप इस महान सस्कृति की धरोहर की महत्ता के सबध मे स्मारिका के प्रकाशन का सोच रहे हैं यह हमारे लिये एक महान उपलब्धि होगी।

इससे विश्व को सस्कृति की प्राचीनता एव उसकी गौरवगाथा का आभास प्राप्त होगा।

आपका यह मगलमय कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न हो यही भावना है।

बाबूलाल पाटोदी

नई दिल्ली

श्री रतनलालजी गंगवाल
अध्यक्ष, दिगम्बर जैन महासमिति

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासघ, जयपुर अपनी मदिर सर्वेक्षण योजना के अन्तर्गत एक ऐसा सदर्भ ग्रथ प्रकाशित कर रहा है जिसमे जयपुर, आमेर तथा सांगानेर के दिगम्बर जैन मदिरो के संबंध में पूर्ण जानकारी यथा निर्माणकर्ता, निर्माणकाल, प्रतिमां, यन्त्र-सख्या, ग्रथ भंडार, भित्तिचित्र एव अन्य कलाकृतियो का सचित्र विवरण रहेगा।

इसके अतिरिक्त मदिरो के सबध में मूर्धन्य विद्वानो के लेख, राजस्थान के दिगम्बर जैन तीर्थो का परिचय तथा जयपुर की दिगम्बर जैन संस्थाएं, विशिष्ट व्यक्तियो का परिचय प्रथम वार जन साधारण को उपलब्ध कराया जावेगा।

महासघ का यह प्रयास सराहनीय एव अनुकरणीय है।

मैं इसकी सफलता की कामना करता हूं।

—रतनलाल गंगवाल

आचार्य कुन्दकुन्द विरचित-'तिरुक्कुरल' से

१—वही सबसे योग्य राजदूत है जिसको समुचित क्षेत्र और समुचित समय की परख है, जो अपने कर्त्तव्य को जानता है तथा जो बोलने से पहले अपने शब्दो को जाच लेता है।

२—मृत्यु का सामना होने पर भी सच्चा राजदूत अपने कर्त्तव्य से विचलित नही होता बल्कि अपने स्वामी के कार्य की सिद्धि के लिये पूरा यत्न करता है।

३—जो व्यक्ति राजाओ के साथ रहना चाहता है, उसको चाहिए कि वह उस आदमी के समान व्यवहार करे, जो आग के सामने बैठकर तापता है, उसको न तो अति समीप जाना चाहिए न अति दूर।

४—हार्दिक भाव को विश्वस्त रूप से जान लेने वाले मनुष्य को देवता समझो।

५—जो आखे एक ही दृष्टि मे दूसरे के मनोगत् भावो को नही भाप सकती उनकी इन्द्रियो मे विशेषता ही क्या ?

६—बुद्धिमान लोगो के सामने असमर्थ और असफल सिद्ध होना धर्म मार्ग से पतित हो जाने के समान है।

७—अपने मतभेद रखने वाले व्यक्तियो के समक्ष भाषण करना ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार अमृत को मलिन स्थान पर डाल देना।

८—जो व्यक्ति ज्ञानी मनुष्यो के समुदाय मे अपने सिद्धान्तो पर दृढ रह सकता है वही विद्वानो मे विद्वान माना जाता है।

९—जो मनुष्य ज्ञानी है लेकिन विज्ञजनो के सामने आने मे डरते हैं वे अज्ञानियों से भी गये बीते है।

१०—वही श्रेष्ठ देश है जो धन की विपुलता से जनता का प्रीतिभाजन हो और घृणित रोगो से मुक्त होकर समृद्धिशाली हो।

★ प्रकाशकीय

★ अध्यक्ष की कलम से

★ सम्पादकीय

★ आभार

★ संस्था परिचय

प्रकाशकीय

जयपुर नगर व इसके उपनगरों में 200 से अधिक दिगम्बर जैन मंदिर, चैत्यालय एवं नशियां आदि है। यहाँ के जैन मन्दिर समस्त भारतवर्ष में धार्मिक प्रेरणा के केन्द्र बिन्दु रहे हैं, जिनमे बैठकर आध्यात्मिक प्रवक्ता पडित टोडरमलजी, जयचदजी, सदासुखजी आदि विद्वानों ने अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की रचना एव टीकाएँ कर जैन धर्म के मार्मिक सिद्धान्तो को जनसाधारण तक पहुचाया है।

इस धरोहर की सुरक्षा हेतु महासंघ ने अपने कार्य के प्रथम चरण के रूप मे जयपुर के इन मन्दिरो का सर्वेक्षण कार्य अपने हाथ में लिया। सर्वेक्षण मे सकलित सामग्री बहुत ही महत्त्वपूर्ण एव अप्रकाशित होने के कारण जानकारी मे नही होने से इस सामग्री को लिपिबद्ध करने एव उसके मुख्य तथ्यों की जानकारी जनसाधारण को सुलभ कराने की दृष्टि से महासघ ने प्रथम पुष्प के रूप मे जयपुर दिगम्बर जैन मंदिर परिचय के प्रकाशन करने का निर्णय लिया। यहा के मदिर विशाल एवं कलापूर्ण है। पत्थर मे पच्चीकारी, तीर्थों के उकेरे गये भाव, धार्मिक भावना जागृत करने वाले भित्तिचित्र, सचित्र ग्रंथ, पांडुलिपियों एवं अन्य कलाकृतियों के चित्र देकर भी इस प्रकाशन की उपयोगिता एवं महत्त्व को बढाने का यथासभव प्रयास किया है।

यहाँ भाद्रपद मास के पश्चात् सवाई जयपुर के समस्त मंदिरों एवं चैत्यालयो के दर्शनों की परम्परा रही है। ऐसे दर्शनार्थियो एवं अन्य बाहर से आने वाले पर्यटकों की सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए मंदिरों चैत्यालयों की सूची के अतिरिक्त उनके मार्ग-दर्शक नक्शे, चौकड़ी वार देकर उपयोगी बनाने का प्रयास किया है।

इस सांस्कृतिक निधि की महत्ता एवं इससे सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं पर विचार-मंथन करना आवश्यक समझा गया है। अतः समाज के मूर्धन्य विद्वानों के विचारों को भी स्मारिका में समुचित स्थान दिया गया है।

तीर्थक्षेत्रों की अपनी एक विशेषता है जहाँ मानव स्वयमेव आत्म-कल्याण के बारे में सोचने लगता है। यद्यपि राजस्थान में सिद्धक्षेत्र नही है परन्तु यहाँ के कतिपय क्षेत्र, अतिशयपूर्ण एव दर्शनीय हैं जो भारत में अपना एक विशिष्ट स्थान रखते हैं अतएव राजस्थान के प्रमुख तीर्थो का संक्षिप्त परिचय भी सबकी जानकारी हेतु प्रकाशित किया गया है।

विभिन्न धार्मिक, शैक्षणिक सास्कृतिक एवं सामाजिक सस्थाओ का इन मंदिरों के साथ सदैव से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है, अतएव मुख्य दिगम्बर जैन सस्थाओ के परिचय को सकलित कर स्मारिका मे प्रकाशित करने का प्रयत्न किया गया है।

सभी सामाजिक निधियों के पीछे विद्वज्जन एव सेवाभावी विभूतियों का हाथ रहा है जिनके कठिन परिश्रम और त्याग के कारण ही हमारे सामने ये निधियाँ उपलब्ध हैं। उन व्यक्तियो के बारे मे परिचय न देना अपने आप में एक कमी होगी। अतएव प्रमुख व्यक्तियो का परिचय देकर इस कमी को भी दूर करने का प्रयास किया है।

मैं उन सभी महानुभावों के प्रति आभार प्रकट करना भी अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता हूँ, जिनके अपूर्व में सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हो सका है।

सर्वप्रथम उन आचार्यों के प्रति जिन्होने लिखित अथवा मौखिक शुभाशीर्वाद प्रदान किया जिसके फलस्वरूप यह मगलमय प्रकाशन आपके सम्मुख आ सका। मैं उनके प्रति श्रद्धावनत हूँ।

मदिरो के समस्त प्रबन्धकों के प्रति जिन्होने अपने-अपने मदिरो के सम्बन्ध में परिचय सामग्री उपलब्ध करायी है एव प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान किया है तथा मार्गदर्शन किया उन सबका महासघ की ओर से आभार प्रकट करता हूँ।

किसी भी वस्तु की पूर्ण रूप से जानकारी लेख द्वारा चाहे वह कितनी ही विद्वत्ता-पूर्ण हो सम्भव नही हो पाती है, जबकि चित्र द्वारा उसकी सम्पूर्ण जानकारी सहज रूप से साक्षर, निरक्षर, बाल, युवा, वृद्ध को हो जाती है। चित्र खण्ड के प्रकाशन मे सर्वश्री ज्ञानचन्दजी खिन्दूका, श्री कुबेरचन्दजी काला, हरकचन्दजी सौगानी, सतीशजी पाटनी, एव श्री अशोकजी काला ने अथक परिश्रम किया है। मैं उनका भी हृदय से आभारी हूँ।

मूर्धन्य विद्वानो एवं लेखको का जिन्होने अमूल्य समय निकाल कर इस सास्कृतिक धरोहर के विषय मे अपनी मौलिक रचनाओ को प्रेषित कर इस प्रकाशन के महत्त्वपूर्ण कलेवर को निर्मित किया है वे भी साधुवाद के पात्र हैं। सभी सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक संस्थाओ के पदाधिकारियो का भी आभारी हूँ जिन्होने हमारे निवेदन पर अपनी-अपनी सस्थाओं का परिचय उपलब्ध कराया।

बिना आर्थिक सहयोग के किसी भी प्रकार का प्रकाशन कार्य सम्भव नही है, इस कार्य में श्री कपूरचन्दजी पाटनी एव उनके सहयोगी श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी, व अर्थ समिति के अन्य सहयोगियो ने अथक प्रयास किया है उनका मैं अत्यन्त आभारी हूँ।

इस प्रकाशन की समस्त प्रक्रिया मे महासंघ के अध्यक्ष श्री रामचन्द्रजी कासलीवाल एव श्री कपूरचन्दजी पाटनी से मार्गदर्शन मिला है जिससे यह आकर्षक व उपयोगी बन सकी है उनके प्रति भी मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

श्री अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ, प्रधान सम्पादक ने निरन्तर मदिरो के प्रबन्धकों से व्यक्तिगत सम्पर्क कर सामग्री का संकलन कर लिपिबद्ध किया है। यह एक लम्बा एव श्रम साध्य कार्य है। उनके निरन्तर प्रयास का ही यह सारा फल है। मैं उनका तथा सम्पादक मडल के अन्य सहयोगियो का भी हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

महासघ की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों एव अन्य महानुभावो का जिनने प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग दिया है उनका भी आभार प्रकट किये बिना नही रह सकता। स्मारिका के मुद्रण कार्य को श्री सोहनलालजी, जयपुर प्रिण्टर्स एव श्री कुशलजी काला, कुशल प्रिण्टर्स एव सहयोगियो ने लगन के साथ कार्य कर स्मारिका को सुन्दर बनाया है अत: साधुवाद के पात्र हैं।

उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर परिचय प्रकाशन में पूर्ण सावधानी रखी गई है फिर भी त्रुटियां रहना सभव हैं। यदि किन्ही के पास अतिरिक्त सामग्री उपलब्ध हो या इसे श्रेष्ठ बनाने को कोई सुझाव हो तो पाठक हमे भिजवायें ताकि आगे के प्रकाशनो मे सुधार किया जा सके। इस सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा एव उन्नति मे सभी की रुचि हो, इस मगल भावना के साथ।

बाबूलाल सेठी

मानद् मत्री

अध्यक्ष की कलम से

जयपुर के दिगम्बर जैन मंदिरो का परिचय प्रकाशन पाठको के हाथो मे देते हुए अपार हर्ष हो रहा है। दिगम्बर जैन मंदिर महासघ, जयपुर ने एक मदिर सर्वेक्षण योजना तैयार की और मदिरों के प्रबंधकों को भेजी। राजकीय नियमों की अनुपालना में आवश्यक जानकारी के अतिरिक्त मदिरो के निर्माण की तिथि निर्माणकर्त्ता का पूरा परिचय तथा महत्वपूर्ण कलाकृतियों का विवरण भी प्रबंधकों के सहयोग से हमें प्राप्त हुआ। उपलब्ध सामग्री का विस्तार से विश्लेषण किया गया, जिसका निचोड स्मारिका के रूप मे पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

हमने सर्वप्रथम जयपुर, सांगानेर, आमेर एवं जयपुर के आस-पास के उपनगरो मे स्थित 116 जैन मंदिरों के परिचय निकालने का सकल्प लिया। हमारा यह पहला प्रयास है। यदि पाठकों ने इसे सराहा तो जयपुर के आस-पास के दिगम्बर जैन मंदिरो का सर्वेक्षण कार्य भी शीघ्र हाथ में लिया जावेगा।

प्रकाशन में मंदिरों से सबंधित जिस महत्वपूर्ण सामग्री का संकलन किया गया है उसका सम्पूर्ण श्रेय पं. अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ को है जिन्होने अपने अथक परिश्रम एवं लगन के साथ मदिरों के प्रबंधको से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित कर आवश्यक सूचनाएँ एकत्रित की। यह कार्य अत्यधिक श्रम साध्य था। उपलब्ध सामग्री की जानकारी किस प्रकार जन-साधारण को दी जा सके – इस पर काफी समय से विचार किया जा रहा था। श्री अनूपचन्दजी ठोलिया के मन्त्रित्व-काल में सर्वेक्षण योजना प्रारम्भ की गई और श्री कुबेरचन्दजी काला के मन्त्रित्वकाल में अथक परिश्रम कर इसे संजोया गया। श्री कुबेरचन्दजी काला का जयपुर से बाहर स्थानान्तरण हो जाने के कारण उनका सहयोग मिलने में कठिनाई हुई और गत वर्ष कार्यकारिणी समिति के नये चुनावों से हमें श्री बाबूलालजी सेठी की सेवाएँ मंत्री के रूप मे प्राप्त हुई। श्री बाबूलालजी सेठी एक उत्साही एव युवक कार्यकर्त्ता है। नव-निर्वाचित कार्यकारिणी की प्रथम बैठक में ही श्री कपूरचन्दजी पाटनी ने महासंघ के कार्य में तेजी लाने तथा संकलित सामग्री को प्रकाश मे लाने का सुझाव रखा तथा निम्न चार व्यक्तियों की एक उपसमिति गठन कर शीघ्र ही योजना का प्रारूप बना कर प्रस्तुत करने को कहा गया। श्री बाबूलालजी सेठी, श्री कपूरचन्दजी पाटनी, श्री अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ तथा मैंने बैठकर एक मदिर परिचय स्मारिका निकालने की योजना प्रस्तुत की, जिसमे विज्ञापनो के माध्यम से तथा मदिरों से सहायता स्वरूप राशि लेकर आर्थिक साधन जुटाना प्रमुख कार्य रहा। कार्यकारिणी समिति ने योजना की स्वीकृति दी। तदनुसार श्रुतपंचमी को स्मारिका प्रकाशित करने

का निश्चय कर कार्य प्रारम्भ किया गया; किन्तु समय पर आवश्यक सूचनाएँ तथा लेख आदि नही आने एव प्रेस की विवशता के कारण निश्चित समय पर स्मारिका प्रकाशित नहीं हो सकी। विलम्ब के लिये मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

मैं सम्पादक मडल के सभी सदस्यो, मुख्यरूप से प्रबन्ध सम्पादक श्री अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ, प्रकाशक मन्त्री श्री बाबूलालजी सेठी, विज्ञापन समिति के प्रमुख श्री कपूरचदजी पाटनी एव महेन्द्रकुमारजी पाटनी, विज्ञापनदाताओ एव मदिरो के प्रबन्धको का, जिन्होने अपना बहुमूल्य सहयोग तथा आर्थिक सहायता दी है, सभी का आभारी हूँ।

मैं उन विद्वान लेखको का भी हृदय से आभार मानता हूँ जिन्होने अपने महत्वपूर्ण लेख प्रकाशनार्थ भेजे हैं। मैं उन सभी सामाजिक सस्थाओ के पदाधिकारियों को भी धन्यवाद दिये बिना नही रह सकता जिन्होने हमारी प्रार्थना पर अपनी संस्थाओं के परिचय भेजे है।

मैं मदिर महासंघ की कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्यों एव पदाधिकारियो का भी आभारी हूँ जिनके सहयोग एवं मार्गदर्शन से यह कार्य सानन्द सम्पन्न हुआ है।

मैं विशेषरूप से श्री ज्ञानचन्दजी खिन्दूका, डॉ. कमलचन्दजी सोगानी, डॉ. कस्तूरचन्दजी कासलीवाल, प० भंवरलालजी न्यायतीर्थ का आभार मानता हूँ जिनके सहयोग से कार्य सम्पन्न हो सका है। मैं स्मारिका के सुन्दर मुद्रण के लिये श्री सोहनलालजी, जयपुर प्रिन्टर्स एव श्री कुशलजी काला, कुशल प्रिन्टर्स को भी धन्यवाद दिये बिना नही रह सकता।

अन्त मे, उन सभी का आभार प्रदर्शित करता हूँ जिनका हमे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप मे सहयोग प्राप्त हुआ है।

पाठकों से विनम्र निवेदन है कि वे हमे अपने अमूल्य सुझाव भेजकर अनुगृहीत करें ताकि अगले प्रकाशन मे उनका उपयोग किया जा सके।

आशा है हमारा यह प्रयास पाठकों को रुचिकर लगेगा।

धन्यवाद !

रामचन्द्र कासलीवाल

सम्पादकीय

जैन मन्दिरों की विशालता एवं संख्या की दृष्टि से जयपुर का नाम देश मे सर्वोपरि गिना जाता है। विगत 263 वर्षों में एक ही नगर मे 200 से अधिक मन्दिरो, गृह चैत्यालयों एवं नशियाँ का निर्माण जैन समाज के इतिहास मे अपूर्व घटना है। जैन कवि श्री स्वरूपचन्द बिलाला ने जब सवत् 1892 मे जयपुर नगर के मन्दिरों के दर्शन किये तो उन्होने 81 मन्दिरों के नाम गिनाये थे। इन मन्दिरो में आमेर एव सागानेर के मन्दिर भी सम्मिलित है। लेकिन इन्हीं बिलालाजी ने सम्वत् 1910 अर्थात् 18 वर्ष पश्चात् जब यहाँ के मन्दिरों के पुनः दर्शन किये तो उनमें मन्दिरों की वृद्धि हुई और उनकी संख्या 84 हो गयी। सन् 1947 के पश्चात् जब उपनगर बसाये जाने लगे तो इन 42 वर्षों मे इन उपनगरों में नये-नये मन्दिर बनने लगे, तो मन्दिरों की संख्या 84 से बढ़कर 116 हो गयी।

ये मन्दिर संख्या की दृष्टि के साथ-साथ विशालता, कला एव साहित्य संग्रह की दृष्टि से भी अभूतपूर्व हैं। जो भी एक बार इन मन्दिरों के दर्शन कर लेता है वही आनन्द-विभोर होकर निर्माणकर्त्ताओं के चरण स्पर्श करने को आतुर हो उठता है, क्योंकि इन मन्दिरों से ही हमारी संस्कृति, साहित्य एवं सामाजिकता सुरक्षित रह सकी है और हमारे सांस्कृतिक गौरव मे अभिवृद्धि हुई है। इन मन्दिरों का विस्तृत परिचय जानने के लिए स्थानीय एवं बाहर से आने वाले दर्शनार्थी अपनी उत्सुकता दिखाते रहते हैं लेकिन मदिरों के सम्बन्ध में कोई उपयुक्त पुस्तक उपलब्ध नही होने से वह अभाव सभी को खटकता रहता है हालांकि तीन-चार सूचियाँ सभी मन्दिरों की प्रकाशित हो चुकी है।

दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ की स्थापना के पश्चात् यहाँ के जयपुर शहर, आमेर एवं सांगानेर के 116 मन्दिरों में उपलब्ध सामग्री की जानकारी प्राप्त की गयी। हमें यह लिखते हुए बड़ी प्रसन्नता है कि मन्दिरों की सर्वेक्षण योजना से इन मन्दिरों की विभिन्न दृष्टियो से इतिहास, कला, शास्त्र भण्डार, मूर्तियों की प्राचीनता एवं उनकी संख्या की जानकारी एकत्रित की गयी जिसके फलस्वरूप ही प्रस्तुत प्रकाशन समाज के सामने प्रस्तुत करते हुए जैन मन्दिर महासंघ, जयपुर के सभी सदस्यों को गौरव अनुभव हो रहा है।

प्रस्तुत प्रकाशन में यहाँ के मन्दिरों के परिचय में मन्दिर का निर्माणकार्य, निर्माणकर्त्ता का नाम, मूलनायक प्रतिमा, यत्र, मन्दिरो की आम्नाय, शास्त्र भण्डार में पाण्डुलिपियों की संख्या, कलापूर्ण एवं सचित्र पाण्डुलिपियां, मूर्त्तियां, परिचय, भित्तिचित्र, कला एवं व्यवस्था सम्बन्धी जानकारी दी गयी है जिससे यह प्रकाशन भविष्य में इन मन्दिरों की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने में एक दस्तावेज का कार्य करेगा।

का निश्चय कर कार्य प्रारम्भ किया गया; किन्तु समय पर आवश्यक सूचनाएँ तथा लेख आदि नहीं आने एव प्रेस की विवशता के कारण निश्चित समय पर स्मारिका प्रकाशित नही हो सकी। विलम्ब के लिये मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

मैं सम्पादक मंडल के सभी सदस्यो, मुख्यरूप से प्रबन्ध सम्पादक श्री अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ, प्रकाशक मत्री श्री बाबूलालजी सेठी, विज्ञापन समिति के प्रमुख श्री कपूरचदजी पाटनी एव महेन्द्रकुमारजी पाटनी, विज्ञापनदाताओ एव मदिरो के प्रबन्धको का, जिन्होने अपना बहुमूल्य सहयोग तथा आर्थिक सहायता दी है, सभी का आभारी हूँ।

मैं उन विद्वान लेखको का भी हृदय से आभार मानता हूँ जिन्होने अपने महत्वपूर्ण लेख प्रकाशनार्थ भेजे है। मै उन सभी सामाजिक सस्थाओ के पदाधिकारियों को भी धन्यवाद दिये बिना नही रह सकता जिन्होंने हमारी प्रार्थना पर अपनी सस्थाओं के परिचय भेजे है।

मैं मदिर महासंघ की कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्यों एव पदाधिकारियों का भी आभारी हूँ जिनके सहयोग एवं मार्गदर्शन से यह कार्य सानन्द सम्पन्न हुआ है।

मैं विशेषरूप से श्री ज्ञानचन्दजी खिन्दूका, डॉ. कमलचन्दजी सोगानी, डॉ. कस्तूरचन्दजी कासलीवाल, प० भवरलालजी न्यायतीर्थ का आभार मानता हूँ जिनके सहयोग से कार्य सम्पन्न हो सका है। मैं स्मारिका के सुन्दर मुद्रण के लिये श्री सोहनलालजी, जयपुर प्रिन्टर्स एवं श्री कुशलजी काला, कुशल प्रिन्टर्स को भी धन्यवाद दिये बिना नही रह सकता।

अन्त में, उन सभी का आभार प्रदर्शित करता हूँ जिनका हमें प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में सहयोग प्राप्त हुआ है।

पाठकों से विनम्र निवेदन है कि वे हमें अपने अमूल्य सुझाव भेजकर अनुगृहीत करें ताकि अगले प्रकाशन मे उनका उपयोग किया जा सके।

आशा है हमारा यह प्रयास पाठकों को रुचिकर लगेगा।

धन्यवाद!

रामचन्द्र कासलीवाल

प्रकाशन सामग्री

जयपुर के इन मंदिरो की विशेषताओ को जन-साधारण तक पहुँचाने की दृष्टि से प्रस्तुत पुस्तक में विद्वानो के कुछ उपयोगी लेख भी दिये है जो इन मदिरो मे विराजमान यत्रो के महत्व पर शास्त्र भण्डारो पर भित्ति चित्र एव मूर्तिकला तथा व्यवस्था सबधी एव राजकीय नियमो पर विशेष प्रकाश डालते है।

पुस्तक को दर्शनार्थियो के लिए विशेष उपयोगी बनाने हेतु चार्टों के अनुसार मदिरों के मानचित्र एवं उनमें पहुँचने के मार्ग को अकित किया गया है, साथ ही मे जयपुर एव उपनगरों, सांगानेर एव आमेर के मदिरो का पूरा परिचय दिया गया है जिससे भविष्य के लिये इन मदिरो का इतिहास सुरक्षित रह सके।

चित्रखंड, तीर्थ क्षेत्र, संस्थायें

यहाँ के मदिर विशाल एव कलापूर्ण है। चित्रो के माध्यम से कलाकृतियो की जानकारी देने हेतु चित्रखण्ड मे चित्रो की जानकारी दी गई है।

राजस्थान मे यद्यपि कोई निर्वाण क्षेत्र अथवा कल्याणक क्षेत्र नही है किन्तु अतिशय क्षेत्र एवं दर्शनीय क्षेत्रों की कमी नही है। प्रस्तुत स्मारिका मे जानकारी हेतु राजस्थान के दिगम्बर जैन तीर्थो का भी परिचय देकर उसे उपयोगी बनाया गया है।

जयपुर में अनेक दिगम्बर जैन सामाजिक सस्थाएँ हैं। पाठको की जानकारी हेतु एक खड मे उन्हे भी सजाया गया है।

प्रस्तुत प्रकाशन की योजना को तैयार करने मे तथा उसकी क्रियान्विति मे अध्यक्ष, मंत्री एवं सदस्यो का जो योगदान रहा वह सराहनीय है। मदिरो के प्रबन्धको ने भी अपने अपने मदिरों का जो परिचय तैयार कर भिजवाया है उसके लिये हम सभी का आभार व्यक्त करते हैं। सम्पादक मडल उन सभी विद्वानों का जिनने मदिरो के सम्बन्ध मे अपने महत्त्वपूर्ण निबन्ध लिखकर पुस्तक को सर्वोपयोगी बनाने में जो योगदान दिया उसके लिये पूर्ण आभारी है।

अनूपचन्द न्यायतीर्थ
भँवरलाल न्यायतीर्थ
कस्तूरचन्द कासलीवाल
कमलचन्द सौगानी
ज्ञानचन्द खिन्दूका
(सम्पादक मण्डल)

मन्दिरों का क्रमिक निर्माण

महाराजा सवाई जयसिंह द्वारा संवत् 1784 मे जयपुर बसाने के साथ ही यहाँ आमेर एवं सांगानेर व आस-पास से जैन परिवार आकर बसने लगे और तभी से मन्दिर निर्माण का कार्य प्रारम्भ हुआ। चाकसू का मन्दिर तो तत्कालीन दीवान राव कृपारामजी ने संवत् 1782 में ही बनवाना प्रारम्भ कर दिया। इसके पश्चात् सवत् 1784 से 1800 तक महाराजा सवाई जयसिंह के शासनकाल मे पाटोदी का मन्दिर, लश्कर का, सघीजी का, सागांको का, बघीचन्दजी का, तेरहपंथी बडा मन्दिर, लूणकरणजी पाड्या का मन्दिर, पापल्यों का, बूचरों का, सिवाड़ का, पहाड़ियो का, जोबनेर का एव बास गोधान का इस प्रकार इन 17 मन्दिरो का निर्माण प्रथम चरण में हुआ। उनमें अधिकांश मन्दिर विशाल एवं कलापूर्ण तथा दर्शनीय है।

इन मन्दिरो के पश्चात् संवत् 1801 से संवत् 1892 तक महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह, माधोसिंह, पृथ्वीसिंह, प्रतापसिंह, जगतसिंह एव सवाई जयसिंह (तृतीय) का शासन रहा। कोई भी महाराजा अधिक वर्षो तक शासन नही कर पाये, फिर भी उनके शासन काल में 64 नये मन्दिरों का निर्माण हो सका। लेकिन इन राजाओं के राज्य मे साम्प्रदायिक ताकतों ने अधिक जोर पकड़ा और इसमे जैन मन्दिरो को पर्याप्त हानि उठानी पड़ी। अनेक मन्दिर तोड़े गये और उनमें शिवपिंड स्थापित करके उन पर जबरन कब्जा कर लिया गया। लेकिन जैसे ही शान्ति हुई मन्दिरो का निर्माण फिर होने लगा और आज भी उसी तरह चल रहा है।

चार पंचायती मन्दिर

अन्य जगह की तरह जयपुर मे भी समाज में पंचायत की व्यवस्था थी। पंचायत बीसपथ तथा तेरहपंथ के दो धड़ो में बटी हुई थी तथा दोनों पंचायतों के दो-दो मन्दिर थे। पाटोदी तथा चाकसू का मन्दिर, बीसपंथ तथा तेरहपथी बड़ा मन्दिर एव बघीचदजी का मन्दिर तेरहपंथ आम्नाय के थे। शेष सभी मन्दिर इन्हीं की आम्नाय के अनुसार थे। पाटोदी का मन्दिर बीसपथ आम्नाय का प्रमुख मन्दिर था जहाँ आमेर से भट्टारक गद्दी स्थानान्तरित हुई। कालांतर में बधीचदजी का मन्दिर, पडित टोडरमलजी के पुत्र गुमानी राम के द्वारा चलाये गये गुमानपथ (तेरहपंथ का विशुद्ध रूप) का कहलाया।

मन्दिरों का नामकरण

जयपुर मे मन्दिरो की यह एक विशेषता रही है कि उनका नामकरण निर्माणकर्त्ताओं के नाम पर, उनके गोत्रों के नाम पर, गाँवो के नाम पर होता रहा है। दीवानों के नाम पर, पांड्या, जाति एवं पंडितो के नाम से भी यहाँ के मन्दिर जाने जाते है। गोत्रो के नाम से विख्यात मन्दिरो की संख्या सबसे अधिक है। इनमें खिन्दूको का, बजो का, पाटोदी का, ठोलियो का, सोनियो का, गोधो का, कालो का, छाबड़ों का, सांगाकों का, संघीजी का (मालावतो) के अतिरिक्त गाँवों के नाम पर लश्कर, फागी, चाकसू, कालाडेरा, जोवनेर, सिवाड़ के मन्दिरो के नाम का उल्लेख किया जा सकता है। मन्दिरो के नामकरण की ऐसी परम्परा अन्यत्र नही मिलती।

प्रकाशन में आर्थिक सहयोग

नाम सहयोगी	राशि रुपयों में
श्री साहू श्रेयास प्रसादजी जैन, बबई	5000
पचायत श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, बगरूवालान, जयपुर	1501
श्री दिगम्बर जैन चैरिटेबिल ट्रस्ट मलजी छोगालाल, जयपुर	1500
श्रीमती अजनादेवीजी लुहाडिया ध प चिरजीलालजी लुहाडिया	1111
श्री गजकुमार ब्रदर्स, 5-धर्मतल्ला स्ट्रीट कलकत्ता	1101
(सेठ लखमीचदजी सर्वसुखदासजी के वशज श्री देवकुमार गजकुमार, दिगम्बर जैन नसियां खजाचीजी, ससारचन्द्र रोड जयपुर)	
श्री दिगम्बर जैन मदिर, कालाडेरा (महावीर स्वामी) जयपुर	1001
श्री दिनेश कुमारजी पापडीवाल, जयपुर	1001
श्री दिगम्बर जैन नसिया ट्रस्ट, जयपुर दीवान उदयलालजी, जयपुर	1000
श्री बडजात्या चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर	1000
श्री फूलचन्दजी छाबडा, जयपुर	1000
श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय, ठोलिया निवास, चितरजन मार्ग, जयपुर	1000
श्री दिगम्बर जैन मदिर गढमलजी बैनाडा, जयपुर	1000
श्री दिगम्बर जैन मदिर पार्श्वनाथजी (सोनियान), जयपुर	1000
श्री दिगम्बर जैन मदिर आदिनाथजी (खोजान), जयपुर	652
प टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर	601
श्री दिगम्बर जैन मदिर आदर्श नगर, जयपुर	600
श्री आदिनाथ मेडीकल स्टोर, जयपुर	600

नाम सहयोगी	राशि रुपयों मे
श्री दिगम्बर जैन मदिर निर्मोनियान, जयपुर	501
श्री दिगम्बर जैन मदिर नागान, जयपुर	501
श्री दिगम्बर जैन मदिर यति यशोदानदजी	501
श्री दिगम्बर जैन मदिर पापल्यान, जयपुर	501
श्री दिगम्बर जैन मदिर ढोलियान, जयपुर	501
श्री दिगम्बर जैन मदिर बधीचन्दजी दीवान, जयपुर	501
श्री हरकचद सुमेरचंद पाड्या कुचामन वाले (सतोष रोडवेज), जयपुर	501
दि जैन मदिर पाटोदी, जयपुर	501
आमाम होटल, जयपुर	501
श्री दिगम्बर जैन मदिर बडा तेरहपथियान, जयपुर	501
श्री राजीव पुत्र श्री ए के जैन, जयपुर	500
श्री दिगम्बर जैन मदिर दीवान अमरचंदजी	500
श्री दिगम्बर जैन मदिर सगहीजी, जयपुर	351
श्री दिगम्बर जैन नसियां सगही हीरालालजी	301
श्री दिगम्बर जैन मदिर लूणकरणजी पाड्या	301
श्री दिगम्बर जैन मदिर फागी का, जयपुर	301
श्री दिगम्बर जैन मदिर घिणोही, जयपुर	301
श्री दिगम्बर जैन मदिर सेठी कॉलोनी, जयपुर	301
श्री दिगम्बर जैन मदिर छावडान, जयपुर	301
श्री दिगम्बर जैन मदिर जवाहरनगर, जयपुर	301
श्री दिगम्बर जैन मंदिर सागाकान, जयपुर	301
श्री दिगम्बर जैन मदिर पहाडियान, जयपुर	251
श्री दिगम्बर जैन मदिर खिन्दूकान, जयपुर	251
श्री दिगम्बर जैन मदिर कालान, जयपुर	251
श्री दिगम्बर जैन मदिर बडा दीवानजी	251
श्री दिगम्बर जैन मदिर दारोगाजी, जयपुर	250
श्री दिगम्बर जैन मदिर बाई कुशलमतिजी, जयपुर	201

आभार

दिगम्बर जैन मंदिर महासघ की स्थापना दिगम्बर जैन मदिरों के चहुँमुखी विकास मे सहयोग देने हेतु वर्ष, 1982 में हुई, किन्तु महासंघ को अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में अर्थाभाव के कारण उतनी सफलता नही मिली जितनी अपेक्षित थी। आज के युग में बिना आर्थिक साधन के किसी भी कार्य का सम्पादन होना असम्भव न हो तो कठिन अवश्य है। अतः कार्यकारिणी समिति ने एक स्मारिका प्रकाशन करने का निर्णय लिया है। स्मारिका मे महासघ का परिचय, जयपुर नगर मे स्थित दिगम्बर जैन मदिरों की जानकारी, राजस्थान में दिगम्बर जैन तीर्थों के बारे मे सूचनाओं का सकलन एव जयपुर की दिगम्बर जैन सस्थाओ का परिचय प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। स्मारिका में महासघ के कार्यक्रमों को गति और मूर्तरूप देने के लिए अर्थ सग्रह के लिए विज्ञापन एकत्रित करने का भी निर्णय लिया है। मुझे यह बताते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि इस कार्य के लिए सभी क्षेत्रों से मुझे पूरा सहयोग मिला जिससे ही कार्यकारिणी समिति द्वारा निर्धारित लक्ष्य को पूरा किया जा सका। उन समस्त प्रतिष्ठानो के महानुभावों का जिन्होंने अपने विज्ञापन के आदेश देकर आर्थिक सहयोग प्रदान किया, मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

मदिरों के सभी प्रबन्धकों का जिन्होंने मदिरो के सम्बन्ध में परिचय आदि भेजकर जानकारी उपलब्ध करायी, आर्थिक सहयोग प्रदान किया तथा मार्गदर्शन किया उन सबका हृदय से आभारी हूँ।

मैं उन सभी विद्वान लेखकों का जिन्होने अपने बहुमूल्य विचारों से स्मारिका की उपयोगिता बढायी एवं अनेक सुझावों से लाभान्वित किया, साधुवाद देता हूँ।

स्मारिका की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मंदिर परिचय खण्ड है जिसके लिए स्मारिका के सम्पादक श्री अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ की जितनी प्रशंसा की जाये कम है। उन्होने मंदिरों के प्रबन्धकों से निरन्तर व्यक्तिगत सम्पर्क कर परिचय सामग्री एकत्रित की तथा लिपिबद्ध कर मूर्तरूप दिया। मैं सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों एवं परामर्शदाताओं का आभार प्रगट किये बिना भी नही रह सकता जिनके सहयोग एव मार्गदर्शन से यह सुन्दर प्रकाशन हो सका है।

मैं महासंघ के अध्यक्ष श्री रामचन्द्रजी कासलीवाल, मत्री श्री बाबूलालजी सेठी तथा कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्यों का आभारी हूँ जिनकी सत्प्रेरणा एवं मार्गदर्शन तथा सक्रिय सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हो सका है।

मैं अर्थ समिति के सभी सदस्यों एव मेरे अनन्य सहयोगी श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी, श्री बलभद्रकुमारजी जैन को भी धन्यवाद दिये बिना नही रह सकता जिन्होने अपना अमूल्य समय अर्थसंग्रह मे लगाया।

कपूरचन्द पाटनी

प्रकाशन में आर्थिक सहयोग

नाम सहयोगी	राशि रुपयों में
श्री साहू श्रेयास प्रसादजी जैन, बवई	5000
पचायत श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, बगरूवालान, जयपुर	1501
श्री दिगम्बर जैन चैरिटेबिल ट्रस्ट मलजी छोगालाल, जयपुर	1500
श्रीमती अजनादेवीजी लुहाडिया ध प चिरजीलालजी लुहाडिया	1111
श्री गजकुमार ब्रदर्स, 5-धर्मतल्ला स्ट्रीट कलकत्ता (सेठ लखमीचंदजी सर्वसुखदासजी के वशज श्री देवकुमार गजकुमार, दिगम्बर जैन नसियां खजाचीजी, समारचन्द्र रोड जयपुर)	1101
श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कालाडेरा (महावीर स्वामी) जयपुर	1001
श्री दिनेश कुमारजी पापडीवाल, जयपुर	1001
श्री दिगम्बर जैन नसिया ट्रस्ट, जयपुर दीवान उदयलालजी, जयपुर	1000
श्री वडजात्या चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर	1000
श्री फूलचन्दजी छावडा, जयपुर	1000
श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय, ठोलिया निवास, चितरजन मार्ग, जयपुर	1000
श्री दिगम्बर जैन मदिर गढमलजी वैनाडा, जयपुर	1000
श्री दिगम्बर जैन मदिर पार्श्वनाथजी (सोनियान), जयपुर	1000
श्री दिगम्बर जैन मदिर आदिनाथजी (खोजान), जयपुर	652
प टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर	601
श्री दिगम्बर जैन मदिर आदर्श नगर, जयपुर	600
श्री आदिनाथ मेडीकल स्टोर, जयपुर	600
श्री दिगम्बर जैन मदिर सिरमोरियान, जयपुर	501
श्री दिगम्बर जैन मदिर नारगु, जयपुर	501
श्री दिगम्बर जैन मदिर यति यशोदानदजी	501
श्री दिगम्बर जैन मदिर पापल्यान, जयपुर	501
श्री दिगम्बर जैन मदिर ठोलियान, जयपुर	501
श्री दिगम्बर जैन मदिर बधीचदजी दीवान, जयपुर	501
श्री हरकचद सुमेरचद पाड्या कुचामन वाले (सतोष रोडवेज), जयपुर	501
दि जैन मदिर पाटोदी, जयपुर	501
आमाम होटल, जयपुर	501
श्री दिगम्बर जैन मदिर बडा तेरहपथियान, जयपुर	501
श्री राजीव पुत्र श्री ए के जैन, जयपुर	500
श्री दिगम्बर जैन मदिर दीवान अमरचंदजी	500
श्री दिगम्बर जैन मदिर सगहीजी, जयपुर	351
श्री दिगम्बर जैन नसिया सगही हीरालालजी	301
श्री दिगम्बर जैन मंदिर लूणकरणजी पाड्या	301
श्री दिगम्बर जैन मदिर फागी का, जयपुर	301
श्री दिगम्बर जैन मदिर घिणोही, जयपुर	301
श्री दिगम्बर जैन मदिर मेठी कॉलोनी, जयपुर	301
श्री दिगम्बर जैन मदिर छावडान, जयपुर	301
श्री दिगम्बर जैन मंदिर जवाहरनगर, जयपुर	301
श्री दिगम्बर जैन मदिर सांगाकान, जयपुर	301
श्री दिगम्बर जैन मदिर पहाडियान, जयपुर	251
श्री दिगम्बर जैन मदिर खिन्दूकान, जयपुर	251
श्री दिगम्बर जैन मदिर कालान, जयपुर	251
श्री दिगम्बर जैन मदिर वडा दीवानजी	251
श्री दिगम्बर जैन मंदिर दारोगाजी, जयपुर	250
श्री दिगम्बर जैन मदिर बाई कुशलमतिजी, जयपुर	201

नाम सहयोगी	राशि रुपयों मे
श्री दिगम्बर जैन मंदिर आदिनाथजी (बख्शीजी), जयपुर	201
श्री दिगम्बर जैन मंदिर चौधरियान, जयपुर	201
श्री दिगम्बर जैन मंदिर मेघराजजी लुहाड़िया, जयपुर	201
श्री दिगम्बर जैन मंदिर चपारामजी पाड्या	201
श्री दिगम्बर जैन मंदिर जीऊबाई, जयपुर	201
श्री भवरलालजी खिन्दूका, जयपुर	201
श्री दिगम्बर जैन मंदिर मुशरफान, जयपुर	200
श्री दिगम्बर जैन मंदिर नया बैराठियो का	151
श्री दिगम्बर जैन मंदिर ईश्वरलालजी गोधा	151

नाम सहयोगी	राशि रुपयों में
श्री दिगम्बर जैन मंदिर बेगस्यान, जयपुर	151
श्री दिगम्बर जैन मंदिर भूराजी, जयपुर	151
श्री दिगम्बर जैन मंदिर वास गोधान ,,	151
श्री दिनेश एग्रो इडस्ट्रीज, जयपुर	101
श्री दीप्ति टेक्सटाइल्स, जयपुर	101
श्री दिगम्बर जैन मंदिर मारूजी, जयपुर	101
श्री दिगम्बर जैन मंदिर सिवाड वालो का ,,	101
श्री दिगम्बर जैन मंदिर वाकलीवालान ,,	101
श्री दिगम्बर जैन मंदिर कासलीवाल वैनाडान, जयपुर	101
श्री महावीर जिनालय, तिलकनगर	101
श्री दिगम्बर जैन मंदिर लश्कर का	100

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ, जयपुर

एक परिचय

मदिर धर्म एवं सामाजिक संस्कृति के आधार-स्तम्भ हैं। ये ऐसे केन्द्र हैं जहां से मानव को सुचारित्र जीवन जीने की प्रेरणा एव आत्मशुद्धि की ओर अग्रसर होने का अवसर प्राप्त होता है जो जीवन का सनातन लक्ष्य है। भौतिकता प्रधान वर्त्तमान युग के संदर्भ मे इनका विशिष्ट महत्त्व हो जाता है। जैन संस्कृति के प्रतीक चिह्नों में प्रतिदिन देवदर्शन भी एक चिह्न है, जिसका एक उद्देश्य इस सामाजिक धरोहर की रक्षा भी है। वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य मे इस प्रतीक चिह्न की अनुपालना मे गिरावट तथा राजकीय नियमो का हस्तक्षेप इन सामाजिक धरोहरों की रक्षा में रुकावट है। अतः इनकी सुरक्षा हेतु एक सगठन की आवश्यकता प्रतीत हुई।

मंदिरो में उपलब्ध प्रतिमाओ, साहित्य भण्डारो, यन्त्रों, बेजोड कलाकृतियो तथा अन्य निधियों की जानकारी प्राप्त कर उनके समुचित संरक्षण हेतु मार्गदर्शन करने एव व्यवस्थापको को वर्त्तमान के विभिन्न राजकीय नियमो की अनुपालना मे, आंतरिक व्यवस्था में बिना किसी हस्तक्षेप के, यथासम्भव सहयोग प्रदान करने के लक्ष्य से श्री दिगम्बर जैन मदिर महासघ, जयपुर की स्थापना की गई। अगस्त 1982 मे राजस्थान सस्था रजिस्ट्रीकरण अधिनियम के अन्तर्गत इसे पजीकृत कराया गया। इसकी स्थापना मे स्वर्गीय श्री मोहनलालजी काला एवं श्री मुन्नीलालजी अजमेरा ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सस्था का अपना विधान है जिसके अनुसार सस्थापक सदस्य एव दिगम्बर जैन मदिर सस्था सदस्य हैं। कार्यकारिणी समिति मे वर्तमान मे 9 सस्थापक सदस्य, 13 संस्था सदस्य एव 3 अभ्यर्थित सदस्य हैं, जिनका विवरण सलग्न परिशिष्ट मे है।

महासघ ने अपना प्रथम कार्य-क्षेत्र जयपुर को चुना, जहाँ नगर व उपनगरों में लगभग 200 दिगम्बर जैन मदिर, नशिया एवं चैत्यालय है। इनमे विशाल एवं मनोज्ञ तीर्थंकर प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित है। इसके अतिरिक्त शास्त्र भण्डारो में दुर्लभ धर्म-ग्रंथ, धार्मिक भावों के भित्ति चित्र, प्रस्तर मे उत्कीर्ण अपूर्व एव दुर्लभ धर्म दृश्य हैं जो सभी कला एव सस्कृति के प्रतीक हैं। महासघ ने विभिन्न कार्य प्रवृत्तिया अपने हाथ मे ली, जिनमे निम्नलिखित मुख्य हैं :-

❀ जयपुर नगर के सभी दिगम्बर जैन मंदिरों की एक सर्वेक्षण योजना बनाई जिसके अन्तर्गत एक विस्तृत प्रश्नावली बनाकर मदिरो के सबध मे सभी प्रकार की जानकारी, जैसे मदिर निर्माणकर्त्ता का नाम, निर्माणकाल, मूर्तियों, यन्त्रों, शास्त्र भण्डारो, भित्ति चित्रों, कलाकृतियो एव व्यवस्था सबधी विवरण प्राप्त किया।

- "दी एन्टीक्विटीज एण्ड आर्ट ट्रेजस एक्ट" के अन्तर्गत की जाने वाली कार्यवाही के संबंध में सभी मंदिरों को जानकारी दी एवं सहयोग देकर कार्य पूरा कराया।

- मंदिरों की संपत्ति को किराया नियंत्रण कानून से मुक्त कराने हेतु महासंघ का शिष्ट-मंडल मुख्य मंत्री, राजस्थान सरकार, से मिलकर दो बार ज्ञापन दिया जिसके फलस्वरूप राजस्थान विधान सभा मे आवश्यक बिल विचाराधीन है तथा जिसके स्वीकृत हो जाने पर मंदिरों की संपत्ति उक्त कानून से मुक्त हो जावेगी।

- मंदिरों मे होने वाली चोरियो के बारे में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कराने एवं चोरियों का माल बरामद कराने हेतु समय-समय पर महासंघ के तत्त्वावधान में शिष्टमंडल गृहमंत्री से मिला एवं ज्ञापन प्रस्तुत किया। मंदिरों के व्यवस्थापकों से भी इस हेतु आवश्यक कदम उठाने के लिए मार्गदर्शन किया।

- राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम की पालना हेतु महासंघ ने विधि परामर्शदात्री समिति का गठन किया, जिसने सभी मंदिरों के प्रबन्ध में एकसूत्रता लाने के लिये आदर्श विधान का प्रारूप बना सभी मंदिरो के प्रबन्धको के मार्गदर्शन हेतु भिजवाया।

- मंदिरों के आधिपत्य, सम्पत्ति संबंधी तथा अन्य विवादो को न्यायालय से परे रखकर संबंधित पक्षों से वार्ता कर सुलझाने का प्रयास किया।

- मंदिरों में उपलब्ध यंत्रो का विस्तृत सर्वेक्षण कार्य कर पूर्ण जानकारी प्राप्त की एवं इन यंत्रों की महत्ता एवं उपयोगिता के संबंध में शोध-कार्य हेतु इस विषय में विद्वानों से सम्पर्क किया।

महासंघ के समक्ष निम्नांकित भावी योजनाएँ एवं कार्यक्रम हैं :—

- जयपुर जिले के स्तर पर समस्त दिगम्बर जैन मंदिरो का सर्वेक्षण कार्य एवं उसको लिपिबद्ध कर सब को जानकारी हेतु सुलभ कराना।

- कलाकृतियों, भित्ति चित्रों आदि की वीडियो फिल्म बनाकर सर्वसाधारण को जानकारी हेतु सुलभ कराना।

- मंदिरो के पंजीकरण कार्य को पूरा कराने की दिशा मे विधि परामर्श एवं मार्ग-दर्शन देना।

- मंदिरों में विराजमान यंत्रों पर शोध-कार्य कराना।

- मंदिरो में जीर्णोद्धार की जानकारी प्राप्त कर आवश्यक सुधार कार्य कराना।

- जैन धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु संगोष्ठियों एवं सेमिनार आदि का आयोजन कराना।

- धार्मिक, शैक्षणिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठनों की जानकारी प्राप्त कर इन्हें एक सूत्र में समाज के सर्वांगीण विकास हेतु योजनाएँ बनाकर प्रतिबद्ध करना।

❀ विवाह एवं स्वर्गवास के अवसर पर व्यक्ति मंदिर संस्थाओं को आर्थिक सहयोग की राशि देना चाहते हैं परन्तु विस्तृत क्षेत्र एवं प्रबन्धको का समय पर मंदिर में न मिलने के कारण कठिनाई होती है। महासघ सभी मदिरो की ओर से ऐसे महानुभावों से राशि संगृहीत कर उन्हें सबधित मदिरों मे वितरण करने की प्रक्रिया चालू करने हेतु भी प्रयत्नशील है।

❀ तीये की बैठक मे मदिरों मे अच्छा जनसमुदाय एकत्रित होता है। इस अवसर पर मदिरों में वैराग्य भावना/आत्मसबोधन/तत्त्वविवेचन सबधी कार्यक्रम के अभाव मे सांसारिक कार्यों के बारे मे ही वार्त्तालाप चालू रहता है। इस कमी को दूर करने हेतु टेप-रिकार्डिंग के माध्यम से आत्मसंबोधन/तत्त्वज्ञान विचारो का प्रसारित करना।

संस्था अभी शैशवकाल में है। प्रारभ मे सर्वेक्षण कार्य मे मदिरों से जानकारी प्राप्त करने में बहुत कठिनाइयाँ आईं, परन्तु शनैः-शनैः इस कार्य की महत्ता की जानकारी आने पर मदिरों के प्रबन्धको ने आवश्यक जानकारी उपलब्ध करायी है।

सभी का सक्रिय सहयोग प्राप्त कर इस सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा एव समाज के सर्वांगीण विकास में क्रियात्मक कदम उठाने हेतु महासघ कृत-सकल्प है।

— बाबूलाल सेठी
मानद् मंत्री

❀ "दी एन्टीक्विटीज एण्ड आर्ट ट्रेजस एक्ट" के अन्तर्गत की जाने वाली कार्यवाही के सबध में सभी मदिरों को जानकारी दी एव सहयोग देकर कार्य पूरा कराया।

❀ मदिरो की सपत्ति को किराया नियंत्रण कानून से मुक्त कराने हेतु महासघ का शिष्ट-मडल मुख्य मत्री, राजस्थान सरकार, से मिलकर दो बार ज्ञापन दिया जिसके फलस्वरूप राजस्थान विधान सभा मे आवश्यक बिल विचाराधीन है तथा जिसके स्वीकृत हो जाने पर मदिरो की सपत्ति उक्त कानून से मुक्त हो जावेगी।

❀ मंदिरों में होने वाली चोरियों के बारे मे सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कराने एव चोरियों का माल बरामद कराने हेतु समय-समय पर महासघ के तत्त्वावधान मे शिष्टमडल गृहमत्री से मिला एव ज्ञापन प्रस्तुत किया। मदिरो के व्यवस्थापको से भी इस हेतु आवश्यक कदम उठाने के लिए मार्गदर्शन किया।

❀ राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम की पालना हेतु महासघ ने विधि परामर्शदात्री समिति का गठन किया, जिसने सभी मदिरों के प्रबन्ध में एकसूत्रता लाने के लिये आदर्श विधान का प्रारूप बना सभी मदिरो के प्रबन्धकों के मार्गदर्शन हेतु भिजवाया।

❀ मंदिरों के आधिपत्य, सम्पत्ति सबधी तथा अन्य विवादो को न्यायालय से परे रखकर सबधित पक्षो से वार्ता कर सुलझाने का प्रयास किया।

❀ मंदिरों मे उपलब्ध यंत्रों का विस्तृत सर्वेक्षण कार्य कर पूर्ण जानकारी प्राप्त की एव इन यत्रों की महत्ता एव उपयोगिता के सबध में शोध-कार्य हेतु इस विषय में विद्वानों से सम्पर्क किया।

महासंघ के समक्ष निम्नाकित भावी योजनाएँ एव कार्यक्रम है :-

❀ जयपुर जिले के स्तर पर समस्त दिगम्बर जैन मदिरो का सर्वेक्षण कार्य एव उसको लिपिबद्ध कर सब को जानकारी हेतु सुलभ कराना।

❀ कलाकृतियों, भित्ति चित्रो आदि की वीडियो फिल्म बनाकर सर्वसाधारण को जानकारी हेतु सुलभ कराना।

❀ मदिरो के पंजीकरण कार्य को पूरा कराने की दिशा मे विधि परामर्श एवं मार्ग-दर्शन देना।

❀ मदिरों में विराजमान यंत्रों पर शोध-कार्य कराना।

❀ मदिरो मे जीर्णोद्धार की जानकारी प्राप्त कर आवश्यक सुधार कार्य कराना।

❀ जैन धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु संगोष्ठियो एवं सेमिनार आदि का आयोजन कराना।

❀ धार्मिक, शैक्षणिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठनों की जानकारी प्राप्त कर इन्हें एक सूत्र मे समाज के सर्वांगीण विकास हेतु योजनाएँ बनाकर प्रतिबद्ध करना।

कार्यकारिणी समिति 1989-92
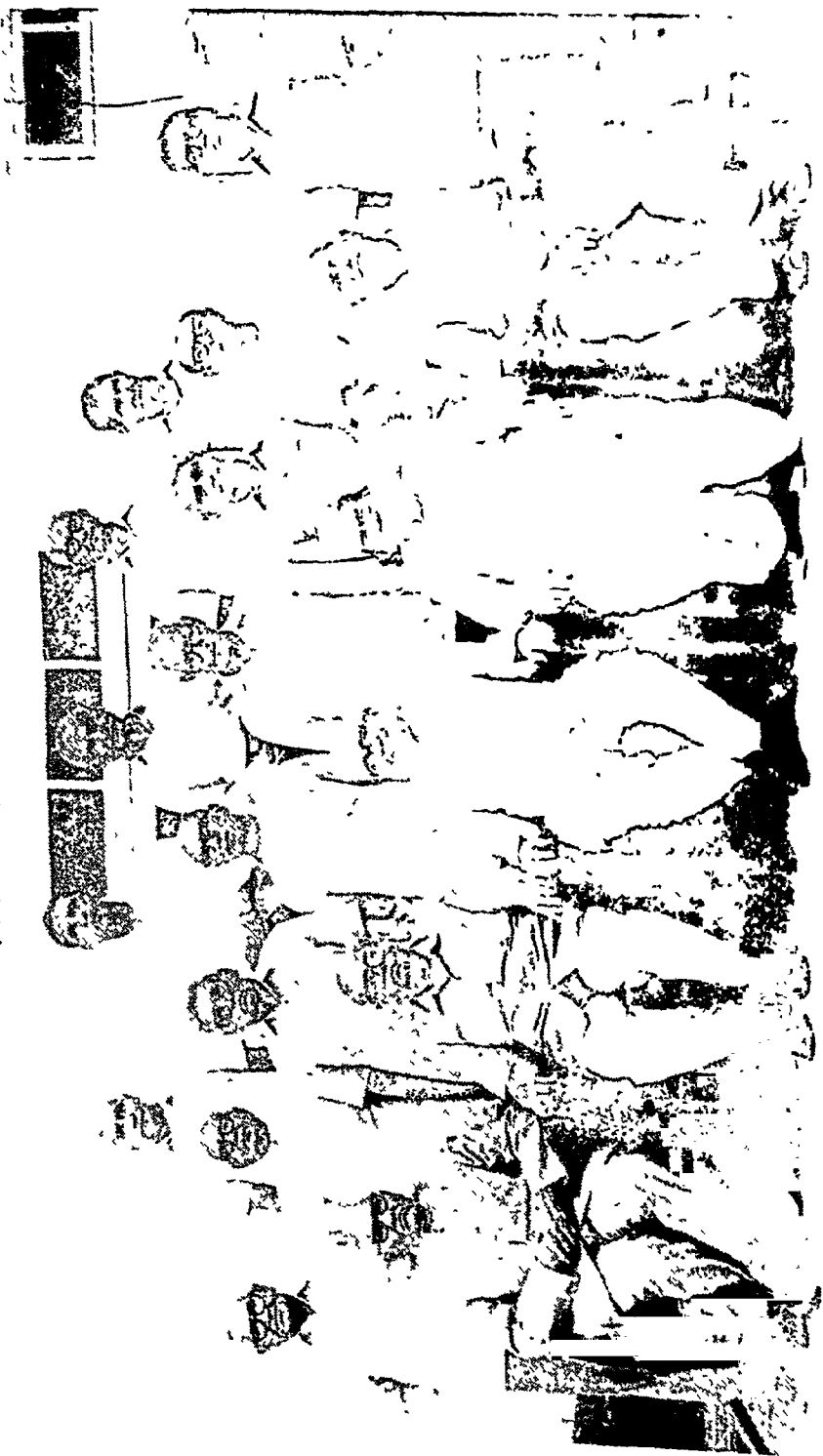
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ, जयपुर

कार्यकारिणी समिति

1.	श्री रामचन्द्र कासलीवाल	अध्यक्ष
2	श्री भंवरलाल न्यायतीर्थ	उपाध्यक्ष
3.	श्री बाबूलाल सेठी	मन्त्री
4.	श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ	सं. मन्त्री
5.	श्री बलभद्रकुमार जैन	कोषाध्यक्ष
6.	श्री ज्ञानचन्द खिन्दूका	सदस्य
7.	श्री कपूरचन्द पाटनी	"
8.	डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल	"
9.	श्री जयकुमार छाबड़ा	"
10	श्री अनूपचन्द ठोलिया	"
11	श्री नरेन्द्रमोहन डण्डिया	"
12.	श्री सूरजमल बैद	"
13.	श्री विद्यानन्द काला	"
14.	श्री कपूरचन्द काला	"
15.	श्री केवलचन्द ठोलिया	"
16.	श्री ताराचन्द पाटनी	"
17.	श्री विजयचन्द जैन	"
18.	श्री चिरजीलाल लुहाड़िया	"
19.	श्री कुबेरचन्द काला	"
20.	श्री नाथूलाल गोदीका	"
21.	श्री कुन्दनमल बगड़ा	"
22.	श्री राजकुमार कासलीवाल	"
23.	श्री हुरकचन्द सौगाणी	"
24	श्री नरेन्द्रकुमार पापड़ीवाल	"

कार्यकारिणी समिति 1989-92

प्रथम खण्ड

मंदिर दर्शन

जयपुर के दिगम्बर जैन मन्दिर तथा चैत्यालयों की सूची

क्र.सं.	नाम मन्दिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
	चौकड़ी घाट दरवाजा			
1.	दि० जैन मंदिर ठोलियान		घी वालो का रास्ता, दूसरा चौराहा	संगमरमर में सुन्दर कार्य, बिल्लौर की प्रतिमाएं
2.	दि० जैन मंदिर दीवान बधीचंदजी साह्		घी वालो का रास्ता, दूसरा चौराहा (गुमान पंथी पंचायती मंदिर)	गुम्बज में सोने का बारीक काम, समवसरण रचना, अकृत्रिम चैत्यालय रचना, टोडरमलजी का मोक्ष-मार्ग प्रकाशक मूलप्रति, विशाल शास्त्र भण्डार
3.	दि० जैन मंदिर नया बैराठियों का		मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, पीपली महादेव का चौराहा	सचित्र ग्रंथ, काष्ठा संघी मन्दिर
	चैत्यालय चांदूलालजी गंगवाल	(1)	गंगवाल भवन, नागोरियों का चौक	
4.	दि० जैन मंदिर गोधान		नागोरियो का चौक	चौक मे प्रवेश द्वार पर सुन्दर पच्चीकारी
5.	दि० जैन मंदिर (चन्द्र-प्रभ स्वामी) चौधरियो का		मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, चौथा चौराहा, बोहराजी के कुए के पास	
	चैत्यालय सौगाणियों का	(2)	मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, (चैत्यालय चतुर्भुज सौगाणी का नले मे से चौधरियो के मंदिर मे आया)	
6.	दि० जैन मंदिर निगोतियान		मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, चौथा चौराहा, बोहराजी के कुए के पास	
7.	दि० जैन मंदिर फागीका		घी वालों का रास्ता, तीसरा चौराहा, मोहल्ला काच की चूड़ीवालान	
	चैत्यालय बांकीवालो का	(3)	घी वालो का रास्ता, बांकीवालो की हवेली	
8.	दि० जैन मंदिर गुमानीरामजी का		घी वालो का रास्ता, पद्मावती जैन कन्या विद्यालय के पास	
9.	दि० जैन मंदिर लाडीजी		हल्दियों का रास्ता, दारोगाजी की हवेली के पास	
	चैत्यालय सोनियों का	(4)	दारोगाजी के मन्दिर के पीछे, सुन्दर लालजी सोनी के मकान में, मन्नालाल रामलाल सोनी द्वारा निर्मित	
10.	दि०जैन मंदिर शांतिनाथ स्वामी, दारोगाजी		हल्दियों का रास्ता, ऊँचा कुआ के पास	सुन्दर भित्ति चित्र हैं।

क्र सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
	चैत्यालय दारोगाजी	(5)	हल्दियो का रास्ता, दारोगाजी की पुरानी हवेली	
11.	पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर बास गोधान		हल्दियो का रास्ता, गोधो का चौक, ऊचा कुआ	प्राचीन प्रतिमा है।
12.	दि० जैन मदिर ईश्वरलालजी गोधा		हल्दियो का रास्ता, गोधो का चौक ऊचा कुआ	
	चैत्यालय ऋषभजी गोधा	(6)	गोधो का चौक, ऊचा कुआ	
13	दि० जैन मदिर श्री चन्द्र प्रभ जिनालय प० लूणकरणजी		ठाकुर पचेवर का रास्ता	यहाँ प्राचीन शास्त्र भडार, सचित्र प्रतियाँ, अबा माता की प्राचीन प्रतिमा, व्यवस्थित सरस्वती भडार, विजययत्र, पुराना रेकार्ड है
14.	दि० जैन मदिर (आदिनाथजी) बख्शीजी का		बख्शीजी का चौक, रामगज बाजार	
	चैत्यालय बख्शीजी का	(7)	बख्शी कस्तूरचदजी की हवेली, बख्शीजी का चौक, रामगज बाजार	
	चैत्यालय बिन्दायक्यो का	(8)	कमला नेहरू स्कूल के पास	
15.	दि० जैन मदिर मुशरफान		मुशरफ कॉलोनी, मनीरामजी की कोठी का रास्ता	सहस्रफणी पार्श्वनाथ प्रतिमा है।
16	दि० जैन मदिर बैदान		मनीरामजी की कोठी के सामने	बडे यत्र हैं।
	चैत्यालय छाबडो का	(9)	मनीरामजी की कोठी का रास्ता, चादूलालजी का मकान	
	चैत्यालय देहलीवालो का	(10)	हल्दियो का रास्ता, दूसरा चौराहा कूटवाली हवेली	
	चैत्यालय गंगवालो का	(10A)	तेरहपथी बडे मदिर के पीछे	
	चैत्यालय रसोवडेवाले बजो का	(11)	हल्दियो का रास्ता, महमियो का दरवाजा	
	चैत्यालय जौहरियो का	(12)	हल्दियो का रास्ता, लाल कटले के पास, गली मे पहले मकान मे	44 यत्र हैं
17	दि० जैन मदिर चाकसू (इसमे एक चैत्यालय भी है)		हल्दियो का रास्ता, चाकसू का चौक (बीस पथी पचायती मदिर)	चौक मे सामने प्रवेश द्वार पर कलापूर्ण सुन्दर कुराई की कारीगरी।
18	दि० जैन मन्दिर बूचरान (लुहाडियान)		हल्दियो का रास्ता, चाकसू का चौक	प्राचीन प्रतिमा, चौबीस तीर्थंकरो की प्रतिमाएँ हैं।
	चैत्यालय दलजी चौधरी, छाबडा व कोडीवालो का	(13)	घी वालो का रास्ता दायी की गली, कोडीवालो का मकान	
	चैत्यालय वैदो का	(14)	घी वालो का रास्ता, दायी की गली	
	चैत्यालय ठोलियो का	(15)	घी वालो का रास्ता, दायी की गली	

सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
	चैत्यालय ढोलाको का	(16)	जोरास्टर वालो के सामने	(मुकदमेबाजी के कारण ताले लगे हैं)
	चैत्यालय सेठियो का	(17)	बाल मुकदजी वज की हवेली के सामने	पार्श्वनाथ की नीले रंग के पाषाण की प्रतिमा है।
	चैत्यालय तूंगेवालो का	(18)	कुन्दीगरो के मैरू का रास्ता, तूंगावालो की हवेली	
	चैत्यालय संघणजी का	(19)	कुंदीगरो के भैरू का रास्ता, कठिहारो के कुए के पास	
19	दि० जैन मंदिर जीऊबाई		शिवजी राम भवन के सामने	सुन्दर वेदी है।
20	दि० जैन मंदिर भूराजी		मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, दूसरा चौराहा	
21.	दि० जैन मंदिर चौबीस महाराज (लाला अमीचद टोंग्या)		मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, दूसरे चौराहे के नुक्कड पर	यहां एकसी चौबीस तीर्थंकरो की 24 विशाल प्रतिमाएं हैं।
	चैत्यालय गोदीकों का	(20)	मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, सुबोधजी गोदीका का मकान	
22	दि० जैन मंदिर मारूजी		मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, मारूजी का चौक	यह मारूजी ओसवाल का बनवाया हुआ तेरहपंथी दिगम्बर जैन मन्दिर है।
23	दि० जैन मंदिर बड़ा तेरहपंथी		हल्दियों का रास्ता (तेरहपंथी पंचायती बडा मंदिर)	यहां 2 विशाल शास्त्र भंडार हैं, पच्चीकारी का सुन्दर कार्य है, सचित्र भक्तामरस्तोत्र का पोथा है। यहां पं० टोडरमलजी की शास्त्र सभा होती थी।

चौकड़ी तोपखाना हजूरी

सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
24	दि० जैन मंदिर रामगंज, ढूंढियों (पाटनियो) का		जीणमाता का खुर्रा, सूरजपोल बाजार जयपुर	यहा सं० 1350 की प्राचीन प्रतिमा है।

चौकड़ी गंगापोल

सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
	चैत्यालय राव कृपारामजी	(21)	आमेर रोड, कच्चा बंधा, रावकृपारामजी का घेर	रावकृपाराम महाराजा जयसिंह के पचरत्नों में से एक थे।
	चैत्यालय राव कृपारामजी	(22)	आमेर रोड, कच्चा बंधा, रावकृपारामजी का घेर	(यहां चांदी के रथ में विराजमान सूर्य प्रतिमा भी है)

क्र. सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. स.	पता	विशेष
	चैत्यालय घमानेवालो का	(60)	नमक की मंडी, कालख वालो का चौक	
56.	दि० जैन मंदिर आमली का		नमक की मंडी, सुन्दर वा वास	
	चैत्यालय डिग्गीवालो का	(61)	टिक्कीवालो का रास्ता, डिग्गीवालो का मकान	
57.	दि० जैन मंदिर डूगरसीदास		टिक्कीवालो का रास्ता	
	चैत्यालय बाजूलालजी गोधा	(62)	टिक्कडमल का रास्ता	
58.	दि० जैन मंदिर जोबनेर		झालाणियो का रास्ता	समवसरण रचना।
	चैत्यालय हरकारो का	(63)	मंदिर जोबनेर मे ही है	
			चौकड़ी पुरानी बस्ती	
59.	दि० जैन मंदिर बेगस्थान		चादपोल बाजार, उणियारा रावजी का रास्ता	
60	दि० जैन मंदिर कासलीवाल बैनाडान		ठा० हरिसिंहजी लाडखानी के सामने उणियारा रावजी का रास्ता	
61.	दि० जैन मंदिर घिणोई		जयलाल मुशी का रास्ता, पाचवाँ चौराहा, रामसुखजी काला के सामने	
			चौकड़ी हवाली शहर (जयपुर शहर के बाहर)	
62	दि० जैन नसिया खजाचीजी		ससारचन्द्र रोड, चादपोल बाहर	
63.	पचायत श्री दि० जैन मंदिर बगरूवालान		रेलवे स्टेशन, जयपुर सदर थाना के पास	सहस्रकूट चैत्यालय।
64.	दि० जैन नसिया तेरह पथियान		रेलवे स्टेशन, जी पी ओ. के सामने	
	चैत्यालय ठोलियो का	(64)	ठोलिया बिल्डिंग, एम आई रोड पाचबत्ती, जयपुर	बन्जीलाल ठोलिया चैरिटेबिल ट्रस्ट द्वारा सचालित सन् 1935 मे स्थापित। यहां 22 प्रतिमाएँ 2½" से 1" [illegible]

नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
दि० जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय हिन्द होटल वालो का		गोखले मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर	
चैत्यालय बूचरो का	(65)	बूचरा बिल्डिंग, भगवानदास रोड	
चैत्यालय ठोलियो का	(66)	अनूपचंदजी ठोलिया का प्लाट, चितरंजन मार्ग, सी-स्कीम	
चैत्यालाल मीठालालजी सेठी	(67)	सेठी भवन, कमानी हाउस के पास, सी-स्कीम, महावीर मार्ग, जयपुर	
दि० जैन मंदिर नसियां दीवान उदयलाल		सवाई मानसिंह अस्पताल के सामने, राम बाग रोड, जयपुर	मानस्तंभ ।
दि० जैन नसिया भट्टारकजी		नारायणसिंह चौराहा, राम बाग रोड, जयपुर	सामाजिक एवं धार्मिक समारोह स्थल, वेदी में पच्चीकारी, भट्टारको की चरण छत्रियां ।
पार्श्वनाथ दि० जैन चैत्यालय बापूनगर		गणेश मार्ग, बापू नगर, जयपुर	
सीमंधर जिनालय, टोडरमल स्मारक भवन		बापू नगर, जयपुर	भगवान सीमंधर स्वामी की प्रतिमा ।
दि० जैन मंदिर दुर्गापुरा		दुर्गापुरा	
चैत्यालय बगवाडा वालो का	(68)	गगवाल पार्क	
चैत्यालय सेठियो का	(69)	पचार वालो का प्लाट, फतहटीबा, जयपुर	
दि० जैन मंदिर मुल्तान दि० जैन समाज		आदर्श नगर, जयपुर	भव्य जिनालय, कलापूर्ण बिना स्तंभ की वेदी, 2500वां निर्वाण स्मृति स्तंभ, कांच की जडाई के सुन्दर भाव चित्र ।
दि० जैन मंदिर मोहनबाड़ी		सूरजपोल दरवाजे बाहर, गलता रोड, जयपुर	
दि० जैन मंदिर जनता कॉलोनी		जनता कॉलोनी, सर्किल के पास	
दि० जैन मंदिर सेठी कॉलोनी		जैन मंदिर मार्ग, सेठी कॉलोनी, आगरा रोड	
दि० जैन मंदिर शास्त्री नगर		शास्त्री नगर, सर्किल के पास	
दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ मधुवन		मधुबन, टोंक फाटक	
चैत्यालय मधुवन	(70)		
चैत्यालय तोतूकों का	(71)	मधुबन, किसान मार्ग	
दि० जैन मंदिर लाल कोठी		ऐवरेस्ट कॉलोनी, लाल कोठी, जयपुर	

क्र. सं.	नाम मंदिर, चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
78.	दि० जैन मंदिर बोहराजी बिहारी वाला, पुराना घाट (अधीनस्थ, मंदिर पाटोदी)		व्यासजी के बाग के सामने, पुराना घाट	
79.	दि० जैन मंदिर चिरमोल्यों का		घाट की गुणी से उतरते ही पुराना घाट	
80.	दि० जैन नसिया सगही हीरालालजी दूनी वाले		खानिया (पुराना घाट), आगरा रोड	
81.	ट्रस्ट प्राइवेट दि० जैन मन्दिर मुरलीधरजी राणा की नसियां (दर्शनीय)		खानिया, पुराना घाट	छत मे सोने की महीन कलम के चित्र, समवसरण, नालकी, आचार्य सागरजी की छत्री, विशाल नसि
82.	दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री पार्श्वनाथ चूलगिरि		खानियां, पुराना घाट, चूलगिरि	जयपुर के निकट पर अतिशय क्षेत्र, वान महावीर की फुट ऊँची प्रतिमा, फुट का तावे का सिद्धि दायक यंत्र, टूक, खड्गासन च तलघर मे
83.	दि० जैन नसियां सगही हुकमचंदजी (अधीनस्थ, मंदिर संगहीजी, जयपुर)		बास बदनपुरा, टकी के नीचे	
84.	दि० जैन नसियां बालमुकदजी बज		बास बदनपुरा, टंकी के नीचे	छत मे तथा खम सोने की छपाई का भव मंदिर
85.	दि० जैन मदिर नसियां दीवान नंदलाल (झालरे वाली) (अधीनस्थ, मदिर पार्श्वनाथजी, जयपुर		बास बदनपुरा, टंकी के नीचे	
86.	दि० जैन नसियां श्योजी गोधा (अधीनस्थ, मदिर लश्कर)		महारानीजी की छत्रियो के सामने, आमेर रोड, जयपुर	अच्छा पिकनिक धार्मिक एवं सामा समारोह-स्थल
87.	दि० जैन मंदिर नसियां विजैराम पाड्या (अधीनस्थ, मंदिर पाटोदी)		फकीर के तकिये के पास, आमेर रोड	
88.	दि० जैन मदिर जवाहर नगर		सैक्टर 7, जवाहर नगर, जयपुर	

सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
	चैत्यालय बैराठियो का	(72)	गौतम मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर	
.	दि० जैन मदिर महावीर स्वामी नेहरू नगर, बस्ती सीतारामपुरा		झोटवाड़ा रोड, जयपुर	
).	दि० जैन मदिर अम्बावाड़ी		महावीर मार्ग, अम्बावाडी, जयपुर	
	चैत्यालय अम्बावाडी	(73)	अम्बावाडी, जयपुर	
1.	दि० जैन मदिर झोटवाडा		झोटवाडा, जयपुर	
'2.	पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर झोटवाड़ा		झोटवाडा, जयपुर	
·3.	दि० जैन महावीर जिनालय		विजयपथ, तिलक नगर, जयपुर	
¹4.	दि० जैन मदिर मालवीय नगर		सेक्टर न० 2/379, मालवीय नगर, जयपुर	
95.	दि० जैन मदिर मालवीय नगर		सेक्टर न० 3 (निर्माणाधीन)	
	चैत्यालय मालवीय नगर	(74)	मालवीय नगर, जयपुर	
96.	दि० जैन मदिर मालवीय नगर		सेक्टर न० 7, मालवीय नगर, जयपुर	
97.	दि० जैन मदिर महावीर नगर		महावीर नगर, दुर्गापुरा के पास	
98.	दि० जैन मदिर ज्योति नगर, जनकपुरी		ज्योति नगर, इमली के फाटक के पास	
99.	दि० जैन मदिर कीर्तिनगर		वसुन्धरा कॉलोनी, टोक रोड, जयपुर	
100.	दि० जैन मदिर जग्गा की बावड़ी (अधीनस्थ, मदिर चाक्सू)		घाट के बालाजी के पास, पुराना घाट, जयपुर	पहाडियो के बीच रास्ता, पार्श्वनाथ की भव्य प्रतिमा।

आमेर

सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
101.	दि० जैन मदिर सांवलाजी (नेमिनाथजी)		अधीनस्थ, श्रीमहावीरजी क्षेत्र	प्राचीन मंदिर, भट्टारकजी की गद्दी जयपुर से पहले यहां थी। आमेर गद्दी के भट्टारकजी ही जयपुर तथा श्रीमहावीरजी मे रहे। 12वीं शताब्दी की प्राचीन प्रतिमा।
102.	दि० जैन मदिर चन्द्रप्रभजी		अधीनस्थ, श्रीमहावीरजी क्षेत्र	संघी रायचन्द्र छावड़ा ने बनवाया।
103.	दि० जैन मदिर सघीजी (पहाड़ी पर)		नसिया लुहाड़ियो की	सं० 1559 की निर्मित।
104.	दि० जैन मदिर बधीचन्दजी		अधीनस्थ, मंदिर बधीचंदजी, जयपुर	
105.	दि० जैन मदिर मुशीजी का			

क्र. सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
106.	दि० जैन मंदिर नेमिनाथजी, बाहरली आमेर		अधीनस्थ, मंदिर कालाडेरा, महावीर स्वामी, जयपुर	नेमिनाथ की केश युक्त प्राचीन प्रतिमा।
107.	दि० जैन मंदिर संकट हरण पार्श्वनाथजी		अधीनस्थ, फागीवाला ट्रस्ट	विशाल प्रतिमा।
108.	दि० जैन नसियां कीर्ति-स्तम्भ		अधीनस्थ, श्रीमहावीरजी क्षेत्र	भट्टारक नामावल कीर्ति-स्तम्भ एवं रकों की चरण छ
			सांगानेर	
109.	दि० जैन मंदिर संगहीजी		अधीनस्थ, श्रीमहावीरजी क्षेत्र	दर्शनीय मंदिर, कलापूर्ण मंदिर, प्रतिमाएँ।
110.	दि० जैन मंदिर अढाईपैंडी		अधीनस्थ, मंदिर गोधान (नागौरी चौक)	
111.	दि० जैन मंदिर बधीचंदजी		अधीनस्थ, मंदिर बधीचंदजी, जयपुर	
112.	दि० जैन मंदिर पाटनियों का		अधीनस्थ, मंदिर तेरहपंथी बड़ा, जयपुर	
113.	दि० जैन मंदिर गोदीकों का		अधीनस्थ, मंदिर तेरहपंथी बड़ा, जयपुर	मनोज्ञ तीन शिख मे महीन कुराई का
114.	दि० जैन मंदिर ठोलियों का		अधीनस्थ, मंदिर ठोलियान, जयपुर	सुन्दर तीन शिख
115.	दि० जैन मंदिर लुहाड़ियों का		अधीनस्थ, लुहाडियान	
116.	दि० जैन नसिया संगहीजी		अधीनस्थ, श्रीमहावीरजी क्षेत्र	
			अन्य मंदिर	
1.	दि० जैन मंदिर श्योपुर		अधीनस्थ, मंदिर गोधान, जयपुर	
2.	दि० जैन मंदिर जगतपुरा		अधीनस्थ, मंदिर बधीचन्दजी, जयपुर	
3.	दि० जैन मंदिर सागानेर		सागानेर पुलिस चौकी के सामने बस्ती मे	
4.	दि० जैन मंदिर शांतिनाथ खोह		खानिया से 3 कि. मी.	
5.	दि० जैन मंदिर बगराणा		खानिया से 3 कि मी.	
6.	दि० जैन मंदिर कानीखोह		बंध की घाटी से आगे	
7.	दि० जैन मंदिर चावंड का मंढ		रामगढ़ रोड पर	
8.	दि० जैन मंदिर सायपुरा		रामगढ रोड पर	
9.	दि० जैन मंदिर साईवाड़		रामगढ रोड पर	
10.	दि० जैन मंदिर रामगढ़		रामगढ रोड पर	
11.	दि० जैन मंदिर कूकस		जयपुर देहली रोड पर	
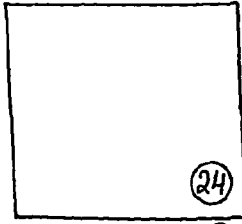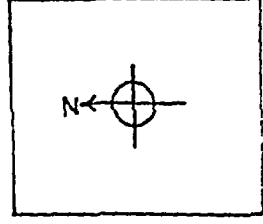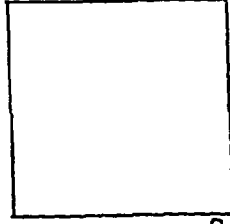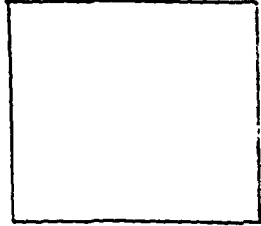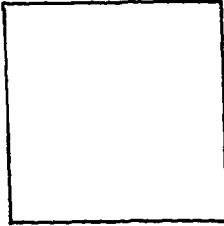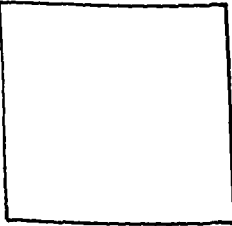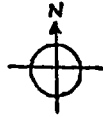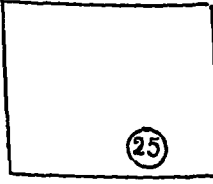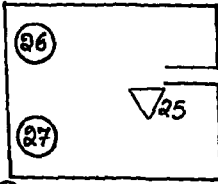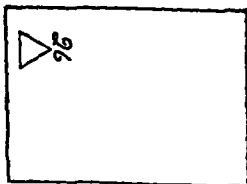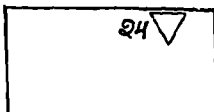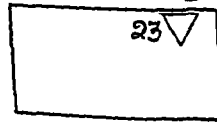
मानचित्र चौकड़ी पुरानी बस्ती
मंदिर
चैत्यालय
N
हनुमानजी वाला रास्ता
उनियारा रावजी का रास्ता
बगरू वालों का रास्ता
जाट के कुएँ का रास्ता
जयलाल मुंशी का रास्ता
गोविन्द राय जी का रास्ता
चाँद पोल बाजार
छोटी चौपड़
59
60
19
मानचित्र चौकड़ी गंगापोल
N
मंदिर
चैत्यालय
आमेर का रास्ता
सुभाष चौक
सम्राट सिनेमा
चाँदनी का नालिक
मोती कटला
21
22
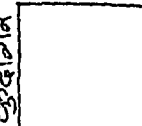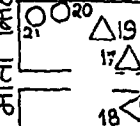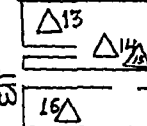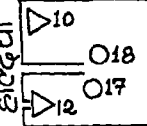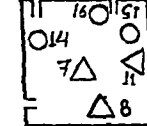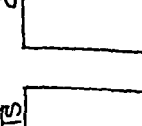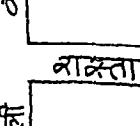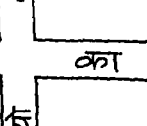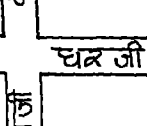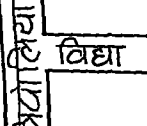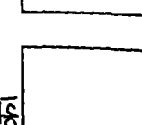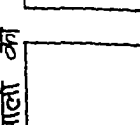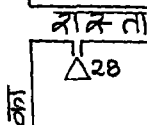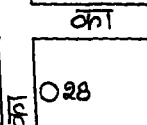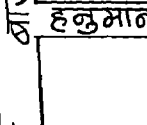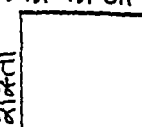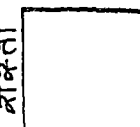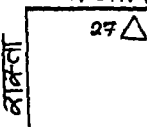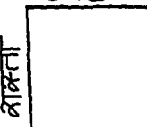
मान चित्र चौकड़ी मोदीखाना
दि० जैन मंदिर
चैत्यालय
मंदिर
चौंदपोल बाजार
छोटी चौपड़
त्रिपोलिया बाजार
नेहरू बाजार
किशन पोल बाजार
घी वालों का रास्ता
लाल जी साड का रास्ता
आचार्यो का रास्ता
चौकड़ी मोदीखाना

मानचित्र-चौकड़ी तोपखाना देस ○ मंदिर △ चैत्यालय

जिनेन्द्र वंदना

अद्य मे सफलं जन्म नेत्रे च सफले मम ।
त्वामद्राक्षं यतो देव हेतुमक्षयसंपदः ।। 1 ।।

हे देव ! आज मैंने अक्षय सम्पत्ति के हेतुभूत आपके दर्शन किये । इससे मेरा जन्म सफल हो गया और दोनो नेत्र सफल हो गये ।

अद्य संसार-गंभीर-पारावारः सुदुस्तरः ।
सुतरोऽयं क्षणेनैव जिनेन्द्र तव दर्शनात् ।। 2 ।।

हे जिनेन्द्र ! आज आपके दर्शन करने से तैरने के लिये अत्यन्त कठिन यह गम्भीर संसार रूपी समुद्र मेरे लिये क्षणमात्र में सुतर हो गया ।

अद्य मे क्षालितं गात्रं नेत्रे च विमले कृते ।
स्नातोऽहं धर्म-तीर्थेषु जिनेन्द्र तव दर्शनात् ।। 3 ।।

हे जिनेन्द्र ! आज आपके दर्शन करने से मेरा शरीर धुल गया, नेत्र निर्मल हो गये और मैंने धर्मतीर्थों में स्नान कर लिया ।

अद्य मे सफलं जन्म प्रशस्तं सर्वमङ्गलम् ।
संसारार्णव-तीर्णोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ।। 4 ।।

हे जिनेन्द्र ! आज आपके दशन करने से मेरा जन्म सफल हो गया, मुझे प्रशस्त सर्व मंगलो की प्राप्ति हो गयी और मैं संसार रूपी समुद्र से तैरकर पार हो गया ।

अद्य कर्माष्टक-ज्वालं विधूतं सकषायकम् ।
दुर्गतेर्विनिवृत्तोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ।। 5 ।।

हे जिनेन्द्र ! आज आपके दर्शन करने से मैंने कषाय के साथ आठ कर्मों को जला कर दूर कर दिया और मैं दुर्गति से पार हो गया ।

अद्य सौम्या ग्रहाः सर्वे शुभाश्चैकादश स्थिताः ।
नष्टानि विघ्नजालानि जिनेन्द्र तव दर्शनात् ।। 6 ।।

हे जिनेन्द्र ! आज आपके दर्शन से मेरे एकादश स्थान मे स्थित सब ग्रह सौम्य और शुभ हो गये तथा विघ्न-जाल नष्ट हो गये ।

अद्य नष्टो महाबन्धः कर्मणां दुःखदायकः ।
सुख-सङ्गं समापन्नो जिनेन्द्र तव दर्शनात् ।। 7 ।।

हे जिनेन्द्र ! आज आपके दर्शन करने से दुःख देने वाला कर्मो का महाबन्ध नष्ट हो गया और मैं सुखकर सगति को प्राप्त हो गया ।

अद्य कर्माष्टकं नष्टं दुःखोत्पादक-कारकम् ।
सुखाम्बोधि-निमग्नोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ।। 8 ।।

हे जिनेन्द्र ! आज आपके दर्शन करने से दुःख को उत्पन्न करने वाले आठ कर्म नष्ट हो गये तथा मैं सुख सागर में निमग्न हो गया ।

अद्य मिथ्यान्धकारस्य हन्ता ज्ञान-दिवाकरः ।
उदितो मच्छरीरेऽस्मिन् जिनेन्द्र तव दर्शनात् ।। 9 ।।

हे जिनेन्द्र ! आज आपके दर्शन करने से मेरे शरीर में मिथ्यात्व रूपी अन्धकार का नाश करने वाला ज्ञान रूपी सूर्य उदित हुआ है ।

अद्याहं सुकृतीभूतो निर्धूताशेषकल्मषः ।
भुवनत्रय-पूज्योऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ।।10।।

हे जिनेन्द्र ! आज आपके दर्शन करने से समस्त कल्मष को धोकर मैं सुकृती और तीन लोक मे पूज्य हो गया हूँ ।

(गुणनन्दिकृत अद्याष्टक स्तोत्र से)

अथ जयपुर सम्बन्धी जिन चैत्य-चैत्यालयों की वंदना

(स्वरूपचंद बिलाला)

दोहा

जयपुर नगर मझारि जे ध्वजावंध जिनधाम।
सीस नमाय कर जोरिकरि, करूं सदा परनाम।।

चौपई

अष्टादश जिनवर को धाम, विजयराम कृत अतिअभिराम।
सोन्या को मंदिर है तही, नला माहि अय देवल यही।।
बकसी कृपाराम कृत जान, मुसरफ खिन्दूका को मान।
पंडित लूणकरण को लसै, वास तणोगोधा जहां वसे।।
दरोगा स्वरूपचद को जानि, लाडी को तहां ही पहचानि।
रामगज का सुभ अभिराम, गुमानीराम को है सुभ नाम।।
फागी को मंदिर जु अनूप, गोधा को है अधिक सरूप।
दिवाण बधीचंद को है सही, ठोल्या को मंदिर भी तही।।
तेरापंथ तणे जु महान, सवाई राम मारू को जान।
भूरा को अघहरता सही, सेठ अमीचंद को है तही।।
बाई जीऊ को जिनधाम, पंच चाटसू कृत अभिराम।
बूचरा को है जिन थान, काला डेहरा को जु महान।।
रस्तै चौडे जती को लसै, दरस करत सब पातिग नसै।
एक बीस जिन मंदिर यही, सांगावति बाजार जु सही।।
पापलिया को जिनग्रह महा, पहाड्या को जिन थानक जहाँ।
दिवान अमरचंद को है नयो, स्योजीराम दीवान जु ठयो।।
लसकर को है अधिक अनूप पाटोदी को अधिक सरूप।
तन सागर जु जती को जानि, मेघराज को है सुखदानि।।
बाई कियो चैत्यालय सही, खिन्दूका को अवरजु सही।
संगही मालावत को महा, सांगाका को है सुभ तहा।।

घड़ू तणू है सुख को धाम, साहावडा को है अभिराम।
काला को अघनासन हार, सिवाड तणो जाणो सुखकार।।
बाकलीवाल तणो मन आणि, खोजा को जु अवर सुभ जाण।
पंडित चम्पाराम जु तणो, कासलीवाला को सुभ घणो।।
चौधरयां को मंदिर है सही, अवर बगीची को सुभ कही।
बघीचंद बज को अभिराम, इमली नीचे अवर सुठाम।।
डूगा पाड्या को है सही, जोबनेर को भी है तही।
षड् विंशति ये जिनवर थान, अवावति बाजार महान।।
कासलीवाला को जु महान, अवर घिनोही को अघ हान।
एही दो मदिर सुभ कहे, बसती पुराणी मे सरदहे।।

सोरठा

द्वय पंचास जू एह, सब जोडे तै होत है।
सहरमाहि सब तेह बदू मनवचकाय सो।।
नगर चोगिरदा जेह ताकी गिणती कहत हूँ।
याकी लार गिणेह, मडल पूजादिक विषै।।

चौपई

हुकमचंद बज की है वहां नदलाल कृत है शुभ महा।
हुकमचंद संगही की नवीन बंघ दरवाजे नसियां तीन।।
गोधा स्योजी राम की सही गुमानी राम पडित की तही।
घू दरवाजै नसियां दोइ आगै और सुणो भविलोय।।
पंडित कन्ही राम की सही नसियां सूरजपोल प्रति कही।
स्पोपोल दरवाजा पार भट्टारक की नसियां सार।।

दोहा

ए सब जोडया सप्त होय, नसिया अति अभिराम।
नर नारी वदन करै अघ हारक सुख धाम।।
घाट माहि जिनधाम इक, खान्या में इक जाणि।
एक जगा की वापिका, बदो सब सुख खानि।।

चौपई

अंबावति का मदिर कहूं बदन करत करम सब दहूं।
स्याम जिनेश्वर को परसिद्ध मन वछित फल देन समृद्ध।।
दिवान रायचन्द्र कृतसार नसिया ऊंची सहर मझारि।
दिवान रतनचद को सुभ लसै, जयचद कृत वदित अघ नसै।।

बाम्भि अंबावति मंदिर एक, कोरत थम नसिया शुभ टेक।
अंबावति प्रति एहि सात, वंदन करूं जोरि जुग हाथ ।।

साहिवाड तणो सुभ जानि, काणोखोरि जिनेसुर थान।
चांवडि के मढ मदिर वण्यो खो मधि शाति जिनेश्वर तणो ।।

रोडपुरा में मदिर एक, अब सांगावति धारि विवेक।
बंदन करू जोरि जुग पानि महा भक्ति हिरदा मे ठानि ।।

संगही जू को है जु महान, भोत शिखर जुत अतिसै थान।
दूजो गोदीका को सही, तीजो पाटणियों को कही ।।

चोथो गोधा को है सार पचम ठोल्या कृत सुखकार।
छठो हरसुखराम जु कियो नगर बाह्य नसियां को ठयो ।।

एही सात जु मंदिर भये, सांगावति मनवचतन नए।
जयपुर प्रति सब एकठा गिणै, एक असी मंदिर जिनवणै ।।

ए सब पूजै जयपुर पथ, उच्छव मंडल करत महंत।

दोहा

संवत अठारा सै सही और बाणवे जानि।
फाल्गुन गयारसि शुक्ल जू परजंत ए जिन थान ।।

ए जिन चैत्यतणी महा स्तुति पढि है त्रिकाल।
मन बच काया शुद्ध करि पावै शिव सुखसार ।।

इति जयपुर संबंधी चैत्यवदना सम्पूर्ण ।।

घर मांही चैत्यालय सवै, तिनको बंदन मेरी अबै ।।

अथ जयनगर चेत्यालय वंदना लिख्यते

दोहा

सवत शत अष्टाजुदश बाणवै लो जिनधाम।
ता पीछे अब जो भये तिनको कहू ज नाम ।।

संवत शत अष्टाजुदश त्रिनवति ताके मध्य।
ऋषभदास निगोतिये मदिर रच्यो प्रसिद्ध ।।

फिर संवत उगणीस सत अवर जु नव के माहि।
काष्ठासंघ पडित तणो भयो जु बंदौ ताहि ।।

सौगाणी लच्छीराम को चैत्यालय थो सार।
धुजाबंध शामिल कियो बंदू सब सुखकार ।।

धुजाबंध मदिर भये सब चतु असी महान।
बार बार बदन करू मन वच क्रम इक तान।।
जयपुर नगर मझार अब चैत्यालय सुखकार।
श्रावग के घर माहि जे तिनकी सख्या सार।।
भिन्न भिन्न वरनन करू वदन कू चितलाय।
तिन के बदन पूजतै परम पुन्य उपजाय।।
कृपाराम राव की जानि होली जय सागर परमानि।
तामे दो चैत्यालय सही मन वच वदन करिहू वही।।
खानसामा की होली माहि चिमनलाल सघही घर थाहि।
इक चैत्यालै ताकै माहि वदू भाव भगति मन लाय।।
मनालाल श्रीमाल रहत ता जागै चैतालय कहत।
सोगाणी सुखलाल जु रहै चैत्यालय ता घर इक कहै।।
मुसी दयाचंद गृह मांहि चैत्यालय इक जाणे ताहि।
तेरापथी द्योसा तणा इक चैत्यालय ता मधि भणा।।
पन्नालाल सौगाणी रहै चैत्यालय इक ता घरि कहै।
नला मांहि इम अष्ट जु कहे वदन करत पाप सब दहे।।
मनालाल बकसी घर जानि सदाराम चौधरी थान।
अमीचंद टोंग्या घर माहि चैत्यालय बंदू शुभ ताहि।।
भान गड्या कै अधिक अनूप, वदन करत मिटे अघ-तूप।
ढोलाका कै अधिक सरूप चैत्यालय इक अधिक अनूप।।
निगोतिया की हवेली मांहि बाह्य चोक चैत्यालय ताहि।
हरचंद जू सेठी के घरा चैत्यालय इक वदन करा।।
वैद बधीचद ठोल्या कने चैत्यालय तहा अनुपम बनै।
चुनीलाल पाटनी जान बजारि ऊपरि चैत्यालय मानि।।
पन्नालाल बज कै गृहसार चैत्यालय बदू सुखकार।
बसंतराय टोग्या कै जानि बदू भाव भगति उर आन।।
घासीराम छाबड़ा वही चैत्यालय इक बदू तही।
भूरामल गोदीका घरा इक चैत्यालय वदन करा।।
सहज राम ठोल्या कै जानि नोहरा मे चैत्यालय ठानि।
गुमानीराम लुहाड्या तणो फिर तूंगा हाला कै भणो।।
कूआ कठारा का के पासि, बलदेव संगही घर इक भास।
नवल जी छावडो सोन्या कनै चैत्यालय इक ता घर गिणं।।
नाथूलाल जु संगही तणो, दरोगा विसन लाल घर भणो।
राम लाल सोनी के सही दीवान रतन चंद होली मही।।

अमोलिकजी गोदीका घरा, भाव भगति करि वदनकरा।
चिमनलाल गगवाल कै जानि आरतराम साह् कै मानि।।
दीवान कन्हीराम के जु महान चतुर्भुज छाबडा घर जानि।
महाराम ठोल्या घर सही रिखबदास गोधा घर मही।।
सुख जु राम गोधा कै एक मन्नालाल हासूका टेक।
दिल सुख गोधा के गृह माहि चैत्यालय इक है सुखदाहि।।
मनालाल तोतुका घरा चैत्यालय इक वदन करा।
दीवान भागचद घर माहि चैत्यालय इक वदू ताहि।।
सांगावति बाजार मझारि, चैत्यालय त्रयतीस मझारि।
चैत्यालय जिन प्रतिमा सही नित प्रति नमू सीस धरि सही।।
बस्ती पुराणी मे है सही स्योजी राम हलकारों तही,।
ता घर चैत्यालय इक लसै वदित पाप सवैही नसै।।
सोनीलाल साह घर सही, रूस्तमदार चैत्य जु महि।
तनसुख पांड्या के घर माहि चैत्यालय इक जाणे ताहि।।
सदासुख ठोल्या घर माहि चैत्यालय इक जाणे ताहि।
घमाणा हाला हुकमजुचंद चैत्यालय ता घर सुखकद।।
श्रीलाल उकील जु झडा कनै ता घर चैत्यालय इक भनै।
उकील चतुर्भुज को घर तही, चैत्यालय इक सुख की मही।।
नेमीचद वक्सी घर महा, चैत्यालय इक जाणो तहा।
गोधा सर्वसुख घर माहि, जाणो इक चैत्यालय ताहि।।
पोल्याका कै जाणो सही, चैत्यालय इक वदू तही।
चिमनलाल बज के घर माहि, एक जिनालय वंदू ताहि।।
मनालाल बज ताही पास, एक जिनालय जाणो तास।
पनालाल साह के घरा एक जिनालाय वदन करा।।
अमीचद गोधा घर माहि चैत्यालय इक बंदू ताहि।
दिलसुख पडित कै इक जानि मयाचद गोदिका मानि।।
सदासुख अजमेरा तणो, चैत्यालय बदू अघ हणो।
धरमदास संगही कै घरा, भाव भगति कर बंदन करा।।
घासीराम खिन्दूका तणो बंदित नासै पातिग घणो।
छाबडा अमरचंद घर जाणि, झबर्‌या के चैत्यालय मानि।।
दिल सुख पाटोदी के घरा मनवचतन करि बदन करां।
विनायक्या अभैचंद घर सही माणिक चंद दूणी हाला कही।।
हीरालाल दूणी का घरा चैत्यालय इक बंदन करां,।
मनालाल पाड्या घर माहि जीवणराम जु बज कै ठांहि।।

छाबडा सदासुख घर सही, मांगीराम जु वज गृह कही।
जीवनराम सेठी गृह मांहि भांवसा चिमनलाल गृह ठाहि ।।
स्योलाल गगवाल जु तणो तनसुख खिन्दूका को गिणो।
गोगराज खिन्दूका घरा मालीराम साह सिर घरा ।।
सोनी चैनजी ताके एक वदन करिहू धारि विवेक।
भोजराज बटवाल सुजानि, ता घर चैत्यालय एक मानि ।।
किशोरदास चौरूका तणो, दूजो भौसा को वहा गिणौ।
डेडा का सदासुख गृह माहि चैत्यालय इक वदू ताहि ।।
बछराज टोडरको रहै, ताकै घर चैत्यालय कहै।
सपत राम दीवाण निवास, तामे चैत्यालय सुख रासि ।।
मोहन लाल खिन्दूका तणो, बदित पातिग सब ही हणो।
बाजार अबावति का कै माहि, चैत्यालय त्रयचालस, ताहि ।।
बारंबार नमू सिर नाय मन वच भाव सहित सुखदाय।
सब चैत्यालय जयपुर माहि, जोडदिये चौरासी ताहि ।।
भवि सब बंदन पूजन करे, पुन्य उपाय सवै अघ हरै।
मन वच वदन करू त्रिकाल, बारबार सीस कर धार ।।

छप्पय

जयपुर नगर मभारि और चौगिरद नगर कै।
धुजाबध जिन मदिर सब चड अस्सी फिरि कै ।।
चैत्यालय सब नगर माहि चड अस्सी सारे।
मन वच काय त्रिकाल बदि सब हम उर धारे ।।
संवत सत उगणीसदस पोष सुकल पचम सुवर।
सरूपचंद बदन करत, हाथ जोरि कर सीस धर ।।

इति जयपुर नगर मध्ये चैत्यालय वदना सपूर्ण ।।

कवि स्वरूपचद की यह एक ऐतिहासिक रचना है। कवि ने स. 1892 मे जयपुर में मदिरो की तथा सं. 1910 मे चैत्यालयो की वन्दना की। तदनुसार स. 1892 तक 81 मदिर थे। तीन बाद में बने और उनकी सख्या 84 हो गई। कवि ने चैत्यालयो की संख्या भी 84 ही गिनाई है।

— सम्पादक

परिचय दिगम्बर जैन मंदिर
जयपुर

चौकड़ी घाट दरवाजा

---

1. श्री दिगम्बर जैन मंदिर ठोलियान

यह मंदिर चौकड़ी घाट दरवाजा मे घी वालो के रास्ते मे स्थित है। इसका निर्माण कब और किसने कराया इसका कोई उल्लेख उपलब्ध नही है किन्तु मदिर की सीढियों के ऊपरवाली कलापूर्ण छत्री का निर्माण स. 1826 में होने का उल्लेख अवश्य मिलता है जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि मंदिर सं. 1826 से पूर्व का निर्मित है।

मदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान शान्तिनाथ की श्वेत पाषाण की संवत् 1861 की प्रतिष्ठित विराजमान है। मूलवेदी के तीनो ओर 16 वेदिया है जिनमे कुल 227 प्रतिमाएँ एवं 83 यंत्र विराजमान है। प्रतिमाओ मे बिल्लौरकी चार (3 प्रतिमाए 10" से 15" की तथा एक छोटी 4" की) एक हरे मरगज की, दो विशाल मूर्तिया लाल पाषाण की तथा एक पद्मावती देवी की (पाषाण) विशेष आकर्षक प्रतिमा है। यंत्रो में घटाकरण, गणधरवलय, धर्मचक्र, कर्मप्रकृति, सत्तरसय, सर्पविषहरण आदि प्रमुख है।

मदिर में विशाल हस्तलिखित ग्रथों का शास्त्र भडार है जिसमे 512 ग्रंथ एवं 143 गुटके हैं। लगभग 200 ग्रंथ 200 वर्ष पुराने है। सबसे प्राचीन प्रति सवत् 1416 की लिपिबद्ध द्रव्य सग्रह की ब्रह्मदेव की टीका है। पूजापाठों का एक ऐसा गुटका भी है जिसमें 475 पूजाएं हैं तथा 47 मडलों के सुन्दर रंगीन चित्र हैं। ग्रंथों के सुन्दर कलापूर्ण पुट्ठे भी हैं। भडार पूर्ण व्यवस्थित है तथा इसकी सूची ग्रथ-सूची भाग 3 मे प्रकाशित हो चुकी है।

मदिर कलापूर्ण एवं विशाल है। बाहर के चौक मे कमरे बने हैं जिनमे महावीर स्कूल का नगर विभाग चलता है। बाहर के चौक में सीढ़ियां चढकर मदिर में प्रवेश होता है। पूरा मंदिर संगमरमर का बना है। चौक के तिबारो की दीवारो मे स्वाध्याय के ग्रंथ आदि विराजमान करने की कलापूर्ण खिड़किया बनी हुई हैं जिनके प्रवेश द्वार बारीक कारीगरी के नमूने हैं, मुडेरे भी सगमरमर की हैं और उन पर बेलबूटे कुरे हुए हैं जिसके नीचे संगमरमर पत्थर की ही लटूरियाँ लटक रही हैं। इस कलापूर्ण वैभव की रक्षाहित ही चौक पर दुछते का निर्माण कराया गया है।

मदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा इसकी व्यवस्था पजीकृत विधानानुसार चुनी हुई प्रबध समिति द्वारा की जाती है। इस समिति के अन्तर्गत दो मदिरो की और व्यवस्था है जिसमे एक जयपुर में लाडीजी का मंदिर तथा दूसरा सांगानेर मे ठोलियो का मदिर है।

इस मंदिर के सामने पूर्व की ओर एक धर्मशाला है जिसको भव्य रूप देने में सेठ बनजीलालजी ठोलिया व उनके वशजो ने प्रमुख भूमिका निभाई है। वर्तमान मे इसकी व्यवस्था सेठ बनजीलालजी ठोलिया चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से की जा रही है।

मदिर मे गत 4 दशको से वाणीभूषण पं० मिलापचदजी शास्त्री भाद्रपद मास में प्रवचन करते है जिसमे सैकड़ों श्रोता धर्मलाभ लेते है।

वर्तमान में मंदिर के अध्यक्ष श्री मुन्नीलालजी ठोलिया तथा मत्री श्री धनकुमारजी रारा है।

2. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर दीवान बधीचन्दजी साह

यह मन्दिर जयपुर की चौकड़ी घाट दरवाजा में घी वालो के रास्ते मे स्थित है। यह गुमान पथ आम्नाय का पंचायती मदिर है जो तेरहपंथ आम्नाय से भी अधिक शुद्धाम्नायी है। पं. टोडरमलजो के पुत्र गुमानीराम ने यह पथ चलाया था जो भट्टारको द्वारा प्रचलित शिथिलाचार का कट्टर विरोधी है। इस मदिर का निर्माण सदाराम साह के पुत्र दीवान रतनचन्द साह के भाई बधीचन्द ने कराया था। रतनचंद साह सवत् 1813 से संवत् 1815 तक दीवान पद पर रहे। संभव है इसी समय के पूर्व इस मन्दिर का निर्माण हुआ हो। वैसे निर्माणकाल के सम्बन्ध में कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नही है किन्तु काफी समय तक यह मदिर पं. टोडरमलजी एव गुमानीरामजी की साहित्यिक प्रवृत्तियों का प्रमुख केन्द्र स्थल रहा है। पं टोडरमलजी ने यही बैठकर गोम्मटसार, आत्मानुशासन जैसे महान ग्रंथो की भाषा टीका एवं मोक्षमार्ग प्रकाशक जैसे महान आध्यात्मिक ग्रंथो की रचना की थी। इस दृष्टि से इसका निर्माण स० 1800 से पूर्व ही हो जाना चाहिये। यद्यपि दीवान बधीचन्दजी साह के वंशजो मे टोडरमलजी साह के पुत्रादि है किन्तु उनके पास भी निर्माण तिथि का कोई प्रमाण उपलब्ध नही है।

यहाँ मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो समवसरण मे विराजमान है। मन्दिर में कुल 80 प्रतिमाएं हैं तथा 33 यत्र हैं जो समवसरण सहित 10 वेदियो में विराजमान हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा श्वेत पाषाण की तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजी की है जो सं० 1291 की प्रतिष्ठित है। पाषाण की दो अन्य विशाल प्रतिमाए भी हैं जो सं० 1883 की प्रतिष्ठित हैं। कुछ धातु की छोटी प्रतिमाएं है जिन्हे नीचे तलघर मे विराजमान कर रखा है। यंत्रो मे सं. 1461 में [illegible]ष्ठित गणधरवलय यंत्र के अतिरिक्त नवग्रह यत्र, याग मण्डल यंत्र [illegible] र्मचक्र य[illegible] [illegible]नीय हैं। मन्दिर का क्षेत्रफल 625 वर्ग गज है, अचल सम्पति मे [illegible] एक [illegible]। गत दश वर्षों मे दुछता बना है तथा अन्य नवीन कार्य व [illegible] । है।

कलाकृतियाँ

मन्दिर अत्यधिक कलापूर्ण है। समवसरण के ऊपर विशाल गुम्बज है जिसमे भावचित्रों पर सोने की चित्रकारी का काम अत्याधिक कलाविज्ञ करीगरो द्वारा किया गया है। गुम्बज के नीचे के खभे मकराने के कुराईदार हैं उन पर तथा छत मे सोने की जड़ाई का कलापूर्ण कार्य है। यहाँ ही अकृत्रिम चैत्यालय तथा समवसरण की रचना बहुत ही कलापूर्ण एव दर्शनीय है। खिलौनो के रूप मे सुन्दर देवगृह आदि आकर्षक है। इसके अतिरिक्त हाथी पालकी तथा समवसरण आदि भी है। मन्दिर के एक भाग में अढाई द्वीप तथा दूसरे मे कर्म प्रकृति, ससारवृक्ष, पट् लेश्या आदि के भाव-चित्र बने हैं जो कांच से मढे हैं। मन्दिर काफी ऊँचा वना हुआ है।

पंचायती मन्दिरों में से एक होने के कारण यहाँ एक विशाल रथ भी था जो अब लूणवा क्षेत्र को दे दिया गया है। इस मन्दिर में प्रतिष्ठा महोत्सव का पूरा सामान यथा बडा डेरा, तम्बू, छोलदारिया, कनातें, दरियाँ आदि भी है। यहाँ का सामान शुद्धाम्नाय वाले मन्दिर के उत्सव आदि में ही दिया जाता है।

शास्त्र भण्डार

पचायती मन्दिर तथा जयपुर के विद्वानों की साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र होने के कारण यहाँ का शास्त्र भण्डार अधिक महत्त्वपूर्ण है। यहाँ संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश, हिन्दी, राजस्थानी एवं ढूँढारी भाषा के ग्रथो का अच्छा संग्रह है। यहा 1278 हस्तलिखित ग्रथ है जिनमें 162 गुटके हैं। यहाँ 15वीं से 19वी शताब्दी तक के ग्रथो की प्रतियो का महत्त्वपूर्ण संग्रह है। सबसे प्राचीन प्रति वड्ढमाण काव्य की है जो सं. 1481 की लिखी हुई है। भण्डार मे मुख्य रूप से आमेर एवं सागानेर से आये हुए ग्रथ हैं क्योकि दोनों ही स्थानों पर बधीचन्दजी के मन्दिर हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण प्रतियो मे स्वयभू का हरिवशपुराण, प्रभाचन्द की आत्मानुशासन टीका, महाकवि वीर कृत जम्बूस्वामी चरित्र, कवि सधारू का प्रद्युम्न चरित, नन्द का यशोधर चरित्र, मल्ल कवि कृत प्रबोध चन्द्रोदय नाटक, सुखदेव की वणिक् प्रिया, बशीधर की दस्तूर मालिका तथा पूज्यपाद की सर्वार्थसिद्धि उल्लेखनीय है। पं. टोडरमलजी की मूल पाण्डुलिपियों [1] के अतिरिक्त प्रदर्शनी में रखने योग्य कांच की रेतघड़ी, ग्रंथ लेखन सामग्री के पुट्ठे, कपड़े के ग्रथ रखने के बडे थैले (सन्दूकनुमा) आदि भी हैं। शास्त्र भण्डार की सूची ग्रथ-सूची भाग 3 मे छप चुकी है।

धार्मिक प्रचार-प्रसार की दृष्टि से रात्रि को शास्त्र सभा होती है जिसमे पं. सतोषकुमारजी झाझरी प्रवचन करते हैं। रात्रि पाठशाला की व्यवस्था भी है जिसमें धार्मिक कक्षाएं चलती हैं। मन्दिर की ओर से चतुर्विध दान का भी प्रावधान है।

यहाँ का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है जिसके अध्यक्ष श्री नानूलालजी साह आबूजी वाले तथा मंत्री श्री पदमचन्द साह है।

---

[1] मोक्षमार्ग प्रकाशक एव आत्मानुशासन भाषा

मदिर वीस पथ आम्नाय का है तथा इसकी व्यवस्था पजीकृत विधानानुसार चुनी हुई प्रबध समिति द्वारा की जाती है। इस समिति के अन्तर्गत दो मदिरो की और व्यवस्था है जिसमें एक जयपुर में लाडीजी का मंदिर तथा दूसरा सागानेर मे ठोलियो का मदिर है।

इस मदिर के सामने पूर्व की ओर एक धर्मशाला है जिसको भव्य रूप देने मे सेठ बनजीलालजी ठोलिया व उनके वशजो ने प्रमुख भूमिका निभाई है। वर्तमान मे इसकी व्यवस्था सेठ बनजीलालजी ठोलिया चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से की जा रही है।

मदिर में गत 4 दशकों से वाणीभूषण प० मिलापचदजी शास्त्री भाद्रपद मास में प्रवचन करते हैं जिसमे सैकड़ों श्रोता धर्मलाभ लेते है।

वर्तमान में मदिर के अध्यक्ष श्री मुन्नीलालजी ठोलिया तथा मत्री श्री धनकुमारजी रारा हैं।

2. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर दीवान बधीचन्दजी साह

यह मन्दिर जयपुर की चौकड़ी घाट दरवाजा मे घी वालो के रास्ते मे स्थित है। यह गुमान पथ आम्नाय का पंचायती मदिर है जो तेरहपंथ आम्नाय से भी अधिक शुद्धाम्नायी है। प. टोडरमलजो के पुत्र गुमानीराम ने यह पंथ चलाया था जो भट्टारको द्वारा प्रचलित शिथिलाचार का कट्टर विरोधी है। इस मदिर का निर्माण सदाराम साह के पुत्र दीवान रतनचन्द साह के भाई बधीचन्द ने कराया था। रतनचंद साह सवत् 1813 से सवत् 1815 तक दीवान पद पर रहे। सभव है इसी समय के पूर्व इस मन्दिर का निर्माण हुआ हो। वैसे निर्माणकाल के सम्बन्ध में कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नही है किन्तु काफी समय तक यह मंदिर पं. टोडरमलजी एव गुमानीरामजी की साहित्यिक प्रवृत्तियो का प्रमुख केन्द्र स्थल रहा है। प टोडरमलजी ने यही बैठकर गोम्मटसार, आत्मानुशासन जैसे महान ग्रंथों की भाषा टीका एवं मोक्षमार्ग प्रकाशक जैसे महान आध्यात्मिक ग्रथों की रचना की थी। इस दृष्टि से इसका निर्माण स० 1800 से पूर्व ही हो जाना चाहिये। यद्यपि दीवान बधीचन्दजी साह के वशजो मे टोडरमलजी साह के पुत्रादि हैं किन्तु उनके पास भी निर्माण तिथि का कोई प्रमाण उपलब्ध नही है।

यहाँ मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो समवसरण में विराजमान है। मन्दिर मे कुल 80 प्रतिमाए हैं तथा 33 यत्र हैं जो समवसरण सहित 10 वेदियो में विराजमान हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा श्वेत पाषाण की तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजी की है जो सं० 1291 की प्रतिष्ठित है। पाषाण की दो अन्य विशाल प्रतिमाए भी हैं जो सं० 1883 की प्रतिष्ठित हैं। कुछ धातु की छोटी प्रतिमाएं है जिन्हे नीचे तलघर मे विराजमान कर रखा है। यत्रो मे स. 1461 में प्रतिष्ठित गणधरवलय यंत्र के अतिरिक्त नवग्रह यत्र, याग मण्डल यंत्र एवं धर्मचक्र यंत्र उल्लेखनीय हैं। मन्दिर का क्षेत्रफल 625 वर्ग गज है, अचल सम्पति मे दूकानें तथा एक मकान है। गत दश वर्षों मे दुछता बना है तथा अन्य नवीन कार्य व जीर्णोद्धार हुआ है।

कलाकृतियाँ

मन्दिर अत्यधिक कलापूर्ण है। समवसरण के ऊपर विशाल गुम्वज है जिसमे भावचित्रों पर सोने की चित्रकारी का काम अत्याधिक कलाविज्ञ करीगरो द्वारा किया गया है। गुम्वज के नीचे के खभे मकराने के कुराईदार हैं उन पर तथा छत में सोने की जड़ाई का कलापूर्ण कार्य है। यहाँ ही अकृत्रिम चैत्यालय तथा समवसरण की रचना बहुत ही कलापूर्ण एव दर्शनीय है। खिलौनो के रूप मे सुन्दर देवगृह आदि आकर्षक हैं। इसके अतिरिक्त हाथी पालकी तथा समवसरण आदि भी है। मन्दिर के एक भाग मे अढ़ाई द्वीप तथा दूसरे मे कर्म प्रकृति, ससारवृक्ष, षट् लेश्या आदि के भाव-चित्र बने हैं जो कांच से मढे है। मन्दिर काफी ऊँचा बना हुआ है।

पंचायती मन्दिरो मे से एक होने के कारण यहाँ एक विशाल रथ भी था जो अब लूणवा क्षेत्र को दे दिया गया है। इस मन्दिर में प्रतिष्ठा महोत्सव का पूरा सामान यथा बड़ा डेरा, तम्बू, छोलदारिया, कनातें, दरियाँ आदि भी हैं। यहाँ का सामान शुद्धाम्नाय वाले मन्दिर के उत्सव आदि में ही दिया जाता है।

शास्त्र भण्डार

पचायती मन्दिर तथा जयपुर के विद्वानो की साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र होने के कारण यहाँ का शास्त्र भण्डार अधिक महत्त्वपूर्ण है। यहाँ सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश, हिन्दी, राजस्थानी एवं ढूंढारी भाषा के ग्रथो का अच्छा सग्रह है। यहां 1278 हस्तलिखित ग्रंथ हैं जिनमें 162 गुटके हैं। यहाँ 15वी से 19वी शताब्दी तक के ग्रथो की प्रतियों का महत्त्वपूर्ण सग्रह है। सबसे प्राचीन प्रति वड्ढमाण काव्य की है जो स. 1481 की लिखी हुई है। भण्डार में मुख्य रूप से आमेर एव सागानेर से आये हुए ग्रथ हैं क्योकि दोनो ही स्थानों पर बधीचन्दजी के मन्दिर है। कुछ महत्त्वपूर्ण प्रतियो मे स्वयंभू का हरिवंशपुराण, प्रभाचन्द की आत्मानुशासन टीका, महाकवि वीर कृत जम्बूस्वामी चरित्र, कवि सधारू का प्रद्युम्न चरित, नन्द का यशोधर चरित्र, मल्ल कवि कृत प्रबोध चन्द्रोदय नाटक, सुखदेव की वणिक् प्रिया, बंशीधर की दस्तूर मालिका तथा पूज्यपाद की सर्वार्थसिद्धि उल्लेखनीय है। पं. टोडरमलजी की मूल पाण्डुलिपियों[1] के अतिरिक्त प्रदर्शनी मे रखने योग्य कांच की रेतघड़ी, ग्रंथ लेखन सामग्री के पुट्ठे, कपड़े के ग्रथ रखने के बडे थैले (सन्दूकनुमा) आदि भी हैं। शास्त्र भण्डार की सूची ग्रथ-सूची भाग 3 मे छप चुकी है।

धार्मिक प्रचार-प्रसार की दृष्टि से रात्रि को शास्त्र सभा होती है जिसमे पं. सतोषकुमारजी झांझरी प्रवचन करते हैं। रात्रि पाठशाला की व्यवस्था भी है जिसमें धार्मिक कक्षाएं चलती हैं। मन्दिर की ओर से चतुर्विध दान का भी प्रावधान है।

यहाँ का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है जिसके अध्यक्ष श्री नानूलालजी साह आबूजी वाले तथा मत्री श्री पदमचन्द साह हैं।

---

[1] मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं आत्मानुशासन भाषा

3. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर नया बैराठियों का

यह मदिर मोतीसिंह भोमिया के रास्ते मे पीपली महादेव के चौराहे पर स्थित है। यह मदिर बालाबख्श अग्रवाल बैराठ वालों ने काष्ठा सघी पडितों की ओर से सं. 1909 मे बनवाया। स्वरूपचद बिलाला कृत जयपुर चैत्य वन्दना मे भी इसका निर्माण काल सम्वत् 1909 ही निम्न प्रकार दिया है।

सम्वत् उगनीससत् अवर जु नव के मांहि।
काष्ठा संघ पडित तनों भयो जु वन्दू ताहि ।।

यहाँ मूलनायक प्रतिमा प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की संवत् 1909 की प्रतिष्ठित है। प्रतिमा समवशरण मे विराजमान है जिसकी प्रतिष्ठा काष्ठा सघ के भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति की परम्परा में भ. महेन्द्रकीर्ति ने कराई थी। मन्दिर मे कुल 82 प्रतिमाएँ तथा 5 यंत्र हैं। प्राचीन प्रतिमा सुपार्श्वनाथजी की श्याम पाषाण की है जो संवत् 1501 की प्रतिष्ठित है।

मन्दिर मे समवशरण है अत. गुमान पथ का होना चाहिये किन्तु ऐसा नही है क्योकि क्षेत्रपाल की प्रतिमा भी है। मन्दिर मे दोनों आम्नाय प्रचलित हैं।

मन्दिर मे 118 हस्तलिखित ग्रंथ एव गुटके है जिनकी सूची भाग 4 में प्रकाशित हो चुकी है। भण्डार मे संवत् 1775 की सचित्र स्वर्णाक्षरी प्रतियाँ है, जिसमे ऋषिमंडल स्तोत्र, जिनपंजर स्तोत्र, ऋषि मंडल पूजा, निर्वाणकाण्ड, अष्टाह्निका जयमाल प्रमुख है। प्रतियो मे बेलबूटे आदि अत्यधिक सुन्दर है। प्रतियाँ प्रदर्शन योग्य हैं। भण्डार मे सबसे प्राचीन प्रति वीरनदि कृत चन्द्रप्रभ चरित्र की है जो विक्रम सवत् 1524 भादवा बुदी 7 की लिखी हुई है। इसके अतिरिक्त कपड़े पर भी मण्डल एव चित्र हैं।

मन्दिर का क्षेत्रफल लगभग 200 वर्ग गज का है जिसमें नीचे दूकानें तथा ऊपर मन्दिर बना हुआ है।

मन्दिर का प्रबन्ध चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है। वर्तमान में श्री दौलतमलजी अजमेरा अध्यक्ष एवं श्री प्रेमचंदजी सौगानी मंत्री हैं।

4. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर गोधान

यह मन्दिर घीवालो के रास्ते में, नागौरियों के चौक में स्थित है। इस मन्दिर के निर्माणकर्त्ता व निर्माणकाल के बारे मे कोई पुख्ता प्रमाण उपलब्ध नही है। किंवदन्ती है कि गोधा गोत्रीय परिवार ने इसका निर्माण कराया था इसलिए यह गोधों का मन्दिर कहलाता है। "भट्टारक संप्रदाय" के लेख स. 276 के अनुसार इसका निर्माण सं. 1868 के पूर्व हो चुका था। संवत् 1868, ज्येष्ठ शु. 4 भ. सुखेन्द्र कीर्ति की आम्नाय में जयपुर के नेमिनाथ चैत्यालय गोधों के मदिर में वृहदाराधनाकथाकोश की प्रति लिखी गई।

इस मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान श्री नेमिनाथजी की श्याम पाषाण की है जो अति मनोज्ञ है। मदिर मे कुल 308 प्रतिमाएँ एवं 127 यन्त्र है। यन्त्रो मे सामान्य यंत्रो के अतिरिक्त घटाकरण, ऋषि मंडल एवं कूर्मयंत्र (मातृका यत्र) आदि प्रमुख है।

यह विशाल मंदिर संगमरमर के स्तम्भो पर आधारित है, अत्यन्त कलापूर्ण है। अन्दर के चौक मे निज वेदी की ओर प्रवेश करने के 3 द्वार है जिनमे श्वेत पाषाण मे बहुत ही सुन्दर पच्चीकारी का काम है। पक्षियो के आकार अत्यन्त आकर्षक बनाये गये हैं। रगीन पत्थर की कुराई एवं उसमे मगल द्रव्य नियोजन बहुत ही बारीकी के साथ चित्ताकर्षक ढंग से किया गया है जो देखते ही बनता है। इस कुराई की कलात्मकता अत्यन्त भव्य व दुर्लभ है। अन्दर निज वेदी मे गुम्बज के नीचे सोने की छपाई का सचित्र कार्य है। श्वेत सगमरमर पर बना सम्मेद शिखर का भाव-चित्र भी अत्यन्त मनोज्ञ है। इसके अतिरिक्त कलापूर्ण कृतियों में बडा सुनहरी, रथ पालकी, समवशरण तथा हाथी आदि सुरक्षित है तथा ये सब वस्तुए उत्सव विधान आदि मे काम आती है।

मन्दिर मे विशाल शास्त्र भण्डार है जिसमे 642 हस्तलिखित ग्रथ, 107 गुटके तथा 2800 मुद्रित पुस्तकें है। ग्रथ भण्डार पूर्ण व्यवस्थित एव सुरक्षित है। हस्तलिखित ग्रन्थों एवं गुटकों की सूची, ग्रंथ सूची भाग 4 में प्रकाशित हो चुकी है। अधिकांश ग्रथ 17वी से 19वी शताब्दी के लिखे हुए हैं। सबसे प्राचीन प्रति, व्रत कथा-कोष की है जो संवत् 1586 की लिखी हुई है। भण्डार में हिन्दी के प्राचीन कवियो के पदो के सग्रह के अतिरिक्त डूगर कवि की होलिका चौवई (सं. 1629) एव हरचन्द गंगवाल का पच-कल्याणक प्रतिष्ठा पाठ (स. 1830) आदि अलभ्य रचनाएँ उपलब्ध है। स्व. श्री राजमलजी संघी (गोधा) इस शास्त्र भण्डार का कार्य अत्यन्त निष्ठा व रुचिपूर्वक देखते थे। मदिर में सायकाल के समय निर्धारित शास्त्र सभा चलती है। प्रचार-प्रसार की दृष्टि से पुस्तक प्रकाशन एवं रात्रि पाठशाला की योजनाएँ भी विचाराधीन है। समय-समय पर उत्सव विधानादि तथा रथ यात्रा आदि का आयोजन भी होता रहता है।

मदिर बीस पंथ आम्नाय का है। मदिर का क्षेत्रफल 8460 वर्गफीट है जिसमें जिनालय भाग के अलावा नीचे, गोदाम व दुकानें तथा मदिर के स्वामित्व मे तीन मकान हैं।

इसी मंदिर के अधीन सागानेर का प्रसिद्ध अढाई पैडी का मदिर तथा सांगानेर से 3 कि.मी. दूर श्योपुर ग्राम का जैन मंदिर है।

यह मंदिर सार्वजनिक प्रन्यास के अन्तर्गत पजीकृत है तथा विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा मुख्य मदिर व अधीनस्थ मदिरो का प्रबन्ध किया जाता है। यह मंदिर नागौरियो के मदिर के नाम से भी जाना जाता है। क्योकि पुराने समय मे नागौर से आये जैन परिवार इसके इर्द-गिर्द बसे हुए हैं इसलिए मदिरजी का चौक, नागौरियो का चौक कहलाता है। वर्तमान मे श्री मोहनलाल अग्रवाल अध्यक्ष एव श्री मोहनलाल जैन मत्री हैं।

मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ भगवान की है जो सवत् 1678 की प्रतिष्ठित है। यहाँ धातु तथा पाषाण की कुल 62 प्रतिमाएँ एवं 11 यंत्र है। इसके अतिरिक्त पाषाण मे शिखरजी के भाव उकेरे हुए है तथा क्षेत्रपाल पद्मावती की प्रतिमाएँ भी हैं। यह मन्दिर बीस पथ आम्नाय का है। मन्दिर का क्षेत्रफल 1600 वर्ग फीट है तथा इसके नीचे नोहरा और दुकानें हैं।

मन्दिर की प्रबन्ध व्यवस्था विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा की जाती है। वर्त्तमान मे श्री देवेन्द्र मोहनजी कासलीवाल अध्यक्ष एवं श्री सुबोधकुमारजी पांड्या मंत्री हैं।

9. श्री दिगम्बर जैन मंदिर लाडीजी

यह मदिर हल्दियों के रास्ते में ऊचा कुआ के आगे जैन मन्दिर दारोगाजी के पास स्थित है। यह एक छोटा-सा मदिर ऊपर सीढिया चढकर है। यह मदिर कब और किसने बनाया इसका कोई प्रामाणिक उल्लेख नही है। इतना अवश्य है कि यह सवत् 1892 के पूर्व का है।

यह मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा इस मे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है। इस मंदिर मे 22 मूर्तियाँ तथा 7 यंत्र हैं। यहाँ की पचायत ने इस मंदिर की चल-अचल संपत्ति को सवत् 2006 में मंदिरजी ठोलियान के सुपुर्द कर दिया तभी से इसकी व्यवस्था ठोलियो के मदिर की प्रबन्ध समिति द्वारा की जाती है।

10. श्री दिगम्बर जैन मंदिर शान्तिनाथ स्वामी (मंदिर दारोगाजी)

हल्दियों के रास्ते में ऊंचा कुआ के समीप यह विशाल जिनालय प्रथम मंजिल पर है। इसका क्षेत्रफल लगभग 11,300 वर्ग फीट तथा नीचे काफी विशाल तलघर है। मंदिरजी के सड़क से 6 प्रवेशद्वार तथा 5 जीने हैं। इसका निर्माण संवत् 1886 से 1888 में दारोगा स्वरूपचन्दजी पाटनी (खिन्दूका) ने कराया जिसकी पुष्टि मंदिरजी के मुख्य प्रवेशद्वार के सामने बने चार सगमरमरी कलापूर्ण स्तम्भो मे से दो पर लगे निम्नलिखित शिलालेख से स्पष्ट होती है :–

"मंदिर ठाकरजी श्री शान्तिनाथ स्वामी को बणाय विराजमान की माह सुदी 5 संवत् 1888 में सेवग दरोगा स्वरूपचन्द खिन्दूका"

मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान शान्तिनाथ की सं० 1641 की मनोज्ञ एव कलापूर्ण है। संगमरमर की वेदी चारों ओर संगमरमर के बारीक कुराई के काम से युक्त एव 25 स्वर्ण कलशों से मडित है। यहाँ 75 प्रतिमाएँ तथा 11 यत्र हैं। मुख्य वेदी के पृष्ठ भाग में 5 अत्यन्त ही कलापूर्ण सगमरमरी वेदियाँ बनी हुई हैं।

मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा यहाँ के क्षेत्रपाल के मस्तक पर जिन प्रतिमा विराजमान है जो एक विशेषता है। मदिरजी के प्रवेश-द्वार पर सम्मेद शिखरजी की रचना

अत्यन्त कलापूर्ण रूप में दर्शित है। विशाल चौक के तीन ओर 2-2 दर के विशाल तिवारे हैं। निज मंदिर के बाहरी एवं भीतरी भाग में श्वेत संगमरमर पर तराशे गये सुन्दर एवं कलापूर्ण विभिन्न प्रकार के बेलबूटे, पक्षी, पशु इत्यादि बने हैं। दाहिने हाथ वाले चैत्यालय की सुन्दर संगमरमरी वेदी के साथ-साथ बाहर एवं भीतर की दीवारों पर बारीक कलम के विभिन्न रंगों से युक्त भित्ति चित्र हैं जिनमें पाडुक शिला, पंचकल्याणक तीर्थक्षेत्र, जयपुर नगर, हाथी-घोड़े विभिन्न प्रकार के बेलबूटे बने हैं तथा रंग पुराने हो जाने पर भी नवीनता का आभास कराते हैं। निज मंदिर के प्रवेश हेतु बने सुन्दर कलात्मक द्वारों पर बारह भावना के पद लिखे होने के साथ-साथ मंदिरजी के चौक, तिवारों एवं बाहरी दीवारों पर अनेकों नीति एवं व्यवहार के उपदेशात्मक दोहे विभिन्न रंगों में लिखे हैं।

मन्दिरजी की विशालता के कारण कन्या पाठशाला में विद्याध्ययन करने वाली बालिकाओं ने अनेकों बार जैन नाटकों का मंचन यहां किया तथा परम श्रद्धेय आचार्य श्री विद्यानन्दजी, ब्रह्मचारी मूलशंकरजी, चुन्नीभाईजी देसाई तथा अनेकों त्यागी, व्रतियों, विद्वानों ने अपने-अपने सार-गर्भित प्रवचनों के माध्यम से श्रोताओं के मन को झकझोरने के साथ-साथ उनमें त्याग व ध्यान मनन की लौ पैदा कर भक्ति-मार्ग पर अग्रसर होने का मार्ग प्रशस्त कराया है।

मंदिर के तहत दो मकान हैं जिसमें से एक पर धर्मशाला प्रस्तावित है तथा कुछ दुकानें हैं। साथ ही बगराणा ग्राम के जिनमंदिरजी का प्रबन्ध भी इसी मंदिरजी के माध्यम से हो रहा है। बापू नगर जैन मंदिर में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा भी मन्दिर स्थापना के समय इस ही मंदिरजी से गई हुई है। विशाल शामियाना (तम्बू के आकार का) पद्मपुरा अतिशय क्षेत्र के प्रथम पंचकल्याणक के समय वहां भेंट किया गया था।

मन्दिर का प्रबन्ध पंजीकृत विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होता है। वर्तमान में अध्यक्ष श्री जोरावमलजी पाटनी एवं मंत्री श्री दिलीपचन्दजी पाटनी हैं।

11. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर बास गोधान

यह मंदिर हल्दियों का रास्ता, गोधों का चौक में स्थित है। इसके संस्थापक स्व० श्री टोडरमलजी पुत्र श्री किशनरामजी गोधा थे। मन्दिरजी की स्थापना माघ सुदी पंचमी (बसंत पंचमी) सं० 1787 के आस-पास हुई थी। स्व० टोडरमलजी (संस्थापक, मन्दिरजी) ने अपने मकान में से कुछ जमीन देकर उक्त मन्दिर बनवाया था। उन्होंने अपने गोधा भाइयों के परिवारों का सहयोग मन्दिरजी की सेवा-पूजा में लिया, तभी से यह मन्दिर बास गोधान के नाम से जाना जाता है। टोडरमलजी के वंशजों में वर्तमान में प्रेमचन्द गोधा (लवाणवाले) हैं।

मन्दिरजी में मूलनायक 1008 श्री पार्श्वनाथ स्वामी की प्राचीन व मनोज्ञ प्रतिमा है, जिसकी प्रतिष्ठा संवत् 1619 की वैशाख सुदी 15 को भट्टारक श्री सुमतिकीर्तिजी

मन्दिर मे मूलनायक प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ भगवान की है जो संवत् 1678 की प्रतिष्ठित है। यहाँ धातु तथा पाषाण की कुल 62 प्रतिमाएँ एवं 11 यंत्र है। इसके अतिरिक्त पाषाण में शिखरजी के भाव उकेरे हुए है तथा क्षेत्रपाल पद्मावती की प्रतिमाएँ भी हैं। यह मन्दिर बीस पथ आम्नाय का है। मन्दिर का क्षेत्रफल 1600 वर्ग फीट है तथा इसके नीचे नोहरा और दुकानें है।

मन्दिर की प्रबन्ध व्यवस्था विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा की जाती है। वर्त्तमान मे श्री देवेन्द्र मोहनजी कासलीवाल अध्यक्ष एवं श्री सुबोधकुमारजी पांड्या मत्री हैं।

9. श्री दिगम्बर जैन मंदिर लाडीजी

यह मंदिर हल्दियों के रास्ते मे ऊचा कुआ के आगे जैन मन्दिर दारोगाजी के पास स्थित है। यह एक छोटा-सा मदिर ऊपर सीढियां चढकर है। यह मदिर कब और किसने बनाया इसका कोई प्रामाणिक उल्लेख नही है। इतना अवश्य है कि यह संवत् 1892 के पूर्व का है।

यह मदिर बीस पथ आम्नाय का है तथा इस में मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है। इस मदिर मे 22 मूर्तियां तथा 7 यत्र हैं। यहाँ की पंचायत ने इस मदिर की चल-अचल संपत्ति को सवत् 2006 मे मदिरजी ठोलियान के सुपुर्द कर दिया तभी से इसकी व्यवस्था ठोलियों के मदिर की प्रबन्ध समिति द्वारा की जाती है।

10. श्री दिगम्बर जैन मंदिर शान्तिनाथ स्वामी (मंदिर दारोगाजी)

हल्दियों के रास्ते में ऊंचा कुआ के समीप यह विशाल जिनालय प्रथम मंजिल पर है। इसका क्षेत्रफल लगभग 11,300 वर्ग फीट तथा नीचे काफी विशाल तलघर है। मंदिरजी के सड़क से 6 प्रवेशद्वार तथा 5 जीने हैं। इसका निर्माण संवत् 1886 से 1888 में दारोगा स्वरूपचन्दजी पाटनी (खिन्दूका) ने कराया जिसकी पुष्टि मंदिरजी के मुख्य प्रवेशद्वार के सामने बने चार संगमरमरी कलापूर्ण स्तम्भो मे से दो पर लगे निम्नलिखित शिलालेख से स्पष्ट होती है :—

"मंदिर ठाकरजी श्री शान्तिनाथ स्वामी को बणाय विराजमान की माह सुदी 5 सवत् 1888 मे सेवग दरोगा स्वरूपचन्द खिन्दूका"

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान शान्तिनाथ की सं० 1641 की मनोज्ञ एवं कलापूर्ण है। संगमरमर की वेदी चारों ओर सगमरमर के बारीक कुराई के काम से युक्त एवं 25 स्वर्ण कलशों से मडित है। यहाँ 75 प्रतिमाएँ तथा 11 यन्त्र हैं। मुख्य वेदी के पृष्ठ भाग में 5 अत्यन्त ही कलापूर्ण सगमरमरी वेदियाँ बनी हुई हैं।

मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा यहाँ के क्षेत्रपाल के मस्तक पर जिन प्रतिमा विराजमान है जो एक विशेषता है। मदिरजी के प्रवेश-द्वार पर सम्मेद शिखरजी की रचना

अत्यन्त कलापूर्ण रूप से दर्शित है। विशाल चौक के तीन ओर 2-2 दर के विशाल तिवारे हैं। निज मदिर के बाहरी एवं भीतरी भाग मे श्वेत संगमरमर पर तराशे गये सुन्दर एव कलापूर्ण विभिन्न प्रकार के बेलबूटे, पक्षी, पशु इन्द्रादि बने है। दाहिने हाथ वाले चैत्यालय की सुन्दर संगमरमरी वेदी के साथ-साथ बाहर एव भीतर की दीवारो पर बारीक कलम के विभिन्न रगों से युक्त भित्ति चित्र है जिनमें पाडुक शिला, पंचकल्याणक तीर्थक्षेत्र, जयपुर नगर, हाथी-घोड़े विभिन्न प्रकार के बेलबूटे बने हैं तथा रंग पुराने हो जाने पर भी नवीनता का आभास कराते हैं। निज मदिर के प्रवेश हेतु बने सुन्दर कलात्मक द्वारो पर बारह भावना के पद लिखे होने के साथ-साथ मंदिरजी के चौक, तिवारों एव बाहरी दीवारों पर अनेकों नीति एवं व्यवहार के उपदेशात्मक दोहे विभिन्न रगो में लिखे है।

मन्दिरजी की विशालता के कारण कन्या पाठशाला में विद्याध्ययन करने वाली बालिकाओं ने अनेकों बार जैन नाटको का मचन यहाँ किया तथा परम श्रद्धेय आचार्य श्री विद्यानन्दजी, ब्रह्मचारी मूलशंकरजी, चुन्नीभाईजी देसाई तथा अनेकों त्यागी, व्रतियों, विद्वानों ने अपने-अपने सार-गर्भित प्रवचनों के माध्यम से श्रोताओं के मन को झकझोरने के साथ-साथ उनमें त्याग व ध्यान मनन की लौ पैदा कर भक्ति-मार्ग पर अग्रसर होने का मार्ग प्रशस्त कराया है।

मंदिर के तहत दो मकान हैं जिसमें से एक पर धर्मशाला प्रस्तावित है तथा कुछ दुकानें हैं। साथ ही बगराणा ग्राम के जिनमंदिरजी का प्रबन्ध भी इसी मदिरजी के माध्यम से हो रहा है। बापू नगर जैन मंदिर में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा भी मन्दिर स्थापना के समय इस ही मंदिरजी से गई हुई है। विशाल शामियाना (तम्बू के आकार का) पद्मपुरा अतिशय क्षेत्र के प्रथम पंचकल्याणक के समय वहाँ भेंट किया गया था।

मन्दिर का प्रबन्ध पंजीकृत विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होता है। वर्त्तमान में अध्यक्ष श्री जोरावमलजी पाटनी एवं मत्री श्री दिलीपचन्दजी पाटनी है।

11. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर बास गोधान

यह मदिर हल्दियों का रास्ता, गोधो का चौक में स्थित है। इसके संस्थापक स्व० श्री टोडरमलजी पुत्र श्री किशनरामजी गोधा थे। मन्दिरजी की स्थापना माघ सुदी पचमी (बसंत पचमी) सं० 1787 के आस-पास हुई थी। स्व० टोडरमलजी (संस्थापक, मन्दिरजी) ने अपने मकान में से कुछ जमीन देकर उक्त मन्दिर बनवाया था। उन्होंने अपने गोधा भाइयों के परिवारों का सहयोग मन्दिरजी की सेवा-पूजा मे लिया, तभी से यह मन्दिर बास गोधान के नाम से जाना जाता है। टोडरमलजी के वंशजो में वर्त्तमान मे प्रेमचन्द गोधा (लवाणवाले) हैं।

मन्दिरजी में मूलनायक 1008 श्री पार्श्वनाथ स्वामी की प्राचीन व मनोज्ञ प्रतिमा है, जिसकी प्रतिष्ठा संवत् 1619 की वैशाख सुदी 15 को भट्टारक श्री सुमतिकीर्तिजी

मन्दिर मे मूलनायक प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ भगवान की है जो सवत् 1678 की प्रतिष्ठित है। यहाँ धातु तथा पाषाण की कुल 62 प्रतिमाएँ एवं 11 यंत्र है। इसके अतिरिक्त पाषाण मे शिखरजी के भाव उकेरे हुए है तथा क्षेत्रपाल पद्मावती की प्रतिमाएँ भी है। यह मन्दिर बीस पंथ आम्नाय का है। मन्दिर का क्षेत्रफल 1600 वर्ग फीट है तथा इसके नीचे नोहरा और दुकाने है।

मन्दिर की प्रबन्ध व्यवस्था विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा की जाती है। वर्त्तमान मे श्री देवेन्द्र मोहनजी कासलीवाल अध्यक्ष एव श्री सुबोधकुमारजी पाड्या मंत्री हैं।

9. श्री दिगम्बर जैन मंदिर लाडीजी

यह मंदिर हल्दियो के रास्ते मे ऊंचा कुआ के आगे जैन मन्दिर दारोगाजी के पास स्थित है। यह एक छोटा-सा मंदिर ऊपर सीढिया चढ़कर है। यह मदिर कब और किसने बनाया इसका कोई प्रामाणिक उल्लेख नही है। इतना अवश्य है कि यह संवत् 1892 के पूर्व का है।

यह मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा इस मे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है। इस मंदिर मे 22 मूर्तियाँ तथा 7 यत्र है। यहाँ की पचायत ने इस मंदिर की चल-अचल सपत्ति को संवत् 2006 में मदिरजी ठोलियान के सुपुर्द कर दिया तभी से इसकी व्यवस्था ठोलियो के मंदिर की प्रबन्ध समिति द्वारा की जाती है।

10. श्री दिगम्बर जैन मंदिर शान्तिनाथ स्वामी (मंदिर दारोगाजी)

हल्दियों के रास्ते में ऊचा कुआ के समीप यह विशाल जिनालय प्रथम मंजिल पर है। इसका क्षेत्रफल लगभग 11,300 वर्ग फीट तथा नीचे काफी विशाल तलघर है। मंदिरजी के सड़क से 6 प्रवेशद्वार तथा 5 जीने हैं। इसका निर्माण संवत् 1886 से 1888 में दारोगा स्वरूपचन्दजी पाटनी (खिन्दूका) ने कराया जिसकी पुष्टि मंदिरजी के मुख्य प्रवेशद्वार के सामने बने चार संगमरमरी कलापूर्ण स्तम्भों मे से दो पर लगे निम्नलिखित शिलालेख से स्पष्ट होती है :–

"मंदिर ठाकरजी श्री शान्तिनाथ स्वामी को बणाय विराजमान की माह सुदी 5 संवत् 1888 में सेवग दरोगा स्वरूपचन्द खिन्दूका"

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान शान्तिनाथ की सं० 1641 की मनोज्ञ एवं कलापूर्ण है। संगमरमर की वेदी चारों ओर संगमरमर के बारीक कुराई के काम से युक्त एव 25 स्वर्ण कलशों से मडित है। यहाँ 75 प्रतिमाएँ तथा 11 यत्र है। मुख्य वेदी के पृष्ठ भाग मे 5 अत्यन्त ही कलापूर्ण सगमरमरी वेदियाँ बनी हुई हैं।

मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा यहाँ के क्षेत्रपाल के मस्तक पर जिन प्रतिमा विराजमान है जो एक विशेषता है। मदिरजी के प्रवेश-द्वार पर सम्मेद शिखरजी की रचना

अत्यन्त कलापूर्ण रूप से दर्शित है। विशाल चौक के तीन ओर 2-2 दर के विशाल तिवारे है। निज मंदिर के बाहरी एवं भीतरी भाग मे श्वेत संगमरमर पर तराशे गये सुन्दर एवं कलापूर्ण विभिन्न प्रकार के बेलबूटे, पक्षी, पशु इन्द्रादि बने है। दाहिने हाथ वाले चैत्यालय की सुन्दर संगमरमरी वेदी के साथ-साथ बाहर एवं भीतर की दीवारों पर बारीक कलम के विभिन्न रंगों से युक्त भित्ति चित्र हैं जिनमें पांडुक शिला, पचकल्याणक तीर्थक्षेत्र, जयपुर नगर, हाथी-घोड़े विभिन्न प्रकार के बेलबूटे बने हैं तथा रंग पुराने हो जाने पर भी नवीनता का आभास कराते है। निज मंदिर के प्रवेश हेतु बने सुन्दर कलात्मक द्वारो पर बारह भावना के पद लिखे होने के साथ-साथ मंदिरजी के चौक, तिवारों एवं बाहरी दीवारो पर अनेकों नीति एव व्यवहार के उपदेशात्मक दोहे विभिन्न रंगो मे लिखे हैं।

मन्दिरजी की विशालता के कारण कन्या पाठशाला मे विद्याध्ययन करने वाली बालिकाओं ने अनेको बार जैन नाटको का मचन यहाँ किया तथा परम श्रद्धेय आचार्य श्री विद्यानन्दजी, ब्रह्मचारी मूलशंकरजी, चुन्नीभाईजी देसाई तथा अनेकों त्यागी, व्रतियों, विद्वानों ने अपने-अपने सार-गर्भित प्रवचनों के माध्यम से श्रोताओ के मन को झकझोरने के साथ-साथ उनमें त्याग व ध्यान मनन की लौ पैदा कर भक्ति-मार्ग पर अग्रसर होने का मार्ग प्रशस्त कराया है।

मंदिर के तहत दो मकान हैं जिसमें से एक पर धर्मशाला प्रस्तावित है तथा कुछ दुकानें हैं। साथ ही बगराणा ग्राम के जिनमंदिरजी का प्रबन्ध भी इसी मंदिरजी के माध्यम से हो रहा है। बापू नगर जैन मंदिर में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा भी मन्दिर स्थापना के समय इस ही मंदिरजी से गई हुई है। विशाल शामियाना (तम्बू के आकार का) पद्मपुरा अतिशय क्षेत्र के प्रथम पचकल्याणक के समय वहाँ भेंट किया गया था।

मन्दिर का प्रबन्ध पंजीकृत विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होता है। वर्त्तमान में अध्यक्ष श्री जोरावमलजी पाटनी एवं मंत्री श्री दिलीपचन्दजी पाटनी है।

11. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर बास गोधान

यह मंदिर हल्दियों का रास्ता, गोधो का चौक में स्थित है। इसके संस्थापक स्व० श्री टोडरमलजी पुत्र श्री किशनरामजी गोधा थे। मन्दिरजी की स्थापना माघ सुदी पचमी (बसंत पचमी) सं० 1787 के आस-पास हुई थी। स्व० टोडरमलजी (संस्थापक, मन्दिरजी) ने अपने मकान में से कुछ जमीन देकर उक्त मन्दिर बनवाया था। उन्होने अपने गोधा भाइयों के परिवारों का सहयोग मन्दिरजी की सेवा-पूजा में लिया, तभी से यह मन्दिर बास गोधान के नाम से जाना जाता है। टोडरमलजी के वंशजों मे वर्त्तमान मे प्रेमचन्द गोधा (लवाणवाले) हैं।

मन्दिरजी में मूलनायक 1008 श्री पार्श्वनाथ स्वामी की प्राचीन व मनोज्ञ प्रतिमा है, जिसकी प्रतिष्ठा संवत् 1619 की वैशाख सुदी 15 को भट्टारक श्री सुमतिकीर्तिजी

द्वारा की गई थी। एक मूर्ति भगवान पार्श्वनाथ स्वामी की वैशाख सुदी 2 की प्रतिष्ठित है जिस पर सं० 15 अंकित होना बताया जाता है।

मन्दिरजी में कुल 74 प्रतिमाएँ एवं 33 यंत्र है। बीस पंथ आम्नाय से पूजा होती है। इसका प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है। वर्त्तमान में श्री देवेन्द्रकुमारजी गोधा अध्यक्ष एवं श्री प्रेमचन्दजी लवाणवाले मंत्री है।

12. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर ईश्वरलालजी गोधा

यह मन्दिर हल्दियों के रास्ते मे ऊंचे कुए के पास स्थित है। यह मन्दिर पहिले चैत्यालयों की गणना मे ही था किन्तु अब ऊँचा शिखर बन जाने के कारण इसे मन्दिर माना जाने लगा है। यह जिनालय स्व० ईश्वरलालजी गोधा के निजी मकान मे ही बनवाया हुआ है। उन्होने कब बनवाया यह निश्चित तिथि ज्ञात नही है। सं० 2002 में श्री जोखीराम बैजनाथ सरावगी कलकत्ता वालो ने इस पर शिखर बनवाया था।

इस मन्दिर मे 72 प्रतिमाएँ तथा 18 यंत्र है। मूल नायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है। धातु की 5 मेरु भी है। सभी प्रतिमाएँ एक ही वेदी में है। मन्दिर तेरहपंथ आम्नाय का है। वर्त्तमान में इसका प्रबन्ध श्री प्रदीपकुमारजी गोधा देखते है।

13. दि० जैन मंदिर श्री चन्द्रप्रभ जिनालय पं० लूणकरणजी

यह मंदिर ठाकुर पचेवर के रास्ते मे स्थित है। इसका निर्माण महाराजा सवाई जयसिंह के शासन काल में दीवान केशवदास के पुत्र दीवान ताराचन्द बिलाला ने सं० 1773 से 1790 के बीच करवाया। दीवान ताराचद की वंशावली उपलब्ध नही है किन्तु मंदिर की संवत् 1829 की बही में यह उल्लेख अवश्य मिलता है – "दसकत ताराचद बिलाला जामण, परण, मरण त्यौहार देहरे करणो"। इनका जन्म सं० 1765 मे हुआ था। मन्दिर मे पं० लूणकरणजी कब और कहाँ से आये इसका कोई उल्लेख नही मिलता किंतु सचित्र ग्रंथ यशोधर चरित्र की सं० 1788 की प्रति से ज्ञात होता है कि थानसिह के पुत्र रामचंद ने इस ग्रंथ की प्रति पं० लूणकरणजी को भेट की। इस ग्रंथ में पं० लूणकरण, उनके गुरु खीवसी तथा रामचंद का चित्र भी है। पं० खीवसी भ० सुरेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य एवं भ० देवेन्द्र कीर्ति के शिष्य थे।

पंडित लूणकरण अपने समय के संस्कृत के प्रकाड विद्वान्, यंत्र, मंत्र, तंत्र, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि के महान् ज्ञाता रहे है तथा इनके शिष्य पं० सरूपचंद, ऋषभचद, सदासुख आदि भी यंत्र-मंत्र के पूर्णतया जानकार थे तथा ग्रंथ भी लिखा करते थे। यह राजकीय सम्मानित पंडित थे। राज्य से सवाई माधोपुर व खंडार में जमीन ठाकुरजी की सेवा-पूजा हेतु जागीर मे दी गई थी। साभर से प्रतिवर्ष 500 मण नमक आता था। चबूतरा राहदारी, टकसाल मे बनने वाले रुपयो व म्होरो की लागबाग आया करती थी, बच्चो को रहन रखकर या खरीदकर चेला बनाते थे। गृहस्थियो के घर भी भोजन करते थे। पं० लूणकरणजी का स्वर्गवास आश्विन शुक्ला 1 संवत् 1855 को हुआ। पंडितों के

स्वर्गवास पर अन्य पडितों के यहाँ से कडी खीचड़ी आती थी। टीका होता था। इनकी शिष्य परंपरा सवत् 1934 तक रही। इसके वाद किसी भी पडित की स्थापना नही हुई।

इस जिनालय मे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की श्वेतपाषाण की सवत् 1545 की प्रतिष्ठित है जो अति मनोज्ञ एवं आकर्षक है। यहाँ 175 प्रतिमाएँ तथा 70 यंत्र हैं। देवियों में सबसे प्राचीन प्रतिमा अम्बिका माता की संवत् 1451 की प्रतिष्ठित है। ज्वालामालिनी व पद्मावती देवी तथा सर्वांग यक्ष की मनोज्ञ मूर्तियाँ है। तीर्थंकर प्रतिमाओं में सबसे प्राचीन धातुकी चौबीसी है जो संवत् 1443 मे वैशाख सुदी 12 की प्रतिष्ठित है। मन्दिरजी में विराजमान पद्मावती, ज्वालामालनी तथा अम्बिका देवी एव 3 क्षेत्रपालो की लोगो मे अधिक मान्यता है। प्रत्येक शुक्रवार को दर्शनार्थियों की भीड़ रहती है। चांदी का सर्प-सर्पिणी का जोडा भी है। मत्र, यंत्र साधना स्थल होने के कारण मंदिर मे 1465 खानों का विजय यत्र व अनेक प्रकार के और भी दुर्लभ यत्र हैं।

यहाँ का शास्त्र भण्डार विशाल है जो सचित्र ग्रंथ व अनेक प्रकार की पूजाओ के मण्डल चित्र, तथा रावण, गणेशजी, हनुमानजी, त्रिपुर भैरवी देवी, सूर्य प्रताप यंत्र, मृत्युजय यत्र, भट्टारक पट्टावली की प्राचीन प्रति व गुटकों के संग्रह के लिये प्रसिद्ध है। भण्डार मे लगभग 850 हस्तलिखित ग्रंथ एवं 250 गुटके है जिनकी सूची जैन ग्रंथ भण्डारों की सूची भाग 3 में प्रकाशित हो चुकी है। सचित्र यशोधर चरित्र यहाँ का मुख्य ग्रंथ है जिसको दोहरे कांच के फ्रेम में मंढवा कर शीशम की लकड़ी में दो स्टेण्डों मे पच्ची कराकर सुरक्षित करा दिया है। भैरव, पद्मावती कल्प की सचित्र प्रति भी है जो दुहरे काच के फ्रेम में जड़वा ली गई है।

पुराने रिकार्ड की दृष्टि से यहाँ का भण्डार महत्त्वपूर्ण है। पुरानी बहियों में पंडितों को गृहस्थों से तथा मन्दिर में विधान पूजा आदि कराने से आनेवाली भेंट, तथा पहरावणी व यहाँ से अन्य पंडितों को दिये जाने वाली भेंट आदि का इन्द्राज है। इन्ही बहियों में विभिन्न मन्दिरों का शिलान्यास, चंवरी में मूलनायक प्रतिमा वेदी प्रतिष्ठा कराकर विराजमान कराना, कलशारोहण, गृहस्थियों को यंत्र-मत्र तथा औषधिया बताना, ग्रंथों का लिखाना, घरों पर शास्त्र पढना तथा दीवान भट्टारक आदि की भेंट का भी विवरण उपलब्ध है।

मन्दिर में भाद्रपद्र मास में विधान पूजा, महावीर निर्वाणोत्सव, श्रुतपंचमी महोत्सव, भगवान चन्द्रप्रभ का जन्म निर्वाणोत्सव मनाया जाता है।

गत 20 वर्षों में काफी विकास कार्य पूरे हुए हैं जिनमें कूए का निर्माण तथा जीर्णोद्धार, बिहारी में कमरा, बाहर की दुकानों के बरामदे आदि मुख्य है।

मन्दिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा प्रबन्ध चुनी हुई प्रबन्धकारिणी समिति द्वारा किया जाता है। मन्दिर में नित्य शास्त्र प्रवचन नही होता किन्तु नित्य रात्रि को 9 वजे तक शास्त्र भण्डार की देख-रेख तथा स्वाध्याय हेतु पुस्तकों का आदान-प्रदान होता है। वर्त्तमान में श्री राजकुमारजी मुंशीमहल वाले अध्यक्ष एवं श्री मुन्नालालजी बाग़ायत वाले मंत्री हैं।

14. श्री दि. जैन मन्दिर (आदिनाथ स्वामी) बख्शीजी का

यह मन्दिर रामगज बाजार मे बख्शीजी के चौक मे स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण कब और किसने कराया इसका कोई पुख्ता प्रमाण उपलब्ध नही है। स्वरूपचद बिलाला कृत जयपुर की जैन मन्दिर वन्दना मे इसे कृपाराम बख्शी का बताया गया है। यह निश्चित है कि मन्दिर का निर्माण सम्वत् 1892 के पूर्व का है।

मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा आदिनाथ भगवान की है जो काफी प्राचीन है किन्तु उस पर कोई लेख तथा सवत् आदि कुछ भी नही है। इस मन्दिर मे धातु तथा पाषाण की कुल 158 प्रतिमाएँ तथा 22 यंत्र हैं। एक प्रतिमा कमल की पांच पांखुडी मे भी विराजमान हैं।

मन्दिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा पद्मावती देवी एव क्षेत्रपाल की यक्ष की प्रतिमाएँ भी हैं।

यहाँ का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है। मदिर सार्वजनिक प्रन्यास के अन्तर्गत पजीकृत है। मन्दिर के बराबर मकान, दुकान तथा सभा भवन है। मन्दिर के प्रागण मे झाड़शाही एव कलदार चादी के सिक्के भी जड़े है। साधु-साध्वियो के ठहरने का अच्छा स्थान है। उल्लेखनीय है कि यहा आचार्य धर्मसागरजी महाराज ससंघ सन् 1969 ई० मे चातुर्मास कर चुके हैं।

मन्दिर कलापूर्ण है और कितने ही भिति चित्र भी है जिनमे गिरनार तथा सम्मेदशिखरजी का दृश्याकन सुन्दर है मन्दिर दुछता है, दुछते मे भी संसार वृक्ष तथा मुनियों पर उपसर्ग के चित्र हैं। मन्दिर मे एक हाथी व समवसरण भी है जो उत्सव आदि मे काम आता है।

लूणकरणजी के मन्दिर में उपलब्ध पुरानी बहियो मे इस मन्दिर का और पडितों तथा बख्शीजी का काफी सम्पर्क रहा है ऐसा भी उल्लेख मिलता है।

मन्दिर का प्रबध विधानानुसार चुनी हुई प्रबध समिति द्वारा किया जाता है। वर्तमान मे श्री अशोककुमारजी बख्शी अध्यक्ष एव श्री लक्ष्मीनारायणजी बख्शी मत्री हैं।

15. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, मुशरफान

यह मदिर हल्दियों के रास्ते मे मुशरफ कॉलोनी मे स्थित है। इस मदिर का निर्माण मुशरफ एवं बिन्दायक्या परिवार ने कराया। मन्दिर का निर्माण कब हुआ इसका पक्का प्रमाण तो कोई उपलब्ध नही है फिर भी स्वरूप चन्द बिलाला की चैत्य वन्दना के अनुसार यह मन्दिर सवत् 1892 से पूर्व का है।

मन्दिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की श्वेत पाषाण की है। मूल वेदी के अतिरिक्त दो वेदियाँ और है। यहाँ कुल 102 प्रतिमायें तथा 15 यन्त्र है। प्रतिमाएँ अधिकाश संवत् 1826 व 1861 की हैं। सबसे पुरानी प्रतिमा सवत् 149 व 794 की बतलायी जाती है।

यहाँ एक प्रतिमा श्वेत पाषाण की सवत् 1727 की प्रतिष्ठित 1008 फनवाले पार्श्वनाथ की है जो अत्यन्त मनोज्ञ है। यह मूर्ति 109 8 से.मी. × 71 से.मी. अवगाहना की पद्मासन मुद्रा में है। पार्श्वनाथ भगवान के सिर पर 1008 सर्प-फनों की आकृति 17 से.मी. मोटाई व 61 से.मी. चौड़ाई के आकार पर बनी हुई है। आचार्य श्री विमलसागरजी ने अपने जयपुर प्रवास के समय इस मूर्ति की मनोहारी छवि देखकर अत्यन्त प्रभावित हुए और उन्होंने इसे दुर्लभता से मिलने वाली प्रतिमाओं में से एक वताया।

मन्दिर मे मुख्य वेदी के पीछे दीवार पर श्वेत पाषाण मे पचकल्याणक व सम्मेद शिखर के अश तराश कर अकित है। मन्दिर की मुख्य वेदी के शिखर पर स्वर्ण का नक्काशीदार काम किया हुआ है। 1008 सर्पफणों वाली पार्श्वनाथ जिन चैत्यालय की दीवारो पर बहुत ही सुन्दर स्वर्ण चित्रकारी है। मन्दिर में अन्दर व बाहर फर्श पर श्वेत पाषाण प्रयोग मे लिया गया है। सीढ़ियाँ भी श्वेत पाषाण की है जिनमे सुन्दर लहरियादार धारियाँ हैं।

मन्दिर मे पालकी, हाथी तथा समवसरण है जिन पर सोने का काम चित्रित है।

शास्त्र भण्डार में करीब 150 ग्रन्थों का संग्रह है।

मन्दिर तेरह पंथ आम्नाय का है। मन्दिर में पाणिग्रहण मे उपयोग आने वाला सामान तथा सुन्दर वेदी उपलब्ध है। मन्दिर का क्षेत्रफल 4900 वर्ग फीट है तथा मंदिर के पास तीन भवन व दुकानें हैं।

यहाँ का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति, जिसका नाम "श्री दिगम्बर जैन पचायत मन्दिरजी मुशरफान है", द्वारा होता है। संस्था सार्वजनिक प्रन्यास के अन्तर्गत भी पंजीकृत है।

वर्तमान मे मन्दिर के अध्यक्ष श्री कमलचद मुशरफ एवं मंत्री श्री राजेन्द्र कुमार पाटनी हैं।

16. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बैदान

यह मन्दिर मनीरामजी की कोठी का रास्ता, रामगज बाजार में स्थित है। इसे कठमाणा निवासी खेमकरण के पुत्र कनीराम ने, जो सम्वत् 1807 से 1820 तक दीवान रहे, सम्वत् 1807 में बनवाया था। इन्होने कठमाणा मे भी मन्दिर बनवाया था। मंदिर के बराबर जयपुर में आज भी कठमाणा वालों की हवेली है।

मन्दिर मे मूलनायक प्रतिमा महावीर स्वामी की है। यहाँ कुल 95 प्रतिमाएँ और 30 यत्र हैं। यहाँ बड़े आकार के यन्त्र भी है जो अधिकाश ताम्बे के हैं। मन्दिर बीस पंथ आम्नाय का है।

मन्दिर के नीचे हवेली तथा दुकाने है।

मन्दिर का प्रबन्ध श्री सुरेशचन्द बैद कठमाणा वाले करते हैं।

14. श्री दि. जैन मन्दिर (आदिनाथ स्वामी) बख्शीजी का

यह मन्दिर रामगंज बाजार में बख्शीजी के चौक में स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण कब और किसने कराया इसका कोई पुख्ता प्रमाण उपलब्ध नहीं है। स्वरूपचन्द बिलाला कृत जयपुर की जैन मन्दिर वन्दना में इसे कृपाराम बख्शी का बनाया गया है। यह निश्चित है कि मन्दिर का निर्माण सम्वत् 1892 के पूर्व का है।

मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा आदिनाथ भगवान की है जो काफी प्राचीन है किन्तु उस पर कोई लेख तथा संवत् आदि कुछ भी नहीं है। इस मन्दिर में धातु तथा पाषाण की कुल 158 प्रतिमाएँ तथा 22 यंत्र हैं। एक प्रतिमा कमल की पांच पांखुडी में भी विराजमान हैं।

मन्दिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा पद्मावती देवी एव क्षेत्रपाल की यक्ष की प्रतिमाएँ भी है।

यहाँ का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है। मंदिर सार्वजनिक न्यास के अन्तर्गत पंजीकृत है। मन्दिर के बराबर मकान, दुकान तथा सभा भवन है। मन्दिर के आंगण में झाड़शाही एवं कलदार चादी के सिक्के भी जड़े है। साधु-साध्वियों के ठहरने का अच्छा स्थान है। उल्लेखनीय है कि यहां आचार्य धर्मसागरजी महाराज ससंघ सन् 1969 ई० में चातुर्मास कर चुके है।

मन्दिर कलापूर्ण है और कितने ही भिति चित्र भी है जिनमें गिरनार तथा सम्मेदशिखरजी का दृश्यांकन सुन्दर है मन्दिर दुछता है, दुछते में भी संसार वृक्ष तथा मुनियों पर उपसर्ग के चित्र हैं। मन्दिर में एक हाथी व समवसरण भी है जो उत्सव आदि में काम आता है।

लूणकरणजी के मन्दिर में उपलब्ध पुरानी बहियों में इस मन्दिर का और पंडितों तथा बख्शीजी का काफी सम्पर्क रहा है ऐसा भी उल्लेख मिलता है।

मन्दिर का प्रबंध विधानानुसार चुनी हुई प्रबंध समिति द्वारा किया जाता है। वर्तमान में श्री अशोककुमारजी बख्शी अध्यक्ष एवं श्री लक्ष्मीनारायणजी बख्शी मंत्री हैं।

15. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, मुशरफान

यह मंदिर हल्दियों के रास्ते में मुशरफ कॉलोनी में स्थित है। इस मंदिर का निर्माण मुशरफ एवं बिन्दायक्या परिवार ने कराया। मन्दिर का निर्माण कब हुआ इसका पक्का प्रमाण तो कोई उपलब्ध नही है फिर भी स्वरूप चन्द बिलाला की चैत्य वन्दना के अनुसार यह मन्दिर संवत् 1892 से पूर्व का है।

मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की श्वेत पाषाण की है। मूल वेदी के अतिरिक्त दो वेदियाँ और हैं। यहाँ कुल 102 प्रतिमायें तथा 15 यंत्र है। प्रतिमाएँ अधिकांश संवत् 1826 व 1861 की है। सबसे पुरानी प्रतिमा संवत् 149 व 794 की बतलायी जाती है।

यहाँ एक प्रतिमा श्वेत पाषाण की सवत् 1727 की प्रतिष्ठित 1008 फनवाले पार्श्वनाथ की है जो अत्यन्त मनोज्ञ है। यह मूर्ति 109 8 से.मी. × 71 से.मी. अवगाहना की पद्मासन मुद्रा में है। पार्श्वनाथ भगवान के सिर पर 1008 सर्प-फनो की आकृति 17 से.मी. मोटाई व 61 से.मी. चौड़ाई के आकार पर बनी हुई है। आचार्य श्री विमलसागरजी ने अपने जयपुर प्रवास के समय इस मूर्ति की मनोहारी छवि देखकर अत्यन्त प्रभावित हुए और उन्होंने इसे दुर्लभता से मिलने वाली प्रतिमाओ मे से एक बताया।

मन्दिर मे मुख्य वेदी के पीछे दीवार पर श्वेत पाषाण मे पचकल्याणक व सम्मेद शिखर के अंश तराश कर अकित है। मन्दिर की मुख्य वेदी के शिखर पर स्वर्ण का नक्काशीदार काम किया हुआ है। 1008 सर्पफणों वाली पार्श्वनाथ जिन चैत्यालय की दीवारों पर बहुत ही सुन्दर स्वर्ण चित्रकारी है। मन्दिर मे अन्दर व बाहर फर्श पर श्वेत पाषाण प्रयोग मे लिया गया है। सीढ़ियाँ भी श्वेत पाषाण की है जिनमें सुन्दर लहरियादार धारियाँ हैं।

मन्दिर मे पालकी, हाथी तथा समवसरण हैं जिन पर सोने का काम चित्रित है।

शास्त्र भण्डार में करीब 150 ग्रन्थों का संग्रह है।

मन्दिर तेरह पथ आम्नाय का है। मन्दिर में पाणिग्रहण में उपयोग आने वाला सामान तथा सुन्दर वेदी उपलब्ध है। मन्दिर का क्षेत्रफल 4900 वर्ग फीट है तथा मदिर के पास तीन भवन व दुकाने हैं।

यहाँ का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति, जिसका नाम "श्री दिगम्बर जैन पंचायत मन्दिरजी मुशरफान है", द्वारा होता है। संस्था सार्वजनिक प्रन्यास के अन्तर्गत भी पंजीकृत है।

वर्तमान में मन्दिर के अध्यक्ष श्री कमलचंद मुशरफ एवं मत्री श्री राजेन्द्र कुमार पाटनी हैं।

16. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बैदान

यह मन्दिर मनीरामजी की कोठी का रास्ता, रामगंज बाजार में स्थित है। इसे कठमाणा निवासी खेमकरण के पुत्र कनीराम ने, जो सम्वत् 1807 से 1820 तक दीवान रहे, सम्वत् 1807 में बनवाया था। इन्होने कठमाणा मे भी मन्दिर बनवाया था। मंदिर के बराबर जयपुर में आज भी कठमाणा वालों की हवेली है।

मन्दिर मे मूलनायक प्रतिमा महावीर स्वामी की है। यहाँ कुल 95 प्रतिमाएँ और 30 यत्र हैं। यहाँ बड़े आकार के यन्त्र भी हैं जो अधिकांश ताम्बे के है। मन्दिर बीस पंथ आम्नाय का है।

मन्दिर के नीचे हवेली तथा दुकानें है।

मन्दिर का प्रबन्ध श्री सुरेशचन्द बैद कठमाणा वाले करते हैं।

17. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चाकसू

यह मन्दिर चाकसू का चौक, जौहरी बाजार मे स्थित है । इस बीस पथी पंचायती मन्दिर का निर्माण जयपुर बसने के साथ ही सवत् 1782 मे हुआ था । इसे चाकसू से आये राव कृपारामजी ने, जो महाराजा जयसिंह के नवरत्नो मे से एक थे, बनवाया था । राव कृपारामजी की हवेली आमेर रोड पर कच्चे बन्धे के पास है जो रावजी का घेर कहलाता है । वहाँ अब भी दो चैत्यालय है । कहते हैं उन्होने 120 सूर्य मदिर बनवाये थे, गलता की पहाडी पर सूर्य मन्दिर भी उन्ही ने बनवाया था ।

इस मन्दिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्दप्रभ की है । यहाँ 10 वेदियां है जिनमे 195 मूर्तियाँ तथा 15 यत्र है । सबसे प्राचीन प्रतिमा स० 1185 की प्रतिष्ठित है जो भगवान अरहनाथजी की है । यन्त्रों मे एक यंत्र पीतल का गोल 14" के आकार का स० 1783 का बांसखोह ग्राम का प्रतिष्ठित है उसमे प्रतिष्ठा कारक हृदयराम लुहाड़िया के नाम के बाद लिखा है ।

"मंदर चाटसू पंचा को करायो यंत्र सोलहकारण को प्रतिष्ठा कारिता । राजा सवाई जयसिंह विजय राज्ये श्री रस्तु शुभंभूयात् ।"

इससे ज्ञात होता है कि यह मन्दिर सं० 1783 के पूर्व का ही है । यहाँ पद्मावतीजी की मूर्ति तथा धातु के बड़े पंच मेरु भी हैं ।

मन्दिर कलापूर्ण है, चौक में निज मन्दिर के तीनो द्वारों पर मकराने की कुराई का ऐसा सुन्दर काम है जो अन्यत्र नही । यहाँ एक बड़ा सुन्दर रथ भी है जो चारो रथो के मेले सं० 1941 मे निकला था । अब रथ जीर्ण-शीर्ण दशा मे है ।

यहाँ शास्त्र भण्डार भी है जिसमें करीब 250 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं जो सूची कृत है । यहाँ "सम्मेदशिखर महात्म्य" की ऐतिहासिक रचना है जिसमे संघी रायचन्द छाबड़ा (दीवान) का स० 1863 का शिखर यात्रा का वर्णन है । मकराने पर पाचो पाण्डवो के भाव अकित है जो सुरक्षित हैं ।

बीस पंथी पचायती मन्दिर होने के कारण श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी भी इस मन्दिर से काफी जुड़ा हुआ है । महावीर क्षेत्र पर भट्टारकजी की नियुक्ति के सम्बन्ध में जब तक यहाँ से तथा पाटोदी के मन्दिर के पचों की ओर से लिखा नही जाता था, नही होती थी । तत्कालीन जयपुर रियासत द्वारा इन दोनों पचायती मन्दिरो के पचो के कहने पर भट्टारकजी को दुशाला भेंट किया जाता था और उनके द्वारा सुझाये गये व्यक्ति को ही भट्टारक नियुक्त किया जाता था । दोनों मन्दिरों के पचो के कहने पर ही श्री महावीरजी क्षेत्र पर कोर्ट ऑफ वार्ड्स का प्रबन्ध हुआ था तथा हटाया गया और वहाँ का प्रबन्ध जयपुर पंचायत को संभलाया गया ।

मन्दिर का क्षेत्रफल 4000 वर्ग फीट है । इसके नीचे दुकान है ।

मदिर के पास ही मदिर की एक हवेली है जो भट्टारकजी की विहारी के नाम से जानी जाती है। बिहारी का प्रबन्ध आजकल महावीर क्षेत्र के अन्तर्गत है।

पाणिग्रहण संस्कार हेतु आवश्यक सामान के 2 सेट उपलब्ध है।

यहाँ की पुरानी बहियां आदि के अनुसार सागानेर का सघीजी का मदिर भी इसी मन्दिर के अन्तर्गत था। वहाँ के आय एवं व्यय का इन्द्राज यहाँ की वहियो में मिलता है। मेले तथा अन्य अवसरों पर सामग्री आदि का खर्च यहाँ से होता था तथा आय भी यहाँ जमा होती थी।

यहाँ का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होता है। संस्था सार्वजनिक प्रन्यास के अन्तर्गत पजीकृत है। वर्त्तमान में श्री केवलचन्द ठोलिया अध्यक्ष एव श्री नाथूलाल गोदीका मन्त्री हैं।

18. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बूचरों (लुहाड़ियों) का

यह मन्दिर जौहरी बाजार, चाकसू का चौक, जयपुर मे स्थित है। इसे कव और किसने बनवाया इसका कोई प्रमाण उपलब्ध नही है। बूचरों (लुहाड़ियों) का होने से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मन्दिर के आस-पास रहने वाले लुहाड़िया परिवार वालों ने बनवाया होगा।

अनुमान है कि चाकसू के मन्दिर के साथ ही स० 1784 के आस-पास इसका निर्माण हुआ है।

इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की सवत् 1658 की प्रतिष्ठित है। यहाँ 24 तीर्थंकरो की 24 प्रतिमाएँ फेरी में विराजमान हैं। यहाँ 110 प्रतिमाएँ एवं 22 यंत्र हैं। एक श्वेत पाषाण की प्रतिमा पर सं० 117 अंकित बताया जाता है। पश्चिम की ओर पूर्वाभिमुखी निज वेदी है जो सुन्दर है। तिबारे मे श्रीजी विराजमान है। यहाँ धरणेन्द्र की धातु की खड्गासन की प्रतिमा है तथा पद्मावती एव क्षेत्रपाल की भी प्रतिमाएँ हैं।

यहाँ के शास्त्र भण्डार मे 40-50 ग्रंथ होंगे। मन्दिर कलापूर्ण है। मन्दिर में दक्षिण की ओर दीवार पर मकराने के स्वर्णजड़ित सुन्दर अनेक भाव बने है, जिनमें सम्मेद शिखर, गिरनार, गंध कुटी पुरुषाकार तीन लोक चित्र प्रमुख हैं। वे सभी कांच मे मढे हुए हैं।

मन्दिर बीस पथ आम्नाय का है।

यहाँ का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होता है। मत्री श्री राजमलजी बूचरा है।

19. श्री दिगम्बर जैन मंदिर जीऊबाई

यह मन्दिर मोतीसिंह भोमिया के रास्ते मे शिवजीराम भवन के सामने स्थित है।

इस मन्दिर की निर्माणकर्त्री जीऊबाई कौन थी, कहाँ की थी और उन्होने इस मन्दिर का निर्माण कब कराया इसका कोई प्रमाणिक उल्लेख नही मिलता। इतना अवश्य है कि इसका निर्माण सवत् 1892 के पूर्व हो चुका था।

इसमे मूलनायक प्रतिमा वासुपूज्य भगवान की है तथा यहाँ कुल 24 प्रतिमाएं एव 10 यत्र है। मन्दिर की वेदी कला पूर्ण है एवं एक अत्यन्त आकर्षक काच की जड़ी हुई है।

मदिर का क्षेत्रफल 2500 वर्ग फीट है। मन्दिर के नीचे दूकान और बराबर मे हवेली भी है। यहाँ करीब 30 हस्तलिखित ग्रथ है।

यह मन्दिर तेरहपंथ आम्नाय का है तथा विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा यहाँ की व्यवस्था की जाती है। वर्तमान मे डा. गोपीचन्दजी पाटनी अध्यक्ष एवं श्री नानूलालजी गोधा मंत्री हैं।

20. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर भूराजी का

यह मन्दिर मोतीसिंह भोमिया के रास्ते मे चौवीस महाराज के मन्दिर के पास स्थित है।

इस मन्दिर के निर्माणकर्त्ता श्री भूराजी कौन और कहाँ के थे कोई जानकारी नही है। स्वरूपचद बिलाला की मन्दिर सूची के अनुसार इसका निर्माण सं० 1892 के पूर्व हो गया था।

इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो स० 1861 की प्रतिष्ठित है। इसमे कुल 28 प्रतिमाएँ एव 2 यत्र हैं।

मदिर का क्षेत्रफल करीब 600 वर्ग फीट है तथा इसके नीचे दूकानें हैं।

यह मन्दिर तेरहपथ आम्नाय का है। यहाँ के शास्त्र भण्डार मे करीब 50 ग्रंथ है। वर्त्तमान मे यहां का प्रबध श्री कपूरचन्दजी पापड़ीवाल करते हैं।

21. श्री दिगम्बर जैन मंदिर चौबीस महाराज (लाला अमीचंद टोंग्या)

यह मन्दिर मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, जौहरी बाजार मे स्थित है लाला अमीचद टोग्या दिल्ली वाले ने बनवाया था। इसका निर्माण स स० 1883 तक हुआ। सवत् 1883 मे इसमे प्रतिमाएँ विराजमान हुईं। ड. प्रतिमा नेमिनाथ भगवान की है। मन्दिर निर्माणकर्त्ता के सम्बन्ध मे म शिलालेख है :—

"श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चौबीस महाराज का लाला अमीचद टोंग्या ने बनवाया सवत् 1883। सवत् 1883 माह सुदी 5 सेवक अमीचन्दजी टोंग्या वासी दिल्ली।"

इस मन्दिर मे कुल 102 प्रतिमाएँ हैं जिनमे अधिकतर पाषाण की है जो सभी स० 1883 की प्रतिष्ठित हैं। संवत् 1883 माह सुदी 5 को वाडी ग्राम मे प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ था जिसमे सैकडों की सख्या मे विशाल प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा हुई थी। यह प्रतिष्ठा महोत्सव लाला अमीचद टोंग्या दिल्ली निवासी ने ही करवाया था। लाला अमीचद टोंग्या दिल्ली निवासी ने जयपुर मे मन्दिर बनवाया और प्रतिष्ठा वाडी ग्राम (धौलपुर) में करवाई। इसका कारण अज्ञात है। सवत् 1883 की यह प्रतिष्ठा ग्वालियर के भट्टारक महेन्द्र भूषण के उपदेश से लाला अमीचदजी ने करवायी थी। इसका विस्तृत लेख जयपुर के दीवान अमरचदजी के मन्दिर मे विराजमान चन्द्रप्रभ की विशाल प्रतिमा पर निम्न प्रकार है :-

"सवत् 1883 माघ शुक्ला पचमी 5 गुरौ मूल सघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुदाचार्यान्वये भट्टारक जिनेन्द्र भूषण देवा पट्ट-ग्वालियर का भट्टारक महेन्द्र भूषणस्योपदेशात् दिल्ली का वासी खण्डेलवाल श्रावक गोत्र टोंग्या बूलचन्दस्य पुत्र संगही अमीचद्रेन तस्य पुत्राश्चत्वार चुन्नीलाल, दिलवालीसिंघ जवाहरमल मन्नालाल पौत्राश्च सदासुख नेमीदास शिरोमणिदास मनोहरदास एते सह बाडी नगरे प्रतिष्ठा कारिता जयपुर का वासी दीवान अमरचन्द्र नित्य प्रणमति श्रीरस्तु शुभमस्तु।"

उक्त लेख से पता चलता है कि लाला अमीचन्द्र के पिता का नाम श्री बूलचंद था। अमीचद के 4 पुत्र थे— चुन्नीलाल, दिलवालीसिह, जवाहरमल एवं मन्नालाल तथा चार ही पौत्र थे, जिनके नाम सदासुख, नेमीदास, शिरोमणिदास एव मनोहरदास थे। इन सभी के सहयोग से बाडी नगर मे प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ था।

इस मन्दिर में नीचे तलघर है जिसमें श्वेत पाषाण की एक ही आकार की विशाल 24 तीर्थंकरों की 24 प्रतिमाएँ हैं। इसीकारण यह मन्दिर चौबीस महाराज के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। इस चौबीसी के रास्ते चलते लोग दर्शन करते है और श्रद्धा से मस्तक झुकाते हैं। बाहर से आये हुये यात्रियों एव दर्शनार्थियों के लिये यह चौबीसी आकर्षण का केन्द्र है। यह मन्दिर जयपुर के दर्शनीय मदिरों में से एक है। (पद्मावती देवी की पाषाण की मूर्ति तथा एक बाहुबलि भगवान की मनोज्ञ प्रतिमा भी है।)

इस मन्दिर का क्षेत्रफल लगभग 2400 वर्ग फुट है। इस मन्दिर मे प्रत्येक अष्टमी और चतुर्दशी का तलघर मे साजों से पूजन होती है। उत्सव विघान आदि भी होते है। यहाँ लकड़ी की पालकी है तथा लकड़ी के तीन हाथी हैं। सम्मेद शिखर के भाव पत्थर पर अकित हैं।

मन्दिर बीस पथ आम्नाय का है तथा यहाँ की व्यवस्था विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होती है जिसके अध्यक्ष श्री सूरजमलजी टोंग्या एवं मत्री श्री लालचन्दजी सोगाणी हैं।

22. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर मारूजी

यह मन्दिर मारूजी का चौक, मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, जौहरी बाजार मे स्थित है। इस दिगम्बर जैन मन्दिर का निर्माण सवाईराम मारू ओसवाल ने सवत् 1861 में फाल्गुण शुक्ला पचमी को कराया। मन्दिर के बाहर निर्माण सबधी निम्न शिलालेख भी लगा है।

> "श्री जैन दिगम्बर मन्दिर मारूजी का तेरापथी" मिती फागुण शु 5 वि.स. 1861
> ॐ श्री मूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुदकुदाचार्यान्वये
> दिगम्बर जैन धर्मी सवाई राम दुलीचद मारू ओसवाल वसे जौहरी ने
> मिती फागुण शु. 5 वि. स. 1861 को जयपुर मे मन्दिरजी का निर्माण करा कर
> प्रतिष्ठा कराई। इस मन्दिर मे सदैव दिगम्बर जैन धर्म तेरापथ शुद्धाम्नाय की
> प्रवृत्ति रहेगी और प्रबन्ध भी दिगम्बर जैन पच करेगे तथा दिगम्बर तेरापथ
> आम्नाय के विरुद्ध कोई भी प्रवृति नही कर सकेगा"

इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की सवत् 1883 की है। मन्दिर सफेद सगमरमर का बना हुआ है। यहाँ 62 मूर्तियाँ एव 13 यन्त्र है।

यहाँ करीब 200 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं जो सुरक्षित रखे है। मन्दिर के बाहर एक कुआ भी बनवाया हुआ है।

मन्दिर का प्रबन्ध चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है। वर्त्तमान मे श्री देशभूषण सौगाणी अध्यक्ष एव श्री विनयकुमार बैद मंत्री है।

23. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बड़ा तेरहपंथी, जयपुर

जयपुर नगर चौकड़ी घाट दरवाजा मे, मनीरामजी की कोठी के रास्ते मे, दड़े के पास दिगम्बर जैन तेरहपथ आम्नायानुयायियों ने विक्रम सवत् 1792 की आषाढ़ शुक्ला 3 को श्री शातिनाथ जिन चैत्यालय की स्थापना की थी कि जो अब काफी समय से दिगम्बर जैन मन्दिर बडा, तेरहपथियान के नाम से विख्यात है। जयपुर के दिगम्बर जैन तेरहपथ आम्नायानुयायियो की इस मन्दिर मे पंचायत है जिसमे लगभग 150 परिवार के सदस्य पंजीकृत है तथा शहर के अन्य तेरहपथी मन्दिर व चैत्यालयादि आम्नाय के लिहाज से इस पचायत के अधीन हैं।

मन्दिर दो चौक का है। प्रथम चौक से सगमरमरी सीढियाँ चढकर कलापूर्ण छत्री से आगे एक सभागार एव छत्री से लगे प्रवेश द्वार के माध्यम से मन्दिर की प्रथम मंजिल पर पहुँचते हैं जहाँ चौक के तीनो ओर दो-दो गह के विशाल तिबारे हैं। सुदृढ संगमरमरी खभो पर अत्यंत ही बारीक कुराई का काम है तथा पूर्व के तिबारे में स्वर्ण के मनमोहक बारीक कलमी काम के अतिरिक्त संगमरमर पर कई रंगो के पत्थरों को फूल-पत्तियों व पक्षियो के आकार को तराश कर अत्यन्त ही कलापूर्ण तरीके की पच्चीकारी की गई है, जो जयपुर के अन्य किसी मन्दिर में उपलब्ध नही है। इसके अलावा सम्मेद

शिखर, गिरनार, सुमेरुपर्वत, सीता की अग्नि परीक्षा, पाण्डवो की तपस्या, लव व कुश का परिचय आदि के भित्तिचित्र भी या तो सगमरमर पर उत्कीर्ण है या विभिन्न रगो के माध्यम से स्वर्णमयी स्याही का जहाँ भी आवश्यक उपयोग चित्रकार के द्वारा समभा गया, किया जाकर उसमें पूर्णता, मोहकता एव आकर्षण पैदा करने में कोई कोर कसर उठा नही रखी है।

चौक से कुछ ऊपर चढकर निज मन्दिर है। मुख्यवेदी सगमरमर की सुन्दर आकार की बनी हुई है जिसकी छत व बगल के भाग पूर्णतया सोने की बारीक कलमी चित्रकारी से मडित व शोभायमान है। वेदी मे मूलनायक शातिनाथ भगवान की प्रतिमा जो सवत् 1548 की प्रतिष्ठित है विराजमान है। इसके तीनो ओर कई वेदियां एव दो चैत्यालय भी बने हुए हैं जिनमे भी अति सुन्दर व प्राचीन जिन मूर्तियां विराजमान है। मन्दिरजी मे कुल 366 प्रतिमाएँ व 40 यत्र हैं। मन्दिर के चौक पर सुन्दर दुछत्ती है। मन्दिर इतना कलापूर्ण है कि दिन-प्रतिदिन न केवल भारतवर्ष के ही अपितु विदेशी पर्यटक भी इसके अवलोकन हेतु पधारते है तथा मुक्तकठ से इसकी सुन्दर एव बारीक स्वर्णमयी कारीगरी एवं चित्रकारी की प्रशंसा करते अघाते नही है।

इस मन्दिरजी मे दो शास्त्र भण्डार है, एक बाबा दुलीचद का तथा दूसरा बड़े मन्दिर का। इन भण्डारों के ग्रंथों की सूची महावीर क्षेत्र से प्रकाशित ग्रथ सूची भाग 2 तथा 4 में प्रकाशित हो चुकी है। जयपुर के प्रमुख एवं प्रसिद्ध साहित्यकार महापडित टोडरमलजी, पडित जयचन्दजी छाबड़ा, पडित सदासुखजी कासलीवाल आदि ने इस ही मन्दिरजी को कर्मस्थली बनाकर अपने अनेको ग्रंथो की रचनाएँ की थी तथा भारतवर्ष के जैन पडितो के समक्ष जब कोई शका उपस्थित होती थी तो उसके निराकरण हेतु या तो वे यहाँ पधारते थे या पत्र-व्यवहार के माध्यम से अपनी शंका का समाधान करते थे।

बाबा दुलीचंद भण्डार

बाबा दुलीचन्दजी महाराष्ट्र के पूना जिले में फल्टन ग्राम के निवासी थे। वे हस्तलिखित ग्रथो के साथ यात्रा करते हुए जयपुर पधारे और ग्रथों की सुरक्षा की दृष्टि से जयपुर को उचित पाकर अपने समस्त ग्रंथ यहाँ विराजमान कर दिये। भण्डार मे बाबाजी के स्वयं के लिखे हुए भी ग्रथ हैं। आपने सारे भारत की तीन बार यात्रा की जिसका वर्णन जैन यात्रा दर्पण मे किया है। ग्रंथों की सुरक्षा की दृष्टि से आपने मन्दिरजी के शास्त्र भण्डार के द्वार पर शिलालेख भी लगा दिया कि भण्डार से बाहर ग्रंथ ले जाने वाला पाप का भागी होगा। भण्डार पूर्ण व्यवस्थित है तथा सुरक्षा की दृष्टि से कई एक ग्रंथो पर 3-3, 4-4 वेष्टन लगाये हुए हैं। इस भडार मे 850 ग्रंथ हैं।

यहाँ आचार्य विद्यानदि की आप्तमीमासा की सुन्दर प्रति है। सबसे प्राचीन प्रति क्रियाकलाप की है जो स. 1534 में मांडलगढ में सुलतान गयासुद्दीन के राज्य में लिखी गयी थी। तत्वार्थ सूत्र की स्वर्णाक्षिरी प्रति, त्रिलोक सार की सुन्दर सचित्र प्रति बारीक अक्षरों में दर्शनीय है। यहां श्री पन्नालाल जी सघी का साहित्य भी सग्रहीत है। भण्डार में पदों का भी अच्छा संग्रह है जिनमें माणकचद, हीराचद, दौलतराम, भागचन्द,

"महाराजाधिराज श्री सवाई प्रतापसिंहजी का राज में वाकलीवाला को देवरो स. 1856 मे ।"

यहाँ मूलनायक प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ की श्वेत पाषाण की स. 1826 की प्रतिष्ठित है । यहाँ 3 वेदियो मे कुल 67 प्रतिमाएँ एव 6 यत्र है । यहाँ की गुम्वज मे सुन्दर चित्रकारी है ।

इस मन्दिर की अचल सम्पत्ति मे मकान तथा दुकाने हैं । यह मन्दिर वीस पथ आम्नाय का है । यहाँ की व्यवस्था बाकलीवाल परिवार के वशज ही सम्भालते हैं । मत्री श्री ताराचन्द बाकलीवाल हैं ।

विशेष प्रचलित किंवदन्ती के अनुसार माली के व्यग कसने पर एक वृद्धा महिला ने जो बाकलीवाल परिवार की थी, मन्दिर बनवाया तथा साथ ही कुआ भी वनवाया ।

35. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी (खोजान)

यह मन्दिर हरसुखजी कासलीवाल के रास्ते मे स्थित है । इस मन्दिर का निर्माण करीब 150 वर्ष पूर्व श्री शिवजीराम जैन (खोजा) द्वारा कराया गया था । ऐसा कहा जाता है कि श्री शिवजीरामजी जयपुर राज्य की जनानी ड्योढी मे हाकिम थे ।

मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा 1008 श्री आदिनाथ स्वामी की है । इसके अतिरिक्त 34 (10 पाषाण व 24 पीतल) प्रतिमाएँ और 7 यंत्र हैं । इसके अलावा पच मेरुजी के दो सैट है । मन्दिर की गुम्बज विशाल व दर्शनीय है । विशालता के साथ-साथ सुन्दर चित्राङ्कण भी दर्शनीय है ।

यह मन्दिर बीस पन्थ आम्नाय का है और प्रबन्ध चुनी हुई प्रबन्धकारिणी समिति द्वारा किया जाता है जिसका गठन पजीकृत विधानानुसार किया जाता है । यह समिति सार्वजनिक प्रन्यास के अन्तर्गत देवस्थान विभाग से भी रजिस्टर्ड है । वर्त्तमान मे अध्यक्ष श्री जयकुमार छाबड़ा एवं मंत्री श्री भागचन्द छाबड़ा हैं ।

मन्दिर की अचल सम्पत्ति मे 2 चौक की हवेली आदिनाथ भवन के नाम से है जिसमे इस समय 3 दूकाने हैं । हवेली व दूकानें किराये पर हैं । इसके अतिरिक्त पूर्ववर्ती द्वार व्यासों के चौक मे निकलता है ।

36. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर गढमलजी बैनाडा

यह मन्दिर दीवान शिवजीलाल का रास्ता, जयपुर मे स्थित है । मन्दिर का निर्माण गढमलजी बैनाडा ने करवाया था । व्यास के पर्चे के अनुसार इसका निर्माण

सं. 1805 में हुआ – "महाराजाधिराज श्री सवाई ईश्वरीसिहजी का राज मे गढमल को देवरो बण्यो स. 1805 का साल मे" । इस मन्दिर मे मूलनायक प्रतिमा आदिनाथजी की है तथा मूल वेदी के अतिरिक्त तीन वेदियाँ और है जिनमे 133 प्रतिमाएँ तथा 17 यत्र है । इसमे क्षेत्रपाल की दो मूर्तिया है जो काले-गोरे भैरू के नाम से प्रसिद्ध है ।

मन्दिर मे कलाकृति में चौक मे सामने के तिवारे मे मकराने के पत्थर में सम्मेद शिखर, कैलाश पर्वत, षट्लेश्या, गधकुटी एव पुरुषाकार तीन लोक के भावचित्र उभरे हुए हैं जो दर्शनीय हैं । वाहर के द्वार पर मगल द्रव्य, पटलेश्यावृक्ष एवं संसार वृक्ष हैं । यहाँ भैरव की 2 मूर्तियाँ निज मन्दिर के द्वार पर वनी है, कालेपाषाण की कुत्ते पर सवारी एव लाल पाषाण की हाथी पर सवारी । लाल पाषाण के भैरव की वगल मे निम्न लेख है :– "श्री अजितनाथजी का मन्दिर की चीज वस्तु ज्यो कोई भी मांगी देलो वा ले जायेगो वो पच परमेष्ठीजी से विमुख मिति पौष सुदी 2 संवत् 1895 ।"

यहाँ के क्षेत्रपाल के चमत्कार के बारे में बताया जाता है कि करीव 30–35 वर्ष पूर्व मूर्तियों की चोरी हो गई थी । पुलिस में रिपोर्ट भी की गई किन्तु कुछ नही हुआ । आखिर एक दिन एक महानुभाव क्षेत्रपालजी के सम्मुख लकड़ी लेकर अड़ गये और कहने लगे "तुम यहाँ के क्षेत्रपाल हो अतएव यहाँ की रक्षा क्यो नही की ? या तो मूर्तियाँ आ जानी चाहिये नही तो तुम्हारी मूर्ति उखाड़ कर फेंक दूगा ।" कहते हैं कि रात को उस व्यक्ति को स्वप्न मे क्षेत्रपालजी ने बताया कि मूर्तियां जादूणजी के नोहरे (महावीर पार्क) मे कुए मे पड़ी हैं निकाल लो । दूसरे ही दिन पुलिस के समक्ष मूर्तिया निकलवायी गईं । सभी मूर्तिया मन्दिर मे विराजमान हुईं ।

इस मन्दिर का क्षेत्रफल 4067 वर्गफुट है तथा मन्दिर के नीचे दूकानें है । यहाँ शास्त्र भण्डार में करीब 50 ग्रथ हैं ।

यह बीस पंथ आम्नाय का मदिर है । इसका प्रबन्ध चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होता है । वर्त्तमान में श्री महावीरकुमार संघी मंत्री है ।

37. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सांगाकों का, जयपुर

यह मन्दिर जयपुर के किशनपोल बाजार मे सांगाकों के रास्ते मे स्थित है । सरकारी रुक्के (व्यास के पर्चे) के आधार पर इसका निर्माण संवत् 1788 में हुआ । जैसाकि निम्न प्रकार उल्लेख है :–

"महाराजाधिराज सवाई जयसिहजी का राज में सांगाका को सवत् 1788 में हुआ" ।

यह मन्दिर पाटनी गोत्र वाले सागाका परिवार की ओर से बनाया हुआ बताया जाता है ।

मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो संवत् 1826 की प्रतिष्ठित है। यहाँ पीतल की बड़ी पचमेरु तथा पाषाण की पद्मावती देवी की प्रतिमा भी है।

मन्दिर विशाल एव कलापूर्ण है। मन्दिर मे ऊची सीढियां चढकर चौक मे प्रवेश करना पडता है। चौक मे बायी ओर के तिबारे मे सुन्दर महीन कारीगरी के भित्तिचित्र बने हुए है जिनमे षटलेश्या, सीता की अग्नि परीक्षा, गधकुटी, समवसरण रचना, भगवान का बिहार, सम्मेदशिखर, पच कल्याणक, सोलह स्वप्न, तीन लोक का नक्शा आदि हैं, जिनमें कलाकार की कुशलता झलकती है। कुछ हाथ की कलम के सुन्दर मढे हुए चित्र भी हैं जिनमें सेठ सुदर्शन, नमिनाथ जन्म कल्याणक तथा चौवीस तीर्थंकरो का सामूहिक चित्र उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त काष्ठ का कलापूर्ण समवसरण भी है जिसमे महीन कलम के कलापूर्ण चित्र हैं। मदिर मे एक सगमरमर की वेदी पर कुराई का बारीक काम है।

यहाँ हस्तलिखित ग्रथ एव गुटके भी हैं जो प्रतिदिन स्वाध्याय के है। प्रचार-प्रसार की दृष्टि से मन्दिर के शिखर पर ध्वनि प्रसारक यत्र लगे हैं जिनसे भाद्रपद मास तथा अन्य उत्सव विधानो के अवसर पर स्तोत्र एव भजनों के रिकार्डिंग चलते है।

मन्दिर बीस पथ आम्नाय का है। मन्दिर का क्षेत्रफल 5000 वर्गफीट है तथा मन्दिर के नीचे गोदाम एव दूकाने है। यहां का प्रबध विधानानुसार चुनी हुई प्रबध समिति द्वारा किया जाता है। संस्था देवस्थान विभाग, राजस्थान के सार्वजनिक प्रन्यास के अन्तर्गत भी पजीकृत है। वर्त्तमान मे यहाँ के अध्यक्ष श्री ताराचन्द पाटनी बम्बई वाले एवं मत्री श्री रामचरण साह हैं।

38. श्री दिगम्बर जैन मंदिर चन्द्रप्रभजी (खिन्दूकान)

यह मन्दिर मणिहारो के रास्ते मे महावीर पार्क के पास स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण पच खिन्दूकान द्वारा कराया गया है। व्यास के पर्चे के अनुसार यह सवत् 1804 में बना था। पर्चे की विगत निम्न प्रकार हैं :-

"महाराजाधिराज सवाई ईसरीसिंहजी का राज में पच खिन्दूका को संवत् 1804"

खिन्दूका, पाटनी एवं मुशरफ एक ही गोत्र है और इनका आगमन सागानेर के निकटवर्ती नेवटा ग्राम से हुआ है जहां एक प्राचीन मदिर है।

जयपुर के खिन्दूकान के मन्दिर मे मूलनायक प्रतिमा चन्द्रप्रभ भगवान की है। यहाँ 266 प्रतिमाएँ एव 44 यंत्र हैं। इसके अतिरिक्त धातु की पचमेरु चरण चौकी, पद्मावती देवी तथा एक पीतल की पातडी है जिस पर "उदय बाबाजी" का चित्र है। यहाँ भगवान अजितनाथ की श्याम पाषाण की विशाल पद्मासन मनोज्ञ प्रतिमा भी है।

मन्दिर कलापूर्ण है। बाहर छत्री है एवं अन्दर वेदी पर बड़ा विशाल गुम्बज है। श्वेत पाषाण पर सम्मेद शिखर, चम्पापुर, पावापुर काशी (बनारस) के सुन्दर सुनहरी उत्कीर्ण रंगीन मनोहारी भाव हैं। यह काच के चौखट मे पूर्णतया सुरक्षित है।

मन्दिर का क्षेत्रफल 6682 वर्गफीट है। मन्दिर के नीचे 9 दूकाने तथा बराबर मे एक हवेली है। एक धर्मशाला भवन "धर्मशाला मन्दिर खिन्दूकान" के नाम से है। वर्तमान मे श्री महावीर दिगम्बर जैन बालिका विद्यालय को यह भवन शिक्षा हेतु दिया हुआ है। यह भवन कमेटी द्वारा विवाह आदि के अवसरो पर समारोह हेतु आवटित किया जाता है।

मन्दिर में करीब 15 प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ है। धर्म प्रचार-प्रसार हेतु भादप्रद मास मे शास्त्र सभा चलती है। मन्दिर मे समय-समय पर उत्सव विधि-विधान होते रहते हैं। माह सुदी दशमी को भगवान अजितनाथ का जन्म तप कल्याणक महोत्सव मनाया जाता है। रेकार्डिंग द्वारा भी पूजा-पाठ, स्तोत्र आदि का प्रचार किया जाता है।

यह मन्दिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा पंजीकृत विधान के अनुसार चुनी हुई कार्यकारिणी समिति द्वारा प्रबन्ध होता है। वर्तमान में श्री भंवरलाल चौधरी अध्यक्ष एवं श्री प्रवीण चंद पाटनी मंत्री हैं।

39. श्री दिगम्बर जैन मंदिर बाईजी कुशलमतिजी

यह मदिर सवाई मानसिंह हाईवे मे रास्ता चौरूकान के प्रथम चौराहे पर स्थित है। इसका निर्माण अजमेर पट्ट के भट्टारक भुवनकीर्ति की शिष्या बाईजी कुशलमतिजी ने कराया था। मंदिर का निर्माण कब हुआ यह तो ज्ञात नहीं किन्तु इतना अवश्य है कि इसका निर्माण सवत् 1892 से पूर्व हो चुका था। मूलवेदी मे श्री आदिनाथ भगवान की सं. 1287 की प्रतिष्ठित मूर्ति को भादवा बुदि 8 सं. 1891 को विराजमान किया गया था। इसके पश्चात् संवत् 1936 से 1963 तक विकास कार्य होते रहे तथा आगे भी निम्न प्रकार वेदियो का निर्माण एवं उनमें मूर्तिया विराजमान होती रही :–

दूसरी मंजिल की अन्य वेदी में खिन्दूकों के मंदिर से भगवान नेमिनाथ की प्रतिमा लाकर विराजमान की गई।

इस मंदिर की एक विशेषता यह है कि इसमें तीसरी मंजिल मे भी 3 वेदियाँ है।

1. प्रथम वेदी श्री कस्तूरचंदजी सेठी ने बनवाई जिसमें श्रीमती राधा किशनजी टकसाली ने भादवा सुदी 6 स. 2008 को भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान की।

2. दूसरी वेदी का निर्माण श्री भूरामलजी सेठी ने करवा कर फागुण सुदी 4 स 2008 मे ही सघीजी के मदिर से भगवान सभवनाथ की प्रतिमा लाकर विराजमान की।

3. तीसरी वेदी का निर्माण श्री सरदारमलजी सेठी ने कराया और माह सुदी 2 सं. 2019 में प्रतिमा विराजमान की।

शास्त्र भण्डार

इस मन्दिर का भट्टारकीय शास्त्र भण्डार काफी समृद्ध है और यहां अनेक दुर्लभ एवं अद्वितीय शास्त्र और यन्त्रादि है। भण्डार मे 2257 ग्रंथ तथा 308 गुटके है। यहा भक्तामर स्तोत्र एवं तत्वार्थ सूत्र की ताडपत्रीय रजताक्षरी एव स्वर्णाक्षरी प्रतियाँ भी हैं। कपड़े पर जम्बू द्वीप, अढाई द्वीप, तेरह द्वीप, विजय यत्र, विजय यत्र सचित्र, एव अन्य यंत्रों का उल्लेखनीय सग्रह है। भण्डार मे सबसे प्राचीन प्रति महाकवि पुष्पदंत के "जसहर चरिउ" की है, जो सं. 1407 मे चन्द्रपुर दुर्ग मे लिखी गयी थी। इसके अतिरिक्त 15वी, 16वी एव 18वी शताब्दी मे लिखे हुये ग्रथो की भी अनेक प्रतियां हैं। भण्डार व्यवस्थित है एव सूची बनी हुई है। यह सूची महावीरजी क्षेत्र से प्रकाशित ग्रथ सूची भाग 4 मे प्रकाशित हो चुकी है।

भट्टारक गद्दी

आमेर की भट्टारक गद्दी जयपुर में संवत् 1792 के पश्चात् इसी मंदिर मे आयी और निम्न भट्टारको का पदस्थापन (पट्टाभिषेक) इसी पचायती मदिर मे विधिपूर्वक हुआ :–

1. भट्टारक क्षेमेन्द्र कीर्ति (संवत् 1815)
2. भट्टारक सुरेन्द्र कीर्ति (सवत् 1822)
3. भट्टारक सुखेन्द्र कीर्ति (संवत् 1852)
4. भट्टारक नरेन्द्र कीर्ति (संवत् 1880)
5. भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति (संवत् 1883)
6. भट्टारक महेन्द्र कीर्ति (सवत् 1938)
7. भट्टारक चन्द्र कीर्ति (सवत् 1974)

ये भट्टारक जैनियो के धर्मगुरु थे और इनके आगमन पर तत्कालीन जयपुर राज्य से लवाजमा लगता था तथा पट्टाभिषेक के समय दुशाला आदि भेंट आती थी। यहां भट्टारकीय विशाल शास्त्र भण्डार भी है। यह मदिर भट्टारकों की गतिविधियो का केन्द्र रहा है, अत ऐतिहासिक सामग्री की दृष्टि से यहां का भण्डार अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भट्टारको-पडितो की चिट्ठी-पत्री, उनके चातुर्मास के विवरण, चारो रथो के मेले का विवरण, धार्मिक, सामाजिक एवं पचायती विवादो की पत्रावलिया, भट्टारको के पट्टाभिषेक का विवरण आदि उपलब्ध हैं।

बीस पथ आम्नाय के सभी मदिरों मे जो पडित या पांडया थे, उन सबकी भेट इस मन्दिर में आती थी। उनकी नियुक्ति भी इसी मदिर से होती थी।

वैय्यावृत्य

इस मदिर मे सदैव कोई न कोई मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिका, ब्रह्मचारी या ब्रह्मचारिणी विराजते हैं। उनके वैय्यावृत्य के लिये औषधियाँ तथा चौको की व्यवस्था रहती है। इसके अतिरिक्त यहाँ पर वैय्यावृत्य भवन मे औषधालय भी चलता है।

विशेष

मंदिरजी में प्रतिवर्ष भादवा की समाप्ति पर सोलहकारणजी के कलशाभिषेक प्रारम्भ करने से पूर्व तथा महावीर स्वामी के निर्वाण के लड्डू चढाने से पूर्व जोधराज पाटोदी के वंश के प्रतिनिधि द्वारा भेंट दी जाती है। इसके अतिरिक्त जब मंदिरजी से रथयात्रा निकाली जाती है तब भी पाटोदी के वंश के प्रतिनिधि भेंट चढाते हैं। तत्कालीन जयपुर राज्य की ओर से रथयात्रा के समय भी भेंट आती थी।

मंदिर की चल संपत्ति मे दूकाने तथा मकान हैं। मंदिर के बाहर चौक मे एक ओर मकानात मे साधुसंत एवं त्यागियों के ठहरने की व्यवस्था है। सदैव 1-2 चौके निर्बाध रूप से चलते हैं। हमेशा 1-2 क्षुल्लिकाजी का निवास बना ही रहता है।

मई सन् 1981 में क्षुल्लक सिद्ध सागरजी लाडनू वालो के सान्निध्य मे क्षुल्लिका जिनमती माताजी की प्रेरणा से यहाँ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का आयोजन हुआ था। यह प्रतिष्ठा महोत्सव महावीर दि. जैन हाई स्कूल, सी-स्कीम के प्रांगण में सम्पन्न हुआ था। मई 1989 में लघु पंचकल्याणक महोत्सव भी हुआ था। आये दिन उत्सव विधानादि होते रहते हैं।

इस मंदिर तथा इसके अधीनस्थ दि. जैन मंदिर पुराना घाट एवं नसियाँ विजैराम पाण्डया, आमेर रोड की व्यवस्था भी विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा की जाती है।

यहाँ विवाह सस्कार के लिये वेदियो के सैट भी उपलब्ध है।

वर्त्तमान में यहाँ के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कुमार निर्भीक एवं मंत्री श्री महावीर कुमार रारा हैं।

44. श्री दिगम्बर जैन मंदिर लश्कर

यह मन्दिर चौकड़ी मोदीखाना मे पं चैनसुखदास मार्ग में स्थित है। कहते है इस मन्दिर का निर्माण ठीक पाटोदी के मंदिर के निर्माण के बाद ही हुआ। व्यास के पर्चे के अनुसार यह ठीक ही है—"लस्करी देवरो सवत् 17—में बण्यो दरबार के लार जाय।" निर्माण के सम्बन्ध मे किवदन्ती है कि पाटोदी के मन्दिर की सीढ़ियाँ कुछ ऊँची होने के कारण किसी महिला से कुछ कहा-सुनी हो गई और इसी आधार पर उस महिला ने उक्त मन्दिर के निर्माण का कार्य चालू किया। इस बात की पुष्टि इससे होती है कि यह मंदिर पाटोदी के मन्दिर से हर क्षेत्र में सवा गज लम्बा, सवा गज चौड़ा तथा सवा गज ऊँचा बनाया गया। मन्दिर के निर्माण के सम्बन्ध में यह भी कहा जाता है कि साह गोत्र के किसी सज्जन ने, जो लश्कर के रहने वाले थे और जयपुर मे किसी सरकारी पद पर नियुक्त थे, इसका निर्माण कराया और इस कारण यह लश्कर का मंदिर कहलाने लगा। इस बात की पुष्टि इससे भी होती है कि इस मन्दिर मे सं. 1815 से रिकार्ड उपलब्ध है उसमे लश्कर शहर के मन्दिर व इस मंदिर से आपस में सामग्री (पहुँचारा) आदि के विवरण का उल्लेख है।

दूसरी किंवदन्ती यह भी है कि यहाँ का चैत्यालय फौज के साथ जाया करता था। इसका कारण यह है कि इस मंदिर के बनाने वाले प्रबन्धकर्त्ता सरकारी अच्छे ओहदे पर थे। वे जब फौज के साथ जाते थे तो अपनी धार्मिक नित्य क्रियाओं की पूर्ति हेतु चैत्यालय अपने साथ ले जाते थे जो अब भी एक छोटे से बक्से मे है। इससे भी उपरोक्त तथ्यों पर कोई विपरीत असर नही पड़ता।

इस मन्दिर के निर्माण मे साह गोत्रीय परिवार का प्रमुख सहयोग रहा और निर्माण से आज तक इसका प्रबन्ध और सारी गतिविधियों की देखरेख साह गोत्रीय परिवार के हाथ मे रहती चली आ रही है।

भाद्रपद मास में पहिले इस चौकड़ी (मोदीखाना) मे रहने वाले सभी साह परिवारो की ओर से बारी-बारी से आरती होती थी जिसमे सब चौकड़ी वाले सज्जन शामिल होते थे किन्तु समयाभाव के कारण अब यह कार्यक्रम बद हो गया है। मन्दिर का निर्माण साहो द्वारा ही कराया गया, इसकी पुष्टि निम्न बातो से बताई जाती है –

(1) आश्विन कृष्णा प्रतिपदा को चौक मे श्रीजी विराजमान करके साहो द्वारा ही महार्घ्य घुमाया जाता है तथा इसका सामान साहों के यहाँ से आता है।

(2) श्रीजी पर किये जाने वाले दूध-दही के कलशों को भरकर साह गोत्र वाले ही कलश करने वालो को सौपते हैं।

(3) विधानानुसार मदिर के मुख्य भण्डार की चाबियाँ साह गोत्र वाले प्रमुख व्यक्ति के पास ही रहती हैं, जैसे – जमनालालजी दुलीचन्दजी साह आदि।

(4) गत 40 वर्षों से चाबी गेदीलालजी साह के पास है।

मदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की श्याम पाषाण की है। मूल वेदी के अतिरिक्त 13 वेदियाँ और है जिनमें कुल 233 प्रतिमाएँ एव 69 यत्र हैं। पाषाण की अनेक विशाल प्रतिमाएँ हैं। प्रतिमाओ मे एक समवसरण की रचना सप्त धातु की भिन्न-भिन्न भागों में विराजमान है। मन्दिर में एक साहों का चैत्यालय अलग से है।

मन्दिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा भट्टारकों की गद्दी से मुख्य पण्डितों का हमेशा इस मन्दिर में सम्पर्क रहा है। पडित केसरी सिंह इस मंदिर के प्रधान पडित थे, जिन्होंने स. 1826 मे वर्धमान पुराण की भाषा टीका यही पर की। पं. बखतराम साह ने "मिथ्यात्व खडन" की स. 1821 मे और "बुद्धि विलास" की सं 1827 मे इसी मदिर मे बेठकर रचना की। बुद्धि विलास में जयपुर का ऐतिहासकि वर्णन है जिसका प्रकाशन प्राच्याविघा सस्थान, जोधपुर से हो चका है।

इस मदिर में 828 हस्तालिखित ग्रथो एव गुटकों का अच्छा सग्रह है जिसकी सूची महावीर क्षेत्र से प्रकाशित हो चुकी है। भडार मे प्रमाण तत्वालोकालंकार टीका (रत्न प्रभाचार्य) आत्म प्रबोध (कुमार कवि) रत्नकरण्ड श्रावकाचार टीका (प्रभाचन्द) शातिनाथ पुराण (अशग) के नाम उल्लेखनीय हैं। भट्टारक ज्ञान भूषण की आदीश्वर फाग की स. 1587 की सुन्दर प्रति भी यहाँ सुरक्षित है। भण्डार मे सस्कृत प्राकृत भाषा के

काफी ग्रंथ उपलब्ध है। यहाँ संवत् 1815 मे ही बहीखाते आदि का रेकार्ड सुरक्षित है जिसमें लेखा-जोखा तथा अन्य कार्यों का विवरण मिलता है।

मंदिर कलापूर्ण एवं विशाल है। चौक में चारो तरफ सखियाँ बनी हुई है। रायावाला पत्थर के लट्टू व बदनवार बनी है। छत की दीवारों मे अन्दर की ओर से कुराई का अच्छा कार्य है। मूल वेदी के सामने वाले द्वार की किवाड़ जोड़ी मे पीतल की कटाई से कई भाव प्रदर्शित किये गये है। ऊपर दीवारो पर भित्ति चित्र हैं जिनमें प्रमुख पाण्डुक शिला व पंचकल्याणक का है, कुछ मे मढे हुए चित्र भी है। सुकुमाल मुनि, सुकौशल मुनि बाहुबली, भरत तथा 16 स्वप्नों, तीर्थ क्षेत्रों तथा कुछ मुनियो के चित्र हैं।

मंदिर का क्षेत्रफल लगभग एक हजार वर्ग फीट है, नीचे दूकानें तथा पास मे बिहारी है। आमेर रोड पर इसी मदिर के अधीनस्थ शिवजी गोधा की नसियाँ है।

धार्मिक प्रचार-प्रसार की दृष्टि से शास्त्र प्रवचन एवं रात्रि पाठशाला चलती है। अष्टाह्निका तथा भादप्रद मास में उत्सव विधानादि होते रहते हैं तथा स्तोत्र पाठो के टेप रिकार्डिंग चलते रहते हैं।

मदिर का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होता है। विधान सार्वजनिक प्रन्यास के अन्तर्गत पंजीकृत है। मन्दिर के वर्तमान मे अध्यक्ष श्री गेंदीलाल साह तथा मंत्री श्री ताराचंद साह हैं।

इस मन्दिर से बाहर की कॉलोनियों में भी मन्दिरों के लिये मूर्तियाँ समय-समय पर दी गई हैं। साह परिवारों की पुरानी वशावली भी इसी मंदिर मे बैठकर श्री चिरंजीलालजी साह, श्री कपूरचन्दजी साह एवं श्री गेंदीलालजी साह ने मिलकर लिखी है जो प्रकाशित हो चुकी है।

45. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जती तन सागरजी

यह मन्दिर चौकड़ी मोदीखाना में मणिहारों के रास्ते में स्थित है। यह मन्दिर जतीजी के नाम से प्रसिद्ध है। इसे दिगम्बर जैन जती तन सागरजी ने बनवाया। निर्माण काल के सम्बन्ध मे कुछ स्थिति स्पष्ट नही है।

1. व्यास के पर्चे के अनुसार – "जतीतन सागरजी मनसागरजी बणायो सं. 1834 में।"
2. मंदिर लूणकरणजी पाँड्या की बही के अनुसार – "माह सुदी 6 सं 1883 – तनसागरजी जती नवीन हवेली बणाई तै ठे श्रीजी विराजमान किया।"
3. स्वरूपचंद बिलाला की जयपुर चैत्य वंदनानुसार सं. 1892 के पूर्व बने मंदिरों की गणना में उल्लेख है जबकि सं. 1943 की एवं बाबा दुलीचंद की हस्तलिखित सूचियो मे "जतीजी को चैतालो" एवं तनसागर मनसागर जती का चैत्यालय लिखा है।

एक हस्तलिखित सूची में यह भी लिखा है – चैतालो तनसागर जती को मदिर बराबर लागै"

वास्तव में ठीक ही है कि बिना शिखर (गुंबज) तथा फेरी के यह चैत्यालय ही लगता है किन्तु मदिरों की गणना में है। जतीतन सागरजी का वंग वृक्ष निम्नप्रकार है-

सर्वप्रथम जती कृपा सागर, जिनका निधन संवत 1829 मे हुआ। उनके पश्चात् जती तनसागर, मनसागर, जती गणेशसागर, जती रतनसागर तथा अंतिम चंद्रसागर हुए।

इसमें मूलनायक प्रतिमा महावीर स्वामी की धातु की संवत् 1861 की है। कुल 10 प्रतिमाएँ एव 1 यत्र है। अधिकतर प्रतिमाएँ स. 1852 की प्रतिष्ठित हैं।

यह मंदिर कलापूर्ण है– काच की जड़ाई के सुन्दर भित्ति चित्र हैं जिनमे पचकल्याणक, समवसरण, सम्मेदशिखर तथा पुरुषाकार तीन लोक का चित्र प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है। कही-कही से काच झड़ने लग गये हैं। यह मदिर बीसपथ आम्नाय का है तथा इसकी व्यवस्था श्री त्रिलोकचद सोगानी करते हैं।

46. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर दीवान अमरचन्दजी

(छोटे दीवानजी का मन्दिर)

यह मन्दिर लालजी सांड के रास्ते मे स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण दीवान शिवजीलालजी के पुत्र दीवान श्री अमरचन्दजी पाटनी ने स 1876 मार्गशीर्ष से भाद्रपद स. 1882 तक कराया है जिसका मन्दिर के द्वार पर शिलालेख है। यह मदिर छोटे दीवानजी के नाम से प्रसिद्ध है। दीवान शिवजीलाल ने मणिहारो के रास्ते मे स्थित मन्दिर बनवाया जो बड़े दीवानजी के मन्दिर के नाम से विख्यात है जिसमें सं. 1852 की प्रतिष्ठित मूर्तियाँ हैं तथा उनके पुत्र श्री अमरचन्दजी ने यह मन्दिर बनवाया जिसमे स. 1883 की मूर्ति प्रतिष्ठित है। दीवान अमरचन्दजी पाटनी के वश मे बड़ा परिवार है उसके प्रमुख अब श्री प्रकाशचन्दजी दीवान हैं।

मन्दिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान 1008 आदिनाथ की सं. 1852 की प्रतिष्ठित है। मन्दिर में कुल 38 प्रतिमाएँ एवं 5 यंत्र हैं। मन्दिर में दो वेदियाँ हैं, दूसरी वेदी मे सबसे मनोज्ञ प्रतिमा श्री चन्द्रप्रभ की श्वेत पाषाण की विशालकाय पद्मासन है जिसकी प्रतिष्ठा बाडी ग्राम में सं. 1883 में हुई थी और दीवान अमरचन्दजी ने यहाँ लाकर विराजमान किया था। सबसे प्राचीन प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ की धातु की सं. 1122 की है।

यह मन्दिर गुमान पंथ आम्नाय का है। अनन्त चतुर्दशी को केवल जल के कलश होते हैं। माला आदि नहीं होती। षोडषकारण के कलश प्रतिपदा को होते हैं जो केवल कलशो (वर्तनों) में ही किये जाते हैं श्रीजी पर नही।

मन्दिर में हस्तलिखित 830 ग्रंथों का अच्छा संग्रह है जिसकी सूची महावीर क्षेत्र से प्रकाशित ग्रंथ सूची भाग 4 में छप चुकी है। भण्डार मे सबसे प्राचीन प्रति सं. 1553 मे लिखित पूर्णचन्द्राचार्य के उपसर्ग हरस्तोत्र की है। अज्ञात कृतियो में तेजपाल का संभव

जिणणाह चरित्र अपभ्रश तथा हरचन्द गगवाल कृत सुकुमाल चरित्र स. (1918) के नाम विशेपतया उल्लेखनीय है। ग्रथो के सग्रह करने मे स्वय अमरचन्दजी ने रुचि ली है। अपने समकालीन विद्वानो की रचनाओ की प्रतियाँ रखी है।

प्रचार-प्रसार – यहाँ प्रारम्भ से ही सायकालीन शास्त्र सभा चलती है। मन्दिर की ओर से चारो प्रकार के दान की व्यवस्था का प्रावधान है। उत्सव विधानादि होते रहते है। समय-समय पर साधु-सतो के ठहरने एव प्रवचन आदि की व्यवस्था रहती है।

मन्दिर कलापूर्ण एव विशाल है। बड़ा चौक है तथा बारादरी के ऊपर खुली चादनी तथा निज मन्दिर के ऊपर बडा हॉल है जिस पर विशाल गुवज है। ऊपर के हॉल मे मुद्रित पुस्तके तथा कलापूर्ण प्रदर्शनी योग्य चित्र लगे हुए है। मन्दिर का बाहरी दृश्य भी सुन्दर है। कलाकृतियों में सुन्दर पालकी, हाथी, 2 घोडे, 1 छोटा रथ तथा समवसरण है जो सभी लकड़ी के है। प्रत्येक अष्टाह्निका की चतुर्दशी को मन्दिर के चौक मे ही रथ यात्रा होती है। भाद्रपद में अढाई द्वीप का मण्डल विधान नियमित होता है। जयपुर के जैन दीवानो के हाथ की कलम के सुन्दर एव आकर्षक चित्र भी है जो यदाकदा प्रदर्शनी मे रखे जाते है। ये चित्र दीवान रामचन्द्र छावडा, दीवान बालचन्द्र छावड़ा, दीवान राव कृपारामजी पांड्या, दीवान शिवजीलाल पाटनी तथा उनके पुत्र दीवान अमरचन्दजी पाटनी के है।

मदिर के नीचे 1 हवेली तथा 13 दूकानें है जो किराए पर है। सामने ही दीवानजी की धर्मशाला है जिसमे दिगम्वर जैन औषधालय चलता है तथा यात्रियो के ठहरने की समुचित व्यवस्था है।

मदिर का प्रवन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रवन्ध समिति द्वारा होता है। मदिर राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास के अतर्गत भी पंजीकृत है। वर्त्तमान में यहाँ के अध्यक्ष श्री प्रकाशचद दीवान एव मत्री श्री भँवरलाल न्यायतीर्थ है।

नोट – पापल्यो के मदिर के शास्त्र भण्डार मे विराजमान गुणभद्राचार्य के जिनदत्त चरित्र की सवत् 1864 की लेखक प्रशस्ति मे लिखा है कि इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि दीवान अमरचदजी के मन्दिर में विराजमान की गयी है। अतः मंदिर का निर्माण काल खोज का विपय है।

47. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर भाँवसान, नया

यह मन्दिर सेवा पथ, लालजी साड के रास्ते में स्थित है। बाबा दुलीचंद के हाथ की सूची मे इसके निर्माणकर्त्ता का नाम किशोरीलाल बड़जात्या लिखा है जो चौरू के थे। सं 1943 की हस्तलिखित सूची मे इसे "भौसा का चौक मे नवो मंदिर" लिखा है। अतः मंदिर सौ वर्ष से प्राचीन अवश्य है। इसके अलावा और कोई उल्लेख उपलब्ध नही है।

गया है। वेदी के आगे तिबारे की छतों मे चौसठ योगिनियो, तीन चौबीसी तथा अन्य देवी-देवताओं का चित्रांकन है।

दीवारों तथा खम्भों पर गुलाब के फूल-पत्तियो को इतने सुन्दर ढंग से उभारा गया है कि देखते ही बनता है। एक फूल का आकार दूसरे से मिलता नही है। वेदी के पीछे की ओर तिबारे की छत तथा दीवारो पर सुन्दर कुराई का कार्य दर्शनीय है। भगवान के पाचो कल्याणक भाव प्रदर्शित है।

गर्भ कल्याण में माता के 16 स्वप्न, जन्म कल्याण मे पाण्डुशिला पर इन्द्रों द्वारा अभिषेक, देवों द्वारा क्षीर सागर से कलश भरकर पहुचाना, दीक्षा कल्याण मे केशलुचन, वैराग्य के भाव, ज्ञान कल्याण मे समवसरण रचना, दिव्य ध्वनि खिरना तथा मोक्ष कल्याण मे कैलाश पर्वत से मुक्तिगमन आदि के सुन्दर भावो का दिग्दर्शन है। इसके अतिरिक्त सम्मेद शिखर, चंपापुर, पावापुर, गिरनार के भाव अत्यन्त आकर्षक है। मध्यलोक का चित्रांकन भी सुन्दर है। वास्तव मे कला की दृष्टि से मदिर महत्त्वपूर्ण है।

मदिर में शास्त्र भडार भी है जिसमे 250-300 ग्रथ है। सूची बनाई जा रही है। धार्मिक प्रचार-प्रसार हेतु चारों प्रकार के दान का प्रावधान है तथा उत्सव विधानादि होते रहते हैं।

मदिर बीसपथ आम्नाय का है जिसका प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है। मदिर सार्वजनिक प्रन्यास के अन्तर्गत पजीकृत है। वर्त्तमान मे श्री रतनलाल कासलीवाल अध्यक्ष एव श्री क्रातिकुमार कासलीवाल मत्री है।

50. श्री दिगम्बर जैन मंदिर चौधरियों का

यह मदिर गोदीकों का रास्ता, छाजूलाल साह की गली मे स्थित है। इस मदिर का निर्माण कब और किसने करवाया कोई प्रमाण उपलब्ध नही है। स्वरूपचन्द बिलाला रचित जैन मदिर वदना से ज्ञात होता है कि इसका निर्माण स० 1892 के पूर्व ही हो चुका था। एक हस्तलिखित सूची मे इसे पन्नालालजी चौधरी का मदिर लिखा है। बाबा दुलीचन्द की सूची मे इसे चौधरी पाड्या का चैत्याला लिखा है। पाटोदी के मदिर मे मिले रेकार्ड से इसका नाम चौधरियों की साल भी मिलता है। सम्भव है पहिले प्रतिमाएँ नीचे ही विराजमान हों अत· साल कहा है। किंवदन्ती के अनुसार छाजूलालजी साह जो राज्य के उच्च पदाधिकारी थे पिजस में बैठकर मदिर के सामने से निकलते थे तो साल मे श्रीजी नीचे रह जाने के कारण वे उसे अनादर समझते थे, अतः मदिर ऊंचा बनाया गया। ग्रथो की प्रशस्तियों मे उनके पूर्वज कालूरामजी साह आदि का ग्रंथ लिखवा कर भेंट करने का उल्लेख है।

मदिर मे मूलनायक प्रतिमा नेमिनाथजी की स० 1861 की है। यहाँ पर तीन वेदियो मे 39 प्रतिमाएँ एव 17 यत्र हैं। वेदियो मे सोने का सुन्दर काम है। यहाँ धातु की

5 बड़ी प्रतिमाएं है जिनका वजन 2-2, 3-3 मरण होना लिखा है। इसके अतिरिक्त स० 1630 की पद्मावती देवी की प्रतिमा तथा स० 1858 की ताम्बे की चरण चौकी है।

शास्त्र भडार में 147 ग्रथ तथा 7 गुटके है जिनकी सूची महावीर क्षेत्र से प्रकाशित ग्रंथ सूची भाग 4 मे छप चुकी है। ग्रथ सख्या तथा गुटका संख्या मे बाद मे और भी वृद्धि हुई है। मदिर में प्रकाशित पुस्तकों का भी अच्छा सग्रह है। कलात्मक पुट्ठे ग्रथो के सुन्दर चाँदी के तारों के काम के हैं। 4-5 हाथ की कलम के मढे हुए चित्र है। कला पूर्ण कपडे का सामान चदवा आदि है।

मदिर का क्षेत्रफल लगभग 200 वर्गगज है। नीचे एक कमरा है तथा किशनपोल बाजार मे एक दूकान है जो छाजूलालजी साह के वशजों द्वारा भेंट स्वरूप दी हुई है। एक दूकान मनिहारो के रास्ते में भी है।

मंदिर बीस पथ आम्नाय का है। इसका प्रवन्ध चुनी हुई प्रवन्धकारिणी समिति द्वारा होता है। वर्त्तमान मे श्री भवरलाल चौधरी अध्यक्ष एव श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ मत्री हैं।

51. श्री दिगम्बर जैन मंदिर चम्पारामजी पांड्या

यह मंदिर किशनपोल बाजार आचार्यों के रास्ते में स्थित है। इस मंदिर का निर्माण वि०सं० 1884 की फाल्गुण सुदी 5 को पं० श्री चम्पारामजी पाड्या ने कराया था।

मंदिर काफी ऊंचा पहली मजिल पर है। वेदी मे मूलनायक प्रतिमा श्याम पाषाण की भगवान आदिनाथ की स० 1852 की है। यहाँ कुल 4 वेदियाँ है जिनमें 46 प्रतिमाएँ एवं 21 यत्र हैं, एक प्रतिमा बिल्लौर की है। इस मदिर मे धातु की प्रतिमाएँ व यन्त्र अत्यन्त आकर्षक, साफ-सुथरे व चमकदार हैं।

स्वाध्याय के साधारण ग्रंथ हैं। मंदिर मे श्री ज्ञानचन्द बिल्टीवाले शास्त्र पढ़ते है।

मदिर कलापूर्ण है। वेदी में सोने की छपाई का सुन्दर काम है तथा गुम्बज में चित्र बने हैं। दायी ओर कमरे में भी सुन्दर कलापूर्ण काम है। मुनि गजकुमार, सुकुमाल, पार्श्वनाथ भव वर्णन, भक्तामर स्तोत्र आदि के भित्ति चित्र है। हाथ की कलम के भी 2 मढे हुए कलापूर्ण चित्र तथा पद्मावती पार्श्वनाथ ॐ ह्री आदि के सुन्दर चित्र हैं। तिबारे के खम्भों तथा महराबो के कपड़े के कवर पर्दे आदि सुन्दर कलापूर्ण बने हुए हैं जो भाद्रपद मास तथा अन्य उत्सव विधानादि के अवसर पर लगाये जाते हैं।

मदिर का क्षेत्रफल 2500 वर्गफीट है तथा इसके नीचे एक हवेली और गोदाम है।

मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा प्रबन्ध चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होता है। वर्त्तमान में श्री हरकचन्द साह अध्यक्ष एवं श्री प्रसन्नकुमार चादवाड मत्री हैं।

बुधचंदजी बज के मंदिर में उपलब्ध संवत् 1890 की निम्न ग्रंथ प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि यहाँ पहिले मूलनायक प्रतिमा शीतलनाथ स्वामी की थी।

"संवत् 1890 बैसाख सुदी 9 रविवासरे पद्मनंदि पचविंशति की भाषा लिखी बगीची के मंदिर श्री शीतलजिन विराजे अरभक्त भक्ति करें श्री भक्तजन दर्शन कर स्वाध्याय करे त्याके वास्ते लिखी –

श्री शीतलनाथ चरण के पास सेवक श्री लाल बज दास
लिखी भक्त जन पढने काज पढत सुनत है सुदर्शनराज।"

श्रीलालजी फतेहरामजी के प्रपौत्र थे।

मंदिर का क्षेत्रफल लगभग 2400 वर्गफीट है तथा इसके नीचे मकान व दूकानें हैं।

मंदिर तेरह पंथ आम्नाय का है। मंदिर मे आगे बगीची है तथा कुआ है। श्री शांतिकुमार बज इसकी व्यवस्था करते हैं।

55. श्री दिगम्बर जैन मंदिर बुधचन्दजी बज

यह मंदिर टिक्कीवालो का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर मे स्थित है। मंदिर का निर्माण विक्रम संवत् 1864 में कार्तिक सुदी 12 को बधीचंदजी (बुधचंदजी) बज ने कराया। ब्यास के पर्चे के अनुसार भी यही ठीक है। "महाराजाधिराज राज श्री सवाई जगतसिंह का राज मे बधीचंद बज को संवत् 1864 मे बण्यो।" निज मंदिर के प्रमुख द्वार पर श्वेत पाषाण के बने फूलो की पखुडियो मे भी निर्माण संवत् 1864 ही लिखा है। मंदिरो की सभी सूचियों मे यह बधीचंदजी बज के मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है किन्तु मंदिर के प्रबंधकों के अनुसार निर्माणकर्त्ता का नाम बुधचंदजी बज लिखा है। बुधचंदजी के वंशज संघीजी के मंदिर (महावीर पार्क रोड) के सामने रहते हैं और उनकी वंशावली निम्न प्रकार उपलब्ध है :—
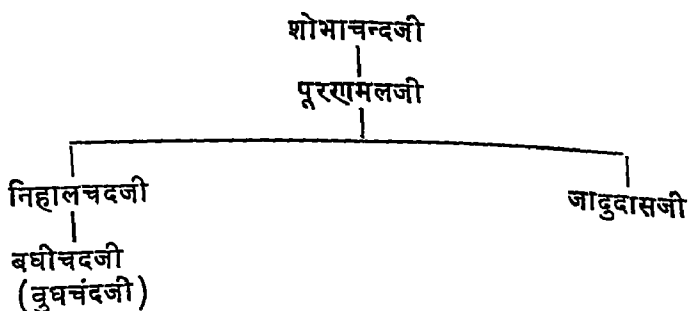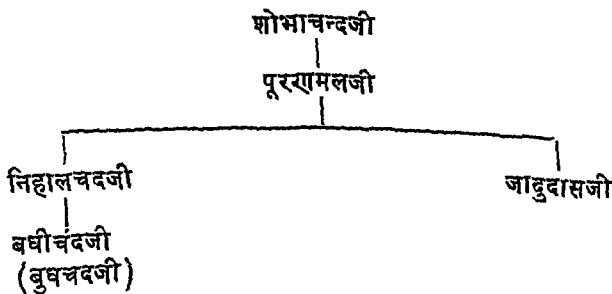
बुधचन्दजी, बधीचन्दजी "बुधजन" के नाम से जैन जगत मे जाने जाते है। कविवर बुधजन की रचनाओं पर सनावद के डॉ० मूलचन्द शास्त्री ने शोध प्रबंध लिखा है जो

महावीर ग्रंथ अकादमी, जयपुर से "कविवर बुधजन व्यक्तित्व एव कृतित्व" के नाम से प्रकाशित हो चुका है। कवि का पूर्ण विवरण उसमें उपलब्ध हे।

मदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की सवन् 1852 की प्रतिष्ठित है जो समवसरण में विराजमान है। मदिर का क्षेत्रफल लगभग 5000 वर्ग फीट है तथा इसके नीचे मकान एवं दूकाने है। मंदिर कलापूर्ण है तथा इसका गुम्वज विशाल है। बीच मे मकराने का समवशरण है। चौक की ओर पच्चीकारी के सुन्दर तीन द्वार हैं जिनमे पत्थर की कटाई की सुन्दर जालियां है। चौक के तिवारे मे सुन्दर भित्ति चित्र है जिनमें सम्मेद शिखर सोनागिरि तीर्थ क्षेत्रों, अढाईद्वीप के मानचित्र, 16 स्वप्न, तप कल्याण का दृश्य एवं ऋषि मडल यत्र के चित्र है। मदिर मे लगभग 200 हस्तलिखित ग्रंथो का संग्रह है जिसकी सूची बनी हुई है तथा आलमारियो मे सुरक्षित है।

यह मंदिर गुमान पथ आम्नाय का है। मंदिर की प्रवध समिति वनी हुई है जिसकी देखरेख में प्रवध किया जाता है। वर्त्तमान मे श्री रतनलाल अग्रवाल अध्यक्ष एव श्री शांतिकुमार बज मत्री है।

56. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, आमली

यह मदिर किशनपोल बाजार मे नमक की मढी मे स्थित है। इसके पास मे आमली का पेड होने से संभवतः यह आमली का मदिर कहलाता है। बाबा दुलीचंद ने अपनी हस्तलिखित मदिरो की सूची मे निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

"इमली के दरख्त की छाया नीचे पण्डा बखतराम ऋषभदास मुहल्ला कुम्हारों का सुन्दर का बास कुंआ के पास"

मंदिर कब और किसने बनाया इसकी कोई प्रामाणिक सूचना उपलब्ध नही है। इतना अवश्य है कि मदिर संवत् 1892 के पूर्व निर्मित हो चुका था।

मदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है। मूलवेदी के अतिरिक्त 3 वेदियाँ और है जिनमें श्रीजी विराजमान हैं। यहाँ कुल 81 प्रतिमाएँ एवं 15 यत्र है। दीवार मे संगमरमर पर पचमेरु, संसारवृक्ष, षट्लेश्या, पाण्डुशिला आदि के भाव दर्शाये हुए है।

मंदिर मे करीब 20 हस्तलिखित ग्रंथ है तथा रात्रि को शास्त्र सभा चलती है जिसमे श्रीमती सौभागदेवीजी काला प्रवचन करती हैं। प्रचार-प्रसार के लिए टेप से रिकार्डिंग की व्यवस्था है।

मंदिर का क्षेत्रफल 200 वर्गमीटर लगभग है तथा इसके नीचे एक दूकान है।

यह बीस पंथ आम्नाय का मदिर है तथा इसका प्रबध चुनी हुई प्रबध समिति द्वारा किया जाता है। वर्त्तमान मे श्री मोहनलाल ठोलिया अध्यक्ष एव श्री रामचरण साह मंत्री हैं।

बुधचंदजी बज के मदिर मे उपलब्ध सवत् 1890 का निम्न ग्रथ प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि यहाँ पहिले मूलनायक प्रतिमा शीतलनाथ स्वामी की थी ।

"संवत् 1890 वैसाख सुदी 9 रविवासरे पद्मनदि पर्चाविशति की भाषा लिखी बगीची के मदिर श्री शीतलजिन विराजे ग्ररभक्त भक्ति करे श्री भक्तजन दर्शन कर स्वाध्याय करे त्याके वास्ते लिखी –

श्री शीतलनाथ चरण के पास सेवक श्री लाल बज दास
लिखी भक्त जन पढने काज पढत सुनत है सुदर्शनराज ।"

श्रीलालजी फतेहरामजी के प्रपौत्र थे ।

मदिर का क्षेत्रफल लगभग 2400 वर्गफीट है तथा इसके नीचे मकान व दूकानें हैं।

मदिर तेरह पथ ग्राम्नाय का है । मदिर मे ग्रागे बगीची है तथा कुग्रा है। श्री शातिकुमार बज इसकी व्यवस्था करते है ।

55. श्री दिगम्बर जैन मंदिर बुधचन्दजी बज

यह मदिर टिक्कीवालों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर मे स्थित है। मदिर का निर्माण विक्रम संवत् 1864 मे कार्तिक सुदी 12 को बधीचदजी (बुधचदजी) बज ने कराया । ब्यास के पर्चे के ग्रनुसार भी यही ठीक है । "महाराजाधिराज राज श्री सवाई जगतसिह का राज मे बधीचद बज को सवत् 1864 मे बण्यो ।" निज मदिर के प्रमुख द्वार पर श्वेत पाषाण के बने फूलों की पखुडियो में भी निर्माण सवत् 1864 ही लिखा है । मदिरो की सभी सूचियों मे यह बधीचदजी बज के मदिर के नाम से प्रसिद्ध है किन्तु मदिर के प्रबधको के ग्रनुसार निर्माणकर्त्ता का नाम बुधचदजी बज लिखा है। बुधचदजी के वंशज सघीजी के मदिर (महावीर पार्क रोड) के सामने रहते है ग्रौर उनकी वशावली निम्न प्रकार उपलब्ध है :—

बुधचन्दजी, बधीचन्दजी "बुधजन" के नाम से जैन जगत में जाने जाते हैं । कवि-वर बुधजन की रचनाग्रों पर सनावद के डॉ० मूलचन्द शास्त्री ने शोध प्रबध लिखा है जो

महावीर ग्रंथ अकादमी, जयपुर से "कविवर बुधजन व्यक्तित्व एवं कृतित्व" के नाम से प्रकाशित हो चुका है। कवि का पूर्ण विवरण उसमे उपलब्ध हे।

मदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की सवन् 1852 की प्रतिष्ठित है जो समवसरण में विराजमान है। मदिर का क्षेत्रफल लगभग 5000 वर्ग फीट है तथा इसके नीचे मकान एव दूकानें है। मदिर कलापूर्ण है तथा इसका गुम्बज विशाल है। बीच में मकराने का समवशरण है। चौक की ओर पच्चीकारी के सुन्दर तीन द्वार है जिनमे पत्थर की कटाई की सुन्दर जालियाँ है। चौक के तिवारे मे सुन्दर भित्ति चित्र है जिनमे सम्मेद शिखर सोनागिरि तीर्थ क्षेत्रों, अढाईद्वीप के मानचित्र, 16 स्वप्न, तप कल्याण का दृश्य एव ऋषि मडल यत्र के चित्र है। मदिर मे लगभग 200 हस्तलिखित ग्रंथो का सग्रह है जिसकी सूची बनी हुई है तथा आलमारियो मे सुरक्षित है।

यह मंदिर गुमान पंथ आम्नाय का है। मदिर की प्रबध समिति बनी हुई है जिसकी देखरेख में प्रबध किया जाता है। वर्त्तमान में श्री रतनलाल अग्रवाल अध्यक्ष एव श्री शांतिकुमार बज मंत्री है।

56. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, आमली

यह मदिर किशनपोल बाजार मे नमक की मढी मे स्थित है। इसके पास में आमली का पेड होने से संभवत: यह आमली का मंदिर कहलाता है। बाबा दुलीचंद ने अपनी हस्तलिखित मदिरों की सूची मे निम्न प्रकार उल्लेख किया है :—

"इमली के दरख्त की छाया नीचे पण्डा बखतराम ऋषभदास मुहल्ला कुम्हारों का सुन्दर का बास कुंआ के पास"

मंदिर कब और किसने बनाया इसकी कोई प्रामाणिक सूचना उपलब्ध नही है। इतना अवश्य है कि मदिर संवत् 1892 के पूर्व निर्मित हो चुका था।

मदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है। मूलवेदी के अतिरिक्त 3 वेदियाँ और है जिनमे श्रीजी विराजमान हैं। यहाँ कुल 81 प्रतिमाएँ एव 15 यत्र है। दीवार मे संगमरमर पर पचमेरु, संसारवृक्ष, षट्लेश्या, पाण्डुशिला आदि के भाव दर्शाये हुए हैं।

मदिर मे करीब 20 हस्तलिखित ग्रथ है तथा रात्रि को शास्त्र सभा चलती है जिसमें श्रीमती सौभागदेवीजी काला प्रवचन करती है। प्रचार-प्रसार के लिए टेप से रिकार्डिंग की व्यवस्था है।

मंदिर का क्षेत्रफल 200 वर्गमीटर लगभग है तथा इसके नीचे एक दूकान है।

यह बीस पंथ आम्नाय का मदिर है तथा इसका प्रबध चुनी हुई प्रबध समिति द्वारा किया जाता है। वर्त्तमान में श्री मोहनलाल ठोलिया अध्यक्ष एव श्री रामचरण साह मंत्री हैं।

57. श्री दिगम्बर जैन मंदिर डूंगरसीदास

यह मदिर टिक्की वालों का रास्ता, पहला चौराहा, किशनपोल वाजार में स्थित है। इस मंदिर का निर्माण पडित डूगरसीदास ने वि.सं 1841 मे कराया। इसी मदिर की एक वही सं 1891 से सवत् 1920 तक की, चन्द्रप्रभ दिगम्वर जैन मदिर (पं. श्योजी-लालजो का मदिर) के ग्रंथ भण्डार में उपलव्व हुई है, उसमे पडित दिलसुखजी (श्योजीलालजी के गुरु) ने चैत्त बुदी 9 सं. 1976 को निम्न प्रकार लिखा है :

"मदिर पं डूगरसीदासजी को संवत 1841 की साल जायगा ठोल्या की में पडित डूगरसीदासजी चेला अजीतमल पांडे भाई हीरानद मदिर की नीव लगाई। मदिर की खड़क मे विराजमान किया माह सुदी 5 वसत ने श्री पार्श्वनाथजी मूलनायक स्वामी स्थापित किया। पं. डूगरसीदासजी चेला भट्टारकजी श्री सुरेन्द्र कीर्तिजी का छो सो संतोषरामजी ठोल्यो हिंगूण्या को छो सो आपकी जगां पंडित मजकूर ने पुण्य दी पत्र चादणी चौक को करा दियो सो मौजूद है। या निश्चय कर लिखी पडित दिलसुख स. 1976 का मिती चैत बुदी 9 ने।"

"मदिर की नींव काती सुदी 5 ने लागी"

मंदिर बनने के समय इसके नीचे 62 घरों की गोठ निम्न प्रकार से थी :–

सर्वप्रथम हस्तेडा के गंगवालों के घर	25
पीछे सेठियो के	8
पीछे वोहरों के	4
पीछे भौंसो के	4
पीछे लौंग्यों के	5
पीछे गौधों	4
पीछे छाबड़ों के	8
पीछे भौंसो के	4
	62

इसके पश्चात् सं. 1898 में मंदिर की फर्श हुक्मा सिलावट ने बनाई उसका पूरा इकरारनामा है।

वर्त्तमान में मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की है जो संवत् 1861 की प्रतिष्ठित है। संभव है पार्श्वनाथ के स्थान पर बाद में नेमिनाथ की मूर्ति स्थापित की हो। धरणेन्द्र पद्मावती एवं क्षेत्रपाल की प्रतिमाएँ भी हैं। मंदिर मे मूलवेदी सहित 8 वेदियाँ और हैं जिनमें 53 प्रतिमाएँ एवं 26 यंत्र है।

मंदिर की मूलवेदी कलापूर्ण एवं सोने की कारीगरी की है।

मंदिर के ग्रन्थ भण्डार में करीब 50 हस्तलिखित ग्रन्थ एवं गुटके हैं। सबसे प्राचीन प्रति सं. 1593 की महीपाल चरित्र की है। संवत् 1797 की चैत्र शु. प्रतिपदा को पंडित

डूंगरसी के स्वाध्याय के लिए पं रूडमल ने शालिभद्र चरित्र की प्रतिलिपि की वह सुरक्षित है।

मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा मंदिर का क्षेत्रफल लगभग 400 वर्गफीट है तथा इसके नीचे 4 दूकानें है। प्रबन्ध चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होता है। यहाँ फेरों की वेदी के 2 सैट उपलब्ध है। वर्त्तमान मे यहाँ के अध्यक्ष श्री रामचन्द्र कोठारी एवं मंत्री श्री महेन्द्रकुमार डिग्गी वाले हैं।

58. श्री दिगम्बर जैन मंदिर जोबनेर

यह मंदिर किशनपोल बाजार के झालानियो के रास्ते मे तीसरे चौराहे पर स्थित है। जोबनेर के मंदिर के नाम से प्रसिद्ध इस मंदिर का निर्माण किसने कराया कोई उल्लेख नही मिलता। व्यास के पर्चे के अनुसार इसका निर्माण सं 1800 मे हुआ।

"महाराजाधिराज श्री सवाई जयसिंहजी का राज में जोबनेर को देवरो बण्यों संवत् 1800 साल मे"

वर्त्तमान प्रबन्धकों की सूचनानुसार इसके निर्माणकर्त्ता पं. पन्नालालजी हैं किन्तु पाटोदी के मंदिर में उपलब्ध बहियों में सं. 1926-27 मे जोबनेर के मंदिर से पं. पन्नालालजी द्वारा पूजन का बारा भेजने का उल्लेख है। 125 वर्ष का अंतराल बहुत अधिक है अतः सही प्रतीत नहीं होता।

यहाँ मूलनायक प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की है। यहाँ कुल 64 प्रतिमाएँ हैं तथा 20 यंत्र हैं। कुछ दिनों पूर्व करीब 30 प्रतिमाएँ और विराजमान की गई हैं। यहाँ कुल 6 वेदियां तथा एक समवसरण रचना है। पुरानी बस्ती का हरकारों का चैत्यालय भी इसी मंदिर में एक वेदी में विराजमान है। प्राचीन प्रतिमा स. 1502 की है। यहाँ हाल ही में सुन्दर समवसरण रचना का निर्माण होकर उसमें चतुर्मुखी प्रतिमाएं तथा अन्य 24 प्रतिमाएं विराजमान हुई हैं।

यहाँ 340 ग्रथ एव 23 गुटके हैं जिनकी सूची चौथे भाग में प्रकाशित हो चुकी है। सबसे प्राचीन प्रतियाँ पद्मनंदिपंचविंशति तथा रघुवंश टीका की है जो सं. 1508 एवं 1680 की हैं। यहाँ प्रदर्शनी योग्य कुछ चित्र भी है। भित्ति चित्र भी सुन्दर बने हुए हैं।

गत तीन दशकों मे काफी विकास कार्य हुए है जिनमें कुए का निर्माण, दुछत्ता, साधु-साध्वियों के आवास हेतु कमरे प्रमुख है। मंदिर काफी बड़ा है तथा इसके नीचे दूकानें तथा मकानात हैं।

यहाँ भाद्रपद मास मे पं. चिरंजीलालजी लुहाड़िया जैन दर्शनाचार्य प्रवचन करते हैं तथा धार्मिक प्रचार-प्रसार हेतु उत्सव विधानादि होते रहते हैं।

मंदिर बीस पथ आम्नाय का है तथा यहाँ का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है। वर्त्तमान मे यहाँ के अध्यक्ष श्री फतेलाल नीमेडा वाले एवं मंत्री श्री गोपीचन्द पाटनी हैं।

पार्श्वनाथ मन्त्र-यन्त्र, चिन्तामणि मन्त्र-यन्त्र, सर्व विघ्न विनाशन मन्त्र-यन्त्र, शांतिनाथ यन्त्र, ह्री मन्त्र-यन्त्र आदि ।

इस प्रकार आज का भौतिकवादी मानव नाना प्रकार के रोगो तथा मानसिक तनाव से त्रस्त होता जा रहा है । उसके रोगो तथा मानसिक तनावजन्य कारणो पर सम्यक् खोज की जाकर उसके उपचारात्मक साधन के रूप मे यदि उपर्युक्त शान्ति मन्त्र-यन्त्रो मे से किसी एक का उपयोग किया जाय तो आज के त्रस्त मानव को सुख-शान्ति की नयी दिशा प्राप्त होने की इसी विद्या मे पूर्ण सम्भावना है । मेरे दो दशक के प्रयोग एवं परीक्षण के निष्कर्ष रूप यदि मनुष्य अनवरत रूप से नीचे लिखे मन्त्र-यन्त्र का विधिवत आराधन करता है तो वह समस्त मानसिक तनावो से मुक्त ही नही होता अपितु समस्त शारीरिक व्याधियो से भी मुक्ति पा सकता है । यह मन्त्र-यन्त्र शान्तिक विद्या का प्राणरूप सार है । इसे पूर्वाचार्यो ने मन्त्रराज, महामन्त्र, महामृत्युञ्जय मन्त्र, परमशान्ति दाता मन्त्र आदि कई सज्ञाओ से परिभाषित किया है ।

परमशान्ति दाता मन्त्र-यन्त्र
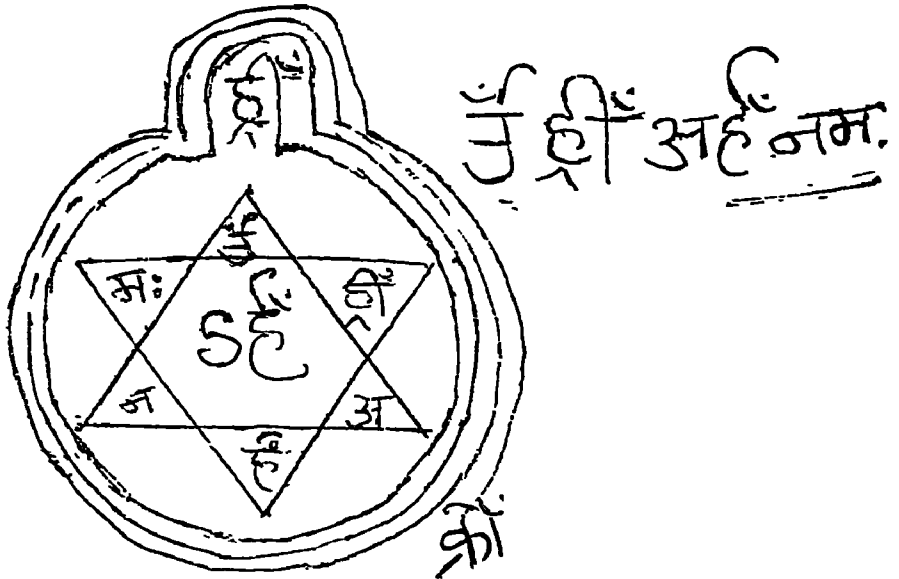
इस प्रकार मानव मन की प्रकृत इच्छा की पूर्ति स्वरूप शान्ति मन्त्र-यन्त्रो को समझने के अनन्तर उसकी दूसरी प्रकृत इच्छा वित्तेषणा, पुत्रेषणा तथा लोकेषणा की सिद्धि रूप पौष्टिक अभिकर्म पर विचार करना न्यायसगत होगा । अस्तु जिस पर आगे विचार किया जा रहा है ।

पौष्टिक मन्त्र-यन्त्र

मानव मन की परतो को यदि खोला जाय तो उसमे वित्तेषणा, पुत्रेषणा तथा लोकेषणा रूप विकास वा विनाश का अदृष्ट इतिहास छुपा पडा है । इस तथ्यानसार

ससार का कोई भी मनुष्य निर्धनता की वांछा नही करता अपितु वह वित्तेषणा रूप धन-धान्य तथा समस्त प्रकार की सुख सामग्री की तमन्ना रखते हुए उन्हें येन-केन-प्रकारेण प्राप्त करने का प्रयास करता है। उसके मन की दूसरी लिप्सा पुत्र प्राप्ति की होती है। इस इच्छा की सहज रूप में पूर्ति नहीं होने के फलस्वरूप वह नाना उपायों के आश्रय से आशान्वित होने का प्रयास करता है। उसकी तीसरी मानसिक व्यथा किंवा इच्छा ख्याति लाभ की होती है। वह अपनी प्रसिद्धि के लिये अनेक प्रकार की नीतियो का आश्रय लेते हुए सबल पुरुषार्थ करता है। जैनाचार्यों ने मानव मन की इन उपर्युक्त इच्छाओं की सिद्धि हेतु पौष्टिक अभिकर्म रूप अनेक मन्त्र-यन्त्रो का सृजन कर भुक्ति से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया है।

जिन ध्वनियों के वैज्ञानिक संरचना के घर्षण द्वारा सुख सामग्रियों की प्राप्ति अर्थात् जिन मन्त्र-यन्त्रो के द्वारा मन की संकल्प शक्ति तथा ऐसे वातावरण एवं परिस्थितियो का निर्माण हो जिससे धन-धान्य, पुत्र, सौभाग्य तथा यश:कीर्ति की प्राप्ति हो उन ध्वनियों के सन्निवेश को पौष्टिक मन्त्र-यन्त्र कहते हैं। यथा – ज्वालामालिनी मन्त्र-यन्त्र, पद्मावती मन्त्र-यन्त्र, महालक्ष्मी मन्त्र-यन्त्र, 20 यन्त्र, 38 यन्त्र, विजयपताका यन्त्र, चिन्तामणि यन्त्र, लक्ष्मी देवी मन्त्र-यन्त्र, पार्श्वनाथ पद्मावती मन्त्र-यन्त्र, ऋद्धि-वृद्धि मन्त्र-यन्त्र, 32 यन्त्र, 21 यन्त्र, मातृ कामना, सर्वसिद्धि दायक मन्त्र-यन्त्र, घण्टाकर्ण मन्त्र-यन्त्र, 65 यन्त्र, चक्रेश्वरी मन्त्र-यन्त्र, अक्षीण महान् वृद्धि मन्त्र-यन्त्र, ह्री यन्त्र, विजय मन्त्र-यन्त्र, ऋद्धि-सिद्धि दायक मन्त्र-यन्त्र, सारस्वत मन्त्र-यन्त्र आदि।

मेरी साधना एव परीक्षणकाल के लम्बे समय से किये गये अनेको प्रयोगों में से इस विधा के निदर्शन रूप एक प्रयोग सामान्यजन के अवलोकनार्थ दे रहा हूँ जिसकी विधिवत साधना द्वारा अनेक लोगों ने लाभ प्राप्त किया है।

धन-धान्य-सौभाग्य-सन्तान तथा यश.कीर्ति आदि सर्वसिद्धि महाप्रभाविक मन्त्र-यन्त्र

मन्त्र : – "ॐ ह्रीं श्री क्ली अर्हं नमः महालक्ष्म्यै
धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय ह्री श्री नमः।"

ॐ	ह्री	श्री	क्लीं	महा
अ	र्हं	न	मः	लक्ष्म्यै
ध	र	णे	न्द्र	पद्मा
स	हि	ता	य	वती
ह्री	श्री	न	म·	नमः

भारत के दि॰ जैन तीर्थों का रेल रूट

अफले चिर न जीवति इह ।

"नूतन कर्म फलों को उत्पन्न न करने वाला संसार में अधिक नहीं रहता है ।"

आचार्य कुन्दकुन्द,–प्रवचनसार गाथा 272

जयपुर
की
दिगम्बर जैन संस्थाएँ

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय

यह महाविद्यालय राजस्थान विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त दिगम्बर जैन समाज जयपुर द्वारा सस्थापित एव सचालित प्राचीनतम शिक्षण सस्था है। महाविद्यालय की स्थापना का निर्णय वि. स. 1941 मे होने वाले चार रथो के मेले के पुनीत अवसर पर लिया गया था। यह विद्यालय त्रिपोलिया बाजार मे मनिहारो के रास्ते मे दिगम्बर जैन मदिर बड़ा दीवानजी के पास स्थित है। प्रारभ में इसका नाम दिगम्बर जैन महापाठशाला था जिसकी स्थापना आषाढ़ कृष्णा पंचमी गुरुवार वि. स. 1942 में महामना श्री धन्नालालजी कासलीवाल फौजदार एव पं. भोलीलालजी सेठी के नेतृत्व मे स्थानीय दिगम्बर जैन समाज द्वारा की गई थी। इसका उद्देश्य समाज के बालकों को जैन धर्म की शिक्षा दिलाना तथा उन्हे सस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् बनाना रखा गया।

उस समय इस महापाठशाला के अधीनस्थ दो संस्थाएँ और थी जिनमे एक पाठशाला मदिरजी ठोलियान में चलती थी जो वर्त्तमान मे श्री महावीर दिगम्बर जैन सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय के नाम से सी-स्कीम मे चल रही है और दूसरी कन्या विद्यालय, दीवानजी के मदिर की धर्मशाला मे चलती थी जो अब महावीर बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय के नाम से खिन्दूकों की धर्मशाला में संचालित है। अब दोनो सस्थाएँ स्वतत्र है।

यद्यपि महापाठशाला में प्रथम कक्षा से आचार्य कक्षा तक की प्रारंभ से ही पढाई होती थी किन्तु सन् 1930 में पं. चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ महाविद्यालय के प्रधानाध्यापक बन कर आये तभी से इसकी काया ही पलट गई और महापाठशाला दि. जैन सस्कृत कॉलेज के नाम से प्रसिद्ध हो गया। पडित जी ने जैन दर्शन एवं साहित्य की शिक्षा के अतिरिक्त आयुर्वेद की शिक्षा को भी प्राथमिकता दी और कई आयुर्वेदाचार्य यहाँ से निकले।

वर्त्तमान में इस महाविद्यालय की ख्याति जैन संस्कृति के संरक्षण एव जैन दर्शन तथा न्याय के पठन पाठन की विशेषता के कारण देश में सर्वत्र व्याप्त है। इस संस्था ने गत 104 वर्षो में जैनदर्शनाचार्य, आयुर्वेदाचार्य, साहित्याचार्य, न्यायतीर्थ आदि उपाधि से विभूषित एवं प्रौढ़ पाण्डित्य से युक्त पचासों विद्वान् समाज को दिये जिनमें प्रमुख गणेश प्रसादजी वर्णी, प. माणकचन्दजी न्यायाचार्य, पं. नानूलालजी शास्त्री, पं. जवाहरलाल जी शास्त्री, प. इन्द्रलाल जी शास्त्री, पं. श्रीप्रकाश जी शास्त्री के नाम उल्लेखनीय हैं।

अब तक यहाँ से हजारों विद्यार्थियों ने विद्या लाभ लिया है और ले रहे हैं। गत दस वर्षों मे यहाँ के छात्रों ने विश्वविद्यालय स्तरीय परीक्षाओं में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर

INTRODUCING
FIRST TIME IN COUNTRY
EXPORT QUALITY
POLYCON
INSULATED TANK
WITH
FOAM INSULATION
White Layer,
Black
Layer
Foam insulation
NOW AVAILABLE
IN INDIA
a gift of 21st Century for water storage
JAI SINTER POLYCON (P.) LTD.
Polycon House, Bais Godam, Jaipur 6 Ph 68776, 74687
PINKCITY/JSP/355/90
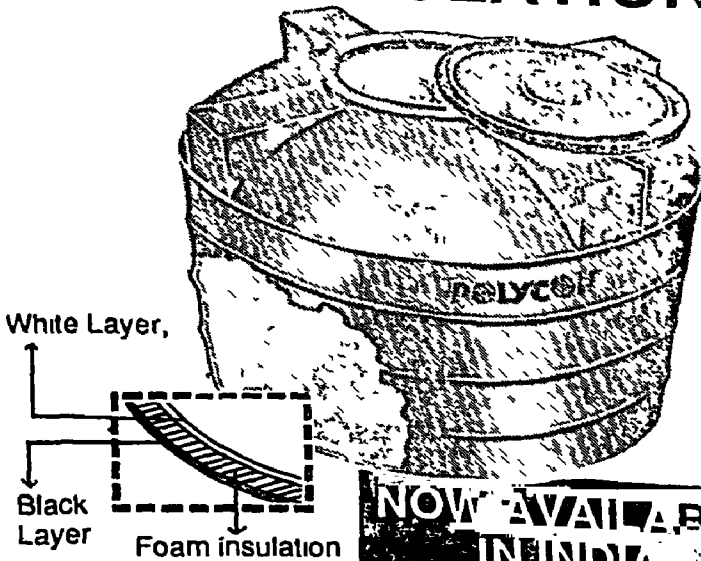
"ज्ञान सूर्य को आगे करके जो चलता है
छाया का वैभव उसके पीछे चलता है।"
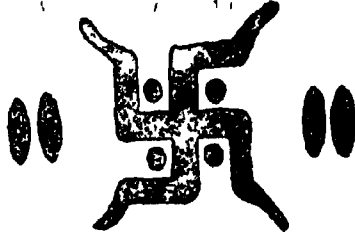
वात्सल्यं नाम दासत्वं सिद्धर्हम्बिम्बवेश्मसु ।
संघे चतुर्विधे शास्त्रे स्वामिकार्ये सुभृत्यवत् ।।

अर्थादन्यतमस्योच्चैरुद्दिष्टेषु स दृष्टिमान् ।
सत्सु घोरोपसर्गेषु तत्परः स्यात्तदन्यये ।।

यद्वा न ह्यात्मसामर्थ्यं यावनमन्त्रासिकोशकम् ।
तावद् दृष्टुं च श्रोतुं च तद्बाधां सहते न सः ।।
[पञ्चाध्यायी - 203-4-5]

भावार्थ – सिद्ध प्रतिमा, जिन बिम्ब, जिन मंदिर, चतुर्विध संघ और जिनवाणी इन सब में दास भाव (सेवाभाव) रखना वात्सल्य अग है। उक्त सिद्ध प्रतिमादि पर उपसर्ग आने पर सम्यग्दृष्टि जीव उनकी रक्षा में तत्पर रहता है। आत्मिक सामर्थ्य नही होने पर जब तक मंत्र, तलवार और धन है तब तक वह उन सिद्ध प्रतिमादि पर आयी हुई बाधा को न तो देख ही सकता है और न सुन ही सकता है।

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी
श्रीमहावीरजी-322 220 (राज०)